CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्रीहरिः ।।

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९९५ ई०

(संवत् २०५१-५२)

गीताप्रेस, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेसकी निजी दूकान तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर- पिन-२७३००५	गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस	✆ (०५५१)-३३४७२१
कलकत्ता- पिन-७००००७	गोविन्दभवन-कार्यालय १५१, महात्मा गाँधीरोड	✆ (०३३)-२३८६८९४ २३८०२५१
दिल्ली- पिन-११०००६	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान २६०९, नयी सड़क	✆ (०११)-३२६९६७८
पटना- पिन-८००००४	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान अशोक राजपथ, बड़े अस्पतालके सदर फाटकके सामने	✆ (०६१२)-६६२८७९
कानपुर- पिन-२०८००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान २४/५५, बिरहाना रोड	✆ (०५१२)-३५२३५१
वाराणसी- पिन-२२१००१	गीताप्रेस, कागज-एजेन्सी ५९/९, नीचीबाग	✆ (०५४२)-३५३५५१
हरिद्वार- पिन-२४९४०१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	
ऋषिकेश- पिन-२४९३०४	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	✆ (०१३६४)-३०१२२

स्टेशन—पुस्तक स्टाल

(१) दिल्ली जंक्शन, प्लेटफार्म नं० १ (२) नयी दिल्ली, प्लेटफार्म नं० ८-९ (३) अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा-दिल्ली (४) हजरत निजामुद्दीन (दिल्ली), प्लेटफार्म नं० ४-५ (५) कानपुर, प्लेटफार्म नं० १ (६) गोरखपुर, प्लेटफार्म नं० १ (७) वाराणसी, प्लेटफार्म नं० ३ (८) हरिद्वार, प्लेटफार्म नं० १ (९) कोटा (राजस्थान), प्लेटफार्म नं० १ (१०) पटना-जंक्शन, पुस्तक-ट्राली (११) हावड़ा, न्यू कॉम्पलेक्स, प्लेटफार्म नं० १८ के पास (१२) मुगलसराय जं०, प्लेटफार्म नं० ३-४ (१३) लखनऊ (N.E.Railway)

अन्य अधिकृत पुस्तक-विक्रेता—श्रीगीताप्रेस पुस्तक-प्रचारकेन्द्र,
'बुलियन बिल्डिंग', जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३ ✆ (०१४१) ५६३३७९

अँग्रेजी एवं दक्षिण भारतीय भाषा प्रकाशनके प्रमुख विक्रेता
गोपाल सेवा ट्रस्ट-८२ कृष्णा टाकीज रोड, इरोड-६३८००३ ✆ (०४२४) २१३९७६

सन् १९९४ तक प्रथमसे द्वितीय संस्करण १,१०,०००
सन् १९९५ तृतीय संस्करण १,००,०००

मूल्य—बीस रुपये

प्रकाशक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर
मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

वर्ष १९९५ में सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

पता - वाराणसी - राजगुरुमठ, शिवालाघाट

बक्सर - स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम-बक्सर

बैंक नाम एवं खाता संख्या - यूनियन बैंक आफ इण्डिया

सोनार पुरा - वाराणसी

खाता नं० - 5368

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालिकाएँ', 'गुरु और माता-पिताके भक्त बालक', 'सच्चे और ईमानदार बालक' आदि कई पुस्तकें छपी हैं। 'कल्याण' का 'बालक-अङ्क' भी छपा है। उन्हें बालकोंको पढ़नेके लिये दो।

भक्तोंके चरित्र पढ़नेसे बड़ा विलक्षण लाभ होता है। गीताप्रेससे ऐसी बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं; जैसे—'भक्त बालक', 'भक्त नारी', 'भक्त महिलारत्न', 'भक्त सप्तरत्न', 'भक्त पंचरत्न' आदि। इन पुस्तकोंको पढ़नेसे हृदय गद्‌गद हो जाता है, आँसू आने लगते हैं, एक मस्ती आ जाती है!

इस प्रकार गीताप्रेससे मनुष्यमात्रका कल्याण करनेवाली अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनको स्वयं पढ़ना चाहिये तथा उत्साहपूर्वक उनका प्रचार करना चाहिये। इससे संसारका बड़ा भारी उपकार होगा, संसारमें शान्तिका विस्तार होगा।

(पूज्य स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजके लेखसे संगृहीत)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ।१।

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ।२।

dhṛtarāṣṭra uvāca

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ ।
māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya ॥ 1 ॥

sañjaya uvāca

dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā ।
ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt ॥ 2 ॥

पौष कृष्ण ३०, वि० सं० २०५१, रविवार, 'सर्वजित्' नाम संवत्सर, शक १९१६

श्रीकृष्ण-सं० ५२२०, JAN.1.1995

अमावास्या सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१४

(श्री रामवचन वैश्य के मकान में)

~~श्री रमापति साहु के मकान में :—~~

श्री शेषनाथ पाण्डेय.
पश्चिम रेलवे फाटक के पास
जि० सोनभद्र (उ०प्र०)

" श्री शशिभूषण पाण्डेय "

आयकर: { क्रमाङ्क - 5186
क्रमाङ्क 5189

कु० का०
कार्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ।६।

dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān ।
purujitkuntibhojaśca śaibyaśca narapuṅgavaḥ ॥5॥
yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca vīryavān ।
saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ ॥6॥

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५

Shri Kireet Joshi 2 Copies
President
Dharam Hinduja
International Centre of
Research
C 141 Preet Vihar
Delhi — 110092

श्रीसिद्धेश्वरी प्र०सिंह एवं श्री रत्नेश्वरी प्र०सिंह
(सहोदर)
खरौंआ कोठी, IA सूर्यबाग, महमूरगंज-वाराणसी
फोन नं० 360493

ईश्वरसे डरना भाग्यशाली बननेका लक्षण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ।८।

asmākaṁ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama ।
nāyakā mama sainyasya saṁjñārthaṁ tānbravīmi te ॥ 7॥
bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ ।
aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca ॥ 8॥

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१६

अरुण सिंह

टेली. — 9610 — पेजर नं. 146 —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।९।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्।१०।

anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ ।
nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ ॥ 9॥
aparyāptaṁ tadasmākaṁ balaṁ bhīṣmābhirakṣitam ।
paryāptaṁ tvidameteṣāṁ balaṁ bhīmābhirakṣitam ॥ 10॥

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२७

कदमकुआँ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सामने पूरब।

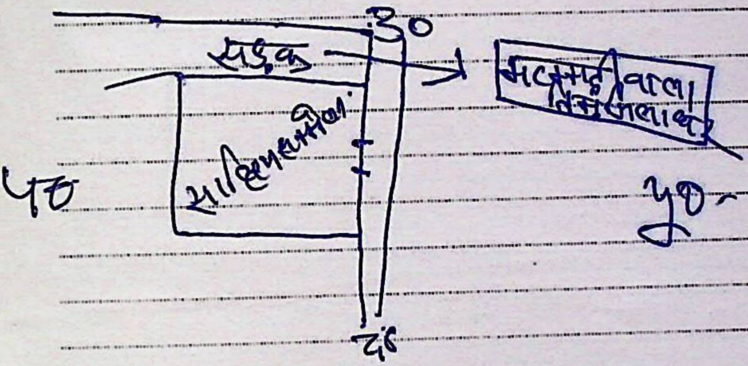

परछिद्रान्वेषण एक प्रमुख दुर्गुण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् । ५ ।
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः । यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः । ६ ।

gurūnahatvā hi mahānubhāvān śreyo bhoktuṁ bhaikṣyamapīha loke ।
hatvārthakāmāṁstu gurūnihaiva bhuñjīya bhogānrudhirapradigdhān ॥ 5॥
na caitadvidmaḥ kataranno garīyo yadvā jayema yadi vā no jayeyuḥ ।
yāneva hatvā na jijīviṣāmaste'vasthitāḥ pramukhe dhārtarāṣṭrāḥ ॥ 6॥

सूर्यो॰ ६।४३, सूर्या॰ ५।३७

क्रमसं॰	पुस्तकनाम —	प्रति
1	श्रीमद्भगवद्गीता अष्टादशाह प्रवचन	1
2	ऐतरेयोपनिषत्	1
3	दिव्य स्मृति	1
4	स्तोत्र संग्रह	1
5	श्रुतिसार समुद्धरणं	2
6	वेदान्तडिण्डिम	2
7	गंगालहरी	10
8	वैदिक शान्तिमंत्र	12
9	श्री शंकर वचनामृतम्	4
10	शिवताण्डवस्तोत्रम्	2
11	वेदान्त रत्नाकर	1
12	अद्वैत मुक्तावली	2
13	भजन मञ्जरी	5
14	मुक्ति सोपान	1
15	प्रण इलास	1
16	भजन संग्रह (द्वितीयभाग)	2
17	शिवमहिम्नः स्तोत्रम्	1

दूसरोंका न कभी बुरा करो, न चाहो ही ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते । तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५।
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ।२६।

avykto'yamacintyo'yamavikāryo'yamucyate ।
tasmādevaṁ viditvainaṁ nānuśocitumarhasi ॥ 25॥
atha cainaṁ nityajātaṁ nityaṁ vā manyase mṛtam ।
tathāpi tvaṁ mahābāho naivaṁ śocitumarhasi ॥ 26॥

जया एकादशीव्रत   सूर्यो॰ ६ । ३६, सूर्या॰ ५ । ४५

On demand Pay to Swami Banalora Saraswat'

Rs. 5001=00

DD/K

"198014" "22000" dt 10.2.95

Oriental Bank of Commerce at VNS.

डाक गेन काजन, पहाड़गंज

नयी दिल्ली

माघ शुक्ल १२, रविवार, 12.FEB.

सूर्यो॰ ६ । ३६,   सूर्या॰ ५ । ४६

प्रदोषव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ।४४।

kāmātmānaḥ svargaparā janmakarmaphalapradām ।
kriyāviśeṣabahulāṁ bhogaiśvaryagatiṁ prati ॥ 43 ॥
bhogaiśvaryaprasaktānāṁ tayāpahṛtacetasām ।
vyavasāyātmikā buddhiḥ samādhau na vidhīyate ॥ 44 ॥

श्रीजानकी-जयन्ती सूर्यो० ६ । २८, सूर्या० ५ । ५३

आज प्रमोद के साथ लेकर आश्रम पर पहुँचे।
आश्रम में पेंटिंग का काम हिदायतुल्ला कर रहे है।

संसार दुःख नहीं देता, संसारकी आसक्ति दुःख देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ।५१।
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति । तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ।५२।

karmajaṁ buddhiyuktā hi phalaṁ tyaktvā manīṣiṇaḥ ।
janmabandhavinirmuktāḥ padaṁ gacchantyanāmayam ॥ 51 ॥
yadā te mohakalilaṁ buddhirvyatitariṣyati ।
tadā gantāsi nirvedaṁ śrotavyasya śrutasya ca ॥ 52 ॥

सोमप्रदोष, महाशिवरात्रिव्रत सूर्यो० ६ । २४, सूर्या० ५ । ५६

आज [illegible] के [illegible] का पहला दिन था।
श्री [illegible] [illegible] से और कुछ
[illegible] के आश्रम में मिले। श्री [illegible]
भी [illegible] की [illegible] भी [illegible] पहले [illegible]
और [illegible] में [illegible] से हुए।
आज [illegible] के मित्र एवं पं० [illegible]
[illegible] के [illegible] पं० [illegible] मिश्र [illegible]
[illegible] के मंदिर का [illegible] करना।
पं० [illegible] पंडित थे।
[illegible] रामी [illegible] एवं श्रीकृष्ण [illegible]
को भी पत्र लिखे गये और [illegible] जायेंगे।
आज भी [illegible] की सूची [illegible] में [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला। समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ।५३।

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ।५४।

śrutivipratipannā te yadā sthāsyati niścalā ।
samādhāvacalā buddhistadā yogamavāpsyasi ॥ 53 ॥
arjuna uvāca
sthitaprajñasya kā bhāṣā samādhisthasya keśava ।
sthitadhīḥ kiṁ prabhāṣeta kimāsīta vrajeta kim ॥ 54 ॥

सूर्यो० ६। २२, सूर्या० ५। ५७

स्वामी चिरञ्जीवप; अईसा के राजगुरुमठ के संभ्रांतशिष्य के माध्यमसे : →
(१) अभयनारायणराय → (सांकृतगोत्रीय)
(२) रामफेर राय → (सांकृतगोत्रीय)

सावधान ! लोगोंको दिखानेके लिये धर्मका आचरण न करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।

śrībhagavānuvāca

prajahāti yadā kāmānsarvānpārtha manogatān ।
ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate ॥ 55॥
duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ ।
vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate ॥ 56॥

अमावास्या सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।५७

आज जयंती का मुख्य समारोह हुआ।
पांच सौ व्यक्तियों ने प्रसाद ग्रहण-भोजन किया।
स्वामी [illegible]नन्द, स्वामी प्रेमेशानन्द, स्वामी [illegible]नन्द,
स्वामी [illegible]नन्द तथा स्वामी [illegible]नन्द जी
आमन्त्रित थे।
स्वामी [illegible] को [illegible] महाराज:
स्वामी हरि[illegible]नन्द: ए [illegible] बुलाने के लिए भेजा।
वे [illegible] रखने की [illegible] कर रहे हैं।
पर [illegible] को [illegible] ही होगा।
दो हजार [illegible] हरि[illegible]नन्द के [illegible]
[illegible] भी स्वामी [illegible] द्वारा मिले।
आज जयंती का मुख्य समारोह था। 4 से [illegible]
[illegible] और 610 [illegible]
शर्मा आ गये। समारोह सफल रहा।
इसके पूर्व [illegible] रवीन्द्रनाथ, नरेन्द्र शर्मा,
[illegible] तथा [illegible] आदि [illegible]
आये और [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५७।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५८।

yaḥ sarvatrānabhisnehastattatprāpya śubhāśubham ।
nābhinandati na dveṣṭi tasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 57 ॥
yadā saṁharate cāyaṁ kurmo'ṅgānīva sarvaśaḥ ।
indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 58 ॥

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

"विश्वं दर्पण दृश्यमान नगरी तुल्यं निजान्तर्गतं।
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्री गुरुमूर्तये नम इदं दीक्षणामूर्तये ॥"
* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।६६।

prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate ।
prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate ॥ 65 ॥
nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā ।
na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham ॥ 66 ॥

सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ६।००

"ॐ तत् सत्" का क्या अर्थ है?

इस कार्य में कोई विघ्न बाधा न आवे, इसलिये ॐ शब्द का उच्चारण किया जाता है। परमात्मा में समर्पित है इसलिये तत् शब्द का प्रयोग है और इसका फल अविनाशी हो, इसलिये सत् कहा है। अतः प्रत्येक कार्य में इन तीनों का स्मरण करना पड़ता है।

ममताका नाश ही दुःखनाशका उपाय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ। ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ।३।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते। न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ।४।

śrībhagavānuvāca

loke'smindvividhā niṣṭhā purā proktā mayānagha ।
jñānayogena sāṅkhyānāṁ karmayogena yogināṁ ॥ 3 ॥
na karmaṇāmanārambhānnaiṣkarmyaṁ puruṣo'śnute ।
na ca saṁnyasanādeva siddhiṁ samadhigacchati ॥ 4 ॥

आमलकी एकादशीव्रत सूर्यो० ६।९, सूर्या० ६।४

स्वामी हरिदर्शनानंद सरस्वती एवं स्वामी परमप्रकाशानंद सरस्वती आये। रुके.. इलाहाबाद आने की कोई आवश्यकता नहीं थी। महाराजपुर में आसक्ति बढ़ रही है, बच्चे कहते हैं उज्वल भविष्य एवं अभ्युदय की चिंता नहीं, लोग ऐसे आज समझते हैं। क्योंकि कुछ परिश्रम एवं पुरुषार्थ करना पड़ता है।

जहाँ संकल्प है वहाँ मार्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।६।

na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt ।
kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ ॥ 5॥
karmendriyāṇi saṁyamya ya āste manasā smaran ।
indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate ॥ 6॥

भौमप्रदोष

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।४

आज सिमरी के मजिस्ट्रेट श्री रमेश्वर पाण्डेय, सहसा आये और रुके नहीं। कुछ रसीद वही एवं पिताजी के फोटो लेकर वापस गये। कहा कि ४५०० रुपये एकत्रित किया है। एक मास बाद आकर लाऊंगा। 'देवाजी दिव्यविभूति' के प्रकाशन तथा सिमरी के पुराने स्वतंत्रता सेनानियों के स्मारक की चर्चा कर रहे थे कि बनना चाहिये।

सायंकाल देव और द्वारिकानाथ दोनों लौट गये। स्वामी पराग प्रज्ञ समाधि पर रुके और होली बाद तक रहेंगे।

परिश्रम वह चाभी है जो सौभाग्यका द्वार खोल देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।१३।
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।१४।

yajñaśiṣṭāśinaḥ santo mucyante sarvakilbiṣaiḥ।
bhuñjate te tvagham pāpā ye pacantyātmakāraṇāt ॥ 13॥
annādbhavanti bhūtāni parjanyādannasaṁbhavaḥ।
yajñādbhavati parjanyo yajñaḥ karmasamudbhavaḥ ॥ 14॥

सूर्यो० ६।३, सूर्या० ६।६

चैत्र कृष्ण ३, रविवार, 19.MARCH
सूर्यो० ६।२, सूर्या० ६।७

डा० रामकरण शर्मा एवं पं० श्यामकान्त मिश्र को लेकर [illegible] दर्शन किया। कल उनमें [illegible] जायेगा।
स्वामी हरिहरानन्द मुजफ्फरपुर से आये। कल दोनों संन्यासी [illegible] में, महिला [illegible] और सामाजिक [illegible] और राजगुरु मठ के सहायता अभियान में जायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।१५।
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।१६।

karma brahmodbhavaṁ viddhi brahmākṣarasamudbhavam ।
tasmātsarvagataṁ brahma nityaṁ yajñe pratiṣṭhitam ॥ 15॥
evaṁ pravartitaṁ cakraṁ nānuvartayatīha yaḥ ।
aghāyurindriyārāmo moghaṁ pārtha sa jīvati ॥ 16॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ६।१, सूर्या० ६।७

आज डा० भगवतीनारायण त्रिपाठी को डा० [illegible]नारायण त्रिपाठी अपने भक्त एवं उनके मित्रके औरों के लिये [illegible] पर [illegible] लिखवाया गया है।

साथही "वरुणाकृ" के प्रकाशनमें श्रि० पाण्डे- को सलाह देकर उन्हें [illegible] सम्पादन से देखने के लिये उनकी [illegible] की बातमें आदेश रूप में रख दी।

श्रीराजगुरु [illegible] "प्रशादं" [illegible] एवं निस्पृह [illegible] को [illegible] [illegible] करना। [illegible]।

श्री प्रमोदकुमार द्विवेदी एवं [illegible] सम्पादक हैं। [illegible] रोगग्रस्त हैं। दवा-उपचार की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाती अतः कभीकभी शरीरमें [illegible] कष्ट हो जाता है, और स्वाभावतः चिन्ता हो जाती है। यह शरीर भगवान का मंदिर है, जबतक प्रारब्ध है, इसकी रक्षा-सुरक्षा का भी तो प्रयत्न होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः। आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ।१७।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ।१८।

yastvātmaratireva syādātmatṛptaśca mānavaḥ।
ātmanyeva ca saṁtuṣṭastasya kāryaṁ na vidyate ॥ 17॥
naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana।
na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ ॥ 18॥

आज श्री शिवराग राम - कीरपुर को एक लेख सूर्यो॰ ६।००, सूर्या॰ ६।८
धार्मिक पत्र - गठकी व्यवस्था, उनके सम्पर्क बनाये रखने तथा सामाजिक सेवा के दृष्टिकोण - वस्त्र आश्रम एवं राजगुरुमठ के संगठन तथा अभ्युदय कार्य के संबंध में लिखकर भेजा।

बिहार-सारण के जदयुक्त कौशलेश्वर राम मिले उनसे बहुतेरी सामाजिक बातें हुईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।१९।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ।२०।

tasmādasaktaḥ satatam kāryam karma samācara ।
asakto hyācarankarma paramāpnoti pūruṣaḥ ॥ 19 ॥
karmaṇaiva hi saṃsiddhimāsthitā janakādayaḥ ।
lokasaṅgrahamevāpi sampaśyankartumarhasi ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८

पं० अनन्तशङ्कर शर्मा- शास्त्री, रैनवारी को
उद्बोधन स्वरूप एक लंबा पत्र लिखा और उनको भेजा।
दो सौ रुपये पंडित रामजी पराडे को देने तथा दैनिकव्यय
हेतु लिये शिवाला डाकघर से विजयबैंक खाते से निकाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।२३।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ।२४।

yadi hyahaṁ na varteyaṁ jātu karmaṇyatandritaḥ।
mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ ॥ 23॥
utsīdeyurime lokā na kuryāṁ karma cedaham।
saṅkarasya ca kartā syāmupahanyāmimāḥ prajāḥ ॥ 24॥

शीतलाष्टमीव्रत — सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ६।९

दो सौ रुपये पूजा सामग्री [illegible] के मद में
हनुमान घाट सेन्ट्रल बैंक से उठाया। तिवारी [illegible] जी
रात को आये - दस रुपये दे गये।
आज दशमी के श्रीराधाकृष्ण राय [illegible] इलाहाबाद बैंक
व्यवस्थापक आये मिले। उनसे घंटे भर तक सामाजिक अभ्युदय,
संगठन एवं विकास की बातें धर्म-सदाचार की पृष्ठभूमि में हुईं।
वे पूरे प्रभावित हुए ... सहयोग करेंगे। वे भोजपुरी के श्री [illegible] राम
के संबंधी हैं। [illegible] के छोटे भाई इनके बड़े दामाद हैं। गंगा के
श्रीशिवपूजन राय 'सच्चिदानन्द' उर्फ 'निराला' जी के पुत्र श्री विक्रम
देव राय [illegible] अभिनेता के पुत्र इनके छोटे दामाद हैं।
श्री विक्रमदेव राय श्री [illegible] के उस परिवार में हैं जिसमें
श्री [illegible] सिंह [illegible] हैं। विक्रमदेव-
[illegible] में [illegible] हैं या संबंधियों के यहाँ रहते हैं।
श्रीराधाकृष्ण राय [illegible] राजकॉलोनी में M 5
[illegible] में [illegible] हैं, वहीं रहते हैं। उन्होंने फल तथा [illegible]
दिये। उन्हें इसके पूर्व [illegible] तथा अपनी [illegible] पुस्तकें भेज चुके
थे। [illegible] के श्यामनारायण के पुत्र आये। मंदिर को [illegible]
एक बड़ा और दो छोटे फोटो दे गये। उन्हें ५० रुपये पहले के लिये
जा चुके हैं। दो फोटो और मंदिर को देने हैं। [illegible]
ले लेंगे। दस वर्ष पूर्व के [illegible] श्रीराय रघुनाथसिंह
और [illegible] राम [illegible] आदि के हैं।

वह पश्चात्ताप व्यर्थ है, जिससे कुकर्मका प्रवाह रुके नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत। कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।२५।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्। जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।२६।

saktāḥ karmaṇyavidvāṁso yathā kurvanti bhārata ।
kuryādvidvāṁstathāsaktaścikīrṣurlokasaṅgraham ॥ 25 ॥
na buddhibhedaṁ janayedajñānāṁ karmasaṅginām ।
joṣayetsarvakarmāṇi vidvānyuktaḥ samācaran ॥ 26 ॥

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ६।१०

आज पं० रामजी पाण्डेय - नीरज - जो श्री संकटमोचन के पुजारी, प्रख्यात प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति, उनसे उनकी कुण्डली के अनुसार 'महामृत्युंजय जप ५१०००, इक्यावन हजार अरिष्ट की शान्ति के लिये करने की सामग्री बनाई गयी। पहले सुरेशचन्द्र शर्मा के ५१ रुपये दे गये थे। [redacted] साठ रुपये देवीप्रसाद के शिष्य श्रीकृष्णकुमार ने दिए। कुल मिलाकर पूजा सामग्री (वरीन) में ५११ रुपये लगे।

आज कृष्णकुमार जी अपने पत्नीसहित अपने विकलांग पुत्र की दवा के लिये आये। डा० वीरेश्वर त्रिपाठी के यहाँ सिद्धगिरि बाग में दवा होती है।

श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा - सैमरा - गाजीपुर आजमगढ़ को एक पत्र लिखा - डा० राम अवध शर्मा को भी पत्र लिखा तथा हरिकृष्ण जी को भी पत्रोत्तर व्यवहार किया।

सूर्यो० ५।५५ सूर्या० ६।११

आज डा० राम अवध शर्मा प्रातः ही आ गये। स्नान के बाद पूजा निमित्त संकटमोचन गये। ११ बजे श्री जगमोहन राय आ पहुँचे। उन्हें "गीता अष्टादश पुष्पम" स्वामी विद्यानंद जी ने प्रकाशित किया। मंगलाचरण एवं शान्तिपाठ की भूमिका भी लिखा तथा स्वामी सहजानन्द शिक्षा समाज की स्मारिका की एक प्रति दी। उन्होंने गीता प्रकाशन को ५१ रुपये दिये जो उचित समय में लगेंगे।

पं० रामजी पाण्डेय के घर संकटमोचन गये। उनकी संकल्प विधि पूरी किया। उन्हें सब सामग्री सहित कुल पत्नी के लिये १० रुपये दिये गये। रिक्शा से गये लौटे। सायंकाल भोजनोपरान्त डा० राम अवध शर्मा चले गये। उनसे राजगुरुमठ के अतिथिगृह में आचार्य [illegible] के सम्बन्ध में बातें हुईं। [illegible]

आज प्रातः पुत्र को हरिप्रकाश [illegible] पहुँचाने गये। [illegible] गुरुपादि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।२७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ।
ahankāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate ॥ 27 ॥
tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ।
guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate ॥ 28 ॥

पापमोचनी एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११

कल - रविवार को। [redacted] प्रातः ५.३० बजे श्री राधेश्याम रामायणी जी पधारे। के विश्वनाथ नगर की ... मनीषी हैं। आज डॉ ... उपना प्रतिलिपि ... श्री प्रमोद कुमार दीक्षित के पीतिर कोटिसोगाते।

आज प्रातः ५.३० बजे श्री राधेश्याम रामायणी आये। रामायण के पंक्तियाँ - चौपाइयाँ लिख के जो शिलापट्ट पर अंकित होगी, उन्होंने फोटो प्रतिलिपि बनवाने की बात बताई।

श्री प्रमोद कुमार दीक्षित सम्पादक थे। प्रथम प्रातः किया और मुझे ५ बजे काशी राज न्यास पत्रिका के फोटो प्रतिलिपि कराने के लिए ले गये। फोटो प्रतिलिपि गाँव में ... उनका बना। कृष्णदेव केशव भोजनोपरान्त हरेराम शर्मा, प्रमोद का प्रतिलिपि संग्रह भी ... इन लोगों का फोटो प्रतिलिपि भी बन गया। इस प्रकार ५ व्यक्तियों का फोटो प्रतिलिपि बनाया जा सका।
नीलीकलाँ के पास कोठी बुद्ध के अपने शिष्यों को रामदान देकर मनुजीराज आदि को ... किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सजन्ते गुणकर्मसु। तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत्।२९।
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा। निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः।३०।

prakṛterguṇasaṁmūḍhāḥ sajjante guṇakarmasu।
tānakṛtsnavido mandānkṛtsnavinna vicālayet ॥ 29॥
mayi sarvāṇi karmāṇi saṁnyasyādhyātmacetasā।
nirāśīrnirmamo bhūtvā yudhyasva vigatajvaraḥ ॥ 30॥

भौमप्रदोष, वारुणीपर्व — सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ६।११

आज मार्गों के उपसंपादक। वशिष्ठ मुनि ओझा। आरा भोजपुर के निवासी। को वेदभाष्य के संबन्धी सामग्री के आधार पर समीक्षात्मक विचारात्मक करने के लिये लिखा।

आज पं० रामनरेश पाण्डेय को फालिज का [illegible] किया [illegible]। [illegible] जी वैद्य के लिये बुलाया। वैद्यजी शर्मा [illegible] वैद्य के यहां से दवा आयी। श्री [illegible] नारायण राय [illegible] बैंक के माध्यम से इनसे सम्पर्क हुआ। ये [illegible] [illegible] हैं।

सात्विक आहारके बिना सहनशक्ति नहीं आती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः। श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ।३१।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्। सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ।३२।

ye me matamidaṁ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ ।
śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ ॥ 31 ॥
ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam ।
sarvajñānavimūḍhāṁstānviddhi naṣṭānacetasaḥ ॥ 32 ॥

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ६।१२

डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा सायंकाल आ पहुँचे। अरुणकुमार से उन्हें यथाशीघ्र पहुँचने की खबर भेज दी थी, जो यथार्थ नहीं थी। मैंने नवागत के [illegible], समय से आने की बात कही थी। खैर कुशल समाचार हुआ। अपने पुत्र आनन्दकुमार के विवाह ठीक होने की बात उनसे मालूम हुई। श्रीवत्सलाल की कन्या का विवाह शायद सोनहा गाँव ठीक हुआ है।

* * *

राजनीतिक स्थिति डावाँडोल है। रामनरेश पांडे एवं उनके दुष्ट पुत्रों ने भारी षड्यंत्र किया है। डा० स्वामीनाथ तिवारी के विरुद्ध इन लोगों का कुचक्र अत्यन्त निन्दनीय और घृणास्पद है। मन इससे बहुत खिन्न है। जनता की भी स्थिति डावाँडोल है। मेम्बर के जीतने की ही आशा है। देखें क्या होता है? वे लोग का पतन है। आपसी [illegible] से भी विजय की उम्मीद है।

आपको अस्त-व्यस्त करनेकी शक्ति प्रतिकूलतामें नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि। प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति।३३।
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ। तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।३४।

sadṛśaṁ ceṣṭate svasyāḥ prakṛterjñānavānapi।
prakṛtiṁ yānti bhūtāni nigrahaḥ kiṁ kariṣyati ॥ 33 ॥
indriyasyendriyasyārthe rāgadveṣau vyavasthitau।
tayorna vaśamāgacchettau hyasya paripanthinau ॥ 34 ॥

आज प्रातः डा० पैशीक्रनाथ   सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ६।१२
शीघ्र जागते गये। पत्थर जो बने वाला अल्या स्थय की मूर्ति रंगनेवाला
रंगसाज आया। २५० रुपयेकी मांग किया। रविवार २ अप्रैल को काम लगायेगा।
उसके धूप कदुवार कभी कामी जायेगी। डा० चन्द्रेश्वर मिश्र के प्रेस
का रजिस्ट्रार का एक पत्र लिखा।

जहाँ दया होती है वहाँ अपने सुखके लिये संग्रह नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।३८।

śrībhagavānuvāca

kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ ।
mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam ॥ 37 ॥
dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca ।
yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam ॥ 38 ॥

चैत्र नवरात्रारम्भ, 'सर्वधारी नाम' संवत्सर   सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३

चैत्र शुक्ल २, रविवार, 2.APRIL
सूर्यो० ५।४७,   सूर्या० ६।१४

डा० रामतपस्याशर्मा जी आये। तीन बजे तक रहे। अपराह्न पटना वापस गये। राजगुरुमठ के व्यवस्था और किसी [illegible] के सहयोग आदि के संबंध में बातें हुई। शर्मा जी [illegible] पूर्वक रहे हैं। सायंकाल [illegible] प्रमोद श्रीमाल, [illegible] तथा और [illegible] दर्शन को लिये आये। शीतला दर्शन पर गयी लौटी तब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।३९।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

āvṛtaṁ jñānametena jñānino nityavairiṇā ।
kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca ॥ 39 ॥
indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate ।
etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam ॥ 40 ॥

गणगोर, मत्स्य-जयन्ती सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ६।१४

आज स्वामी [illegible] सरस्वती एवं स्वामी [illegible] सरस्वती [illegible] से लौटे। [illegible] [illegible] के [illegible]।
आज रात में दर्द - अस्वस्थता की स्थिति।
आज लक्ष्मीनारायण [illegible] जी [illegible] हुई। 220 रुपये [illegible] देने पड़े। [illegible] पर [illegible] में भी [illegible] हुई।
आज [illegible] सोहनी को संवादपत्र लिख भेजा।
कुछ दिन से [illegible] बड़े प्रेम [illegible] आते हैं।

संसारसे तरनेका एक सुन्दर उपाय श्रीरामकी शरण होना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ।४१।
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ।४२।

tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha ।
pāpmānaṁ prajahi hyenaṁ jñānavijñānanāśanam ॥ 41 ॥
indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṁ manaḥ ।
manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ ॥ 42 ॥

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ६।१५

आज "नारायण जी" – नीरपुर, इलाहाबाद से आए। [illegible] काशी से वापस आये। स्वामी हरिदर्शनानंद सरस्वती एवं स्वामी परमप्रकाशानंद सरस्वती, महागणपति शुकदेवानंद जी कुटी को उत्सुकतापूर्वक [illegible] गये।
श्री अमृतनारायण सिंह जी, मकान एवं मठ के निर्माण संबंधी [illegible] शैलेश नगर [illegible] द्वारा [illegible] के संदेश में [illegible] के माध्यम से [illegible] के संदेश में लिखवाया। गैस सिलिंडर [illegible] गया।
[illegible] इन्होंने [illegible] रक्खे। कष्ट होता है।
आज वो का० श्री सुरेन्द्रनाथ [illegible] अभियंता (वृजुल) को लेटर पत्र [illegible] १४ अप्रैल को होने वाली बैठक के संबंध में लिखा।
कल त्रिपाठी [illegible] दिल्ली [illegible] पत्र लिखवाया। [illegible] और [illegible] मुद्रण प्रकाशन के लिये [illegible]।
मन अब [illegible] की [illegible] है। (स्वामी हरिहरानंद जी [illegible])
[illegible] विवेक की बुद्धि के द्वारा चित्त को शांत कर रहा हूँ।
[illegible] पांडे ने उदण्ड और उच्छृङ्खल, उन्होंने भी स्वामीगण को [illegible] साक्षी [illegible]। यह उनके पतन और [illegible] का सूचक है।
६०० विद्यार्थियों को नाजायज [illegible] से, चुनाव में पदस्थापित अधिकारियों की [illegible] से हटाया गया है। दो दर्जन [illegible] हो चुकी। श्री रंगनाथ [illegible], सोमेश्वरनाथ की हत्या [illegible] ६०० विद्यार्थी की [illegible] के माध्यम से सामाजिक मर्यादा की हत्या।

सत्संग पारसमणि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप।२।

śrībhagavānuvāca

imaṁ vivasvate yogaṁ proktavānahamavyayam।
vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt ॥ 1 ॥
evaṁ paramparāprāptamimaṁ rājarṣayo viduḥ।
sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ paraṁtapa ॥ 2॥

चैत्र शुक्ल ६, सं० २०५२, गुरुवार, APRIL 6. 1995 सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ६।१६

मन, वाणी, और कर्म [redacted] की संपादन शक्ति का नाम है प्राण। प्राण हमारे शरीर की रीढ़, मन की संवेदना और आत्मा की चेतना का पर्याय है। हमारे आस पास जो शक्ति, ऊर्जा, प्रकाश और चुम्बकीय धाराएं गुजरती रहती हैं वे सब प्राणशक्ति के प्रमाण हैं।

× × ×

आत्मानुभूति के पूर्व जो कुछ हमारे पास महत्त्वपूर्ण है वह प्राणशक्ति है। वह शक्ति हमारे स्थूल शरीर और सूक्ष्मशरीर दोनों की सक्रियता का एकमात्र हेतु है। योगी लोगों का मत है कि प्राण तेजस और वायु दो तत्वों के मिश्रण से बना है। तेजस के बिना शक्ति का जन्म नहीं होता। प्राण विद्युत, विद्युत परमाणुओं से भी सूक्ष्म है।

× × ×

मानव शरीर के इर्दगिर्द एक चुम्बकीय विद्युत क्षेत्र है। जिसे आभामण्डल (aura) भी कहा जाता है। आभामण्डल का निर्माण चेतना की तरंगों एवं प्रकाश की रश्मियों से जो सदैव सूक्ष्मचेतना से प्रस्फुटित होती रहती हैं और सघन होकर भाव में परिणत हो जाती हैं, से बनता है। इसलिये हर व्यक्ति के पास एक सूक्ष्म आभामण्डल या भावमण्डल है जो समय समय पर बदलता रहता है। हमारी भावनाएं और आचरण आभामण्डल का निर्माता है। जब अच्छी भावनाएं और पवित्र आचरण होता है तब आभामण्डल बहुत सशक्त और निर्मल होता है। और जब भावधारा मलिन होती है और चरित्र भी मलिन होता है तब आभामण्डल धूमिल-धूमिल, विकृत और दूषित हो जाता है। दो शब्द हैं — भामण्डल और आभामण्डल।

उधारकी सम्पत्तिसे वृद्धिकी अपेक्षा अपनी दीनताका स्वाभिमान बहुत अच्छा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ।३।

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ।४।

sa evāyaṁ mayā te'dya yogaḥ proktaḥ purātanaḥ ।
bhakto'si me sakhā ceti rahasyaṁ hyetaduttamam ॥ 3॥

arjuna uvāca

aparaṁ bhavato janma paraṁ janma vivasvataḥ ।
kathametadvijānīyāṁ tvamādau proktavāniti ॥ 4॥

आभामण्डल को हैलो (Halo) कहते हैं। वह सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।१६
सिर के पीछे (आता) रहता है। आज भी और अवतारों के चित्र मिलते हैं,
बड़े संतों और योगियों के चित्र मिलते हैं उनमें हम उनके सिर के पीछे
गोलाकार सफेद या पीले रंग का एक चक्र देखते हैं यह
आभामण्डल है। यह प्रत्येक प्राणी में नहीं होता। यह उन्हीं विशिष्ट
व्यक्तियों में होता है जिनका व्यक्तित्व महान हो चुका है।
इतना है आभामण्डल। इसे ऑकल्ट (occult) साइन्स में
ओरा (aura) कहते हैं। यह आभामण्डल हमारे चरित्र का,
हमारे भावधारा का प्रतिबिम्बित्व करता है। जो व्यक्ति
चरित्रवान है उसका आभामण्डल सशक्त होगा, आकर्षक होगा।
उस पर दूसरों का प्रभाव नहीं हो सकेगा। विजातीय तत्व उस
आभामण्डल में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। उसे कोई हिप्नोटाइज
नहीं कर पाता। अर्थात् वशीभूत या मोहित नहीं कर पाता।
हम जिस दुनिया में जीते हैं वह संक्रमण की दुनिया है। एक व्यक्ति के
अनेक तत्व संक्रमण करते हैं। अनेक रोग आक्रमण करते हैं और
आभामण्डल को विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन जिसका
चरित्र शुद्ध होता है, चित्त शुद्ध होता है, भावधारा निर्मल होती है उसका
आभामण्डल छिन्न भिन्न नहीं होता। बाह्य आक्रमणों से वे आक्रान्त
नहीं होते। उनमें इतनी क्षमता होती है कि वे उन्हें लौटा देते हैं, उनका
और वापस चला जाते हैं, भीतर प्रवेश नहीं कर पाते।
हमारा चरित्र और भाव जब निर्मल होते हैं तब इस
संक्रमण की दुनिया में रहते हुए भी हम बाह्य आक्रमणों से बच

भगवान्, प्रकृति और संसारने प्रत्येक मनुष्यको अपने उद्धारकी पूरी सामग्री दी है।

जाते हैं। ⟶ ⟶ पृष्ठ-... ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।५।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्। प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।६।

śrībhagavānuvāca

bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna।
tānyahaṁ veda sarvāṇi na tvaṁ vettha paraṁtapa ॥ 5॥
ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san।
prakṛtiṁ svāmadhiṣṭhāya saṁbhavāmyātmamāyayā ॥ 6॥

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।१७

आज "महामृत्युञ्जय जप" की पूर्णाहुति संपन्न हुई।
प्रमोदकुमार- ११ बजे घर को लौटे- पंडितजी [illegible] संकटमोचन
मिश्र (बीरपुर) के यहाँ से। १०००० [illegible] सप्तशती [illegible] में तथा
१५५ [illegible] दक्षिणा-संकल्प [illegible]। [illegible]
लिये [illegible] पहले दिये गये थे। पुस्तक के [illegible]-
(कलकत्ता) [illegible] "[illegible]" प्रकाशन [illegible] से छप रही है
जिसे [illegible] के [illegible] से पूरा करना होगा। [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible] - [illegible]
[illegible]।

चैत्र शुक्ल ९, रविवार, 9.APRIL
सूर्यो० ५।४०,　सूर्या० ६।१७

श्रीरामनवमीव्रत

आज रामनवमी। मठ में [illegible] - भोजन [illegible]
में कुछ अतिथि रहे। मठ के [illegible] दूर [illegible]-
[illegible] आवश्यक है। [illegible] हुई।
स्वामी हरिशंकर [illegible] के बाद बड़े [illegible] से
श्री गुलाब शर्मा [illegible]।
स्वामी [illegible] - [illegible] के [illegible]
हैं। मठ के [illegible]
[illegible] चाहते हैं। [illegible] आज भी
[illegible] आध्यात्मिक बातों [illegible],
[illegible] को भूल गये [illegible]
[illegible] हो [illegible] होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-Grant 2

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥८॥

yadā yadā hi dharmasya glānirbhavati bhārata |
abhyutthānamadharmasya tadātmānaṁ sṛjāmyaham ॥ 7॥
paritrāṇāya sādhūnāṁ vināśāya ca duṣkṛtām |
dharmasaṁsthāpanārthāya saṁbhavāmi yuge yuge ॥ 8॥

सूर्यो॰ ५।३९, सूर्या॰ ६।१८

आज · पं॰ रामनरेश पाण्डेय का संपादकीय
[illegible] आश्रम तथा राजगुरुमठ के संबंध में लिखा. [illegible] आश्रम
की दुर्व्यवस्था की खबर जानकर घोर चिन्ता. भावात्मक
[illegible] हुआ। के राजगृह- पोस्टमास्टर द्वारा खड़गधारी शर्मा
को संपादन। पिनाक सूत्र को भेजा। आज से एक कार्ड भी लिखा।
फोटो

*** VV हस्तलिखित ५७ का शेष: →

जब मनुष्य का चरित्र शुद्ध होता है आभामण्डल निर्मल होता है तो
उस आत्मा में रहे परमाणुओं का विकिरण होता है कि जिससे
इत्यादि लोग आते हैं। उसमें आकर्षण पैदा हो जाता है।
सूक्ष्म शरीर में जो घटित होने वाली घटनाएं हैं। सूक्ष्म स्पंदन
के रूप में भावमण्डल पर उन का प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तित्व का रूपान्तरण भाव की गतिमान केन्द्र पर
हो सकता है। भावधारा अच्छी होगी तो व्यक्तित्व अच्छा होगा।
और बुरी होगी तो व्यक्तित्व बदल जायेगा।

चिन्ता व भय तभी घेरते हैं जब न करनेवाले कार्य किये जाते हैं करनेयोग्य नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ।९।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ।१०।

janma karma ca me divyamevaṁ yo vetti tattvataḥ |
tyaktvā dehaṁ punarjanma naiti māmeti so'rjuna || 9 ||
vītarāgabhayakrodhā manmayā māmupāśritāḥ |
bahavo jñānatapasā pūtā madbhāvamāgatāḥ || 10 ||

कामदा एकादशीव्रत सूर्यो॰ ५।३८, सूर्या॰ ६।१८

आज वीरपुर के श्री शिवप्रसाद जी स्वतंत्रता सेनानी
एवं अवकाशप्राप्त बी॰डी॰ओ॰ आ पहुँचे। रात को रुके। विचार विमर्श हुआ।
समाज से प्रभावित [illegible] की [illegible] योजना बनी [illegible] हैं। इसके पूर्व
[illegible] मिलाप [illegible] आवेंगे पर वे आज आ सके हैं।
वे पत्रकार [illegible] हैं। [illegible] हैं। [illegible] हैं। [illegible] स्वाध्याय [illegible]
और [illegible] के बहुआयामी प्रश्नों पर विचार विमर्श होता रहा।
प्रमोद भी हैं। वे [illegible] की [illegible] में हैं।

अपनी जानकारीके अनुसार अकर्तव्य न करनेपर कर्त्तव्य स्वतः होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Sarayu Trust. Funding by IKS-MoE-Grant-2

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।११।
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः। क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ।१२।

ye yathā māṁ prapadyante tāṁstathaiva bhajāmyaham ।
mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ ॥ 11 ॥
kāṅkṣantaḥ karmaṇāṁ siddhiṁ yajanta iha devatāḥ ।
kṣipraṁ hi mānuṣe loke siddhirbhavati karmajā ॥ 12 ॥

आज प्रमोद भार्गव। श्री शिवदास राय जी। सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।११

वार्तालाप. भोजन विश्राम के बाद अपराह्न गये। वे २३ अप्रैल की
प्रकाशित बैठक में आवेंगे। वे आग्रहपूर्वक [illegible]
[illegible] की आज कथा - "[illegible] संघर्ष" [illegible]
पढ़ने को लिये लाये और २३ अप्रैल को लेते आवेंगे। मैंने इसी [illegible]
पर पुस्तक दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्॥१३॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा। इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥१४॥

cāturvarṇyam mayā sṛṣṭam guṇakarmavibhāgaśaḥ।
tasya kartāramapi mām viddhyakartāramavyayam॥13॥
na mām karmāṇi limpanti na me karmaphale spṛhā।
iti mām yo'bhijānāti karmabhirna sa badhyate॥14॥

प्रदोषव्रत, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)　　सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९

आज श्रीकेदार राय जी पोस्टमास्टर, लोहता आये। उनसे बक्सर
का समाचार - पुजारी की [illegible], बालक बदलने - [illegible] से मिलने का
गहने आदि की प्रत्यक्ष अनुभव करवाने का प्रामाणिक विवरण प्राप्त
हुआ। वे शीघ्र चलेंगे। २३ ता० को बैठक में आने का उनसे भी आग्रह
किया। वे आवेंगे।

आज [illegible] जी। डा० [illegible] ने [illegible]
[illegible] क्या होगा। वे [illegible] [illegible]
[illegible] ठीक है। "[illegible]" नहीं होगा [illegible]। [illegible]
[illegible] [illegible] जायेगी।

श्री[illegible] राय शर्मा समस्तों को [illegible] वैसा
किया। पट [illegible] श्रीदेसाई के महाप्रयाण हो गये हैं अतः थोड़ा ही
समय। नारायण भी आकर ठहरे हैं। उनकी पत्नी भी आई हैं।
प्रयाग [illegible] की सहायता में आनेवाली हैं।

आज सायंकाल [illegible] के श्री प्रेम शंकर राय उर्फ बच्चालाल
राय महेश्वर राय लेकर आये। उन्हें भोजन विश्राम किया।
उनसे विवाहादि और गांव की [illegible] की चर्चा होती रही।

प्रातः [illegible] के श्रीसूर्यवंश राय [illegible] के [illegible] करते हैं।
वे [illegible] [illegible] किया गया। दोनों शाम भोजन [illegible]।
कल वे [illegible] [illegible] तथा
[illegible] से [illegible] लौटेंगे। उन्हें [illegible] सत्संग
की [illegible] [illegible] रहा।

सामर्थ्यका सदुपयोग करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः। कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्॥१५॥
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः। तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥१६॥

evaṁ jñātvā kṛtaṁ karma pūrvairapi mumukṣubhiḥ।
kuru karmaiva tasmāttvaṁ pūrvaiḥ pūrvataraṁ kṛtam ॥ 15॥
kiṁ karma kimakarmeti kavayo'pyatra mohitāḥ।
tatte karma pravakṣyāmi yajjñātvā mokṣyase'śubhāt ॥ 16॥

मेष-संक्रान्ति सूर्यो० ५। ३४, सूर्या० ६। २०

आज संक्रांति को सत्तू [illegible] का [illegible]।
नारायणजी प्रभोर की प्रतीक्षा में रुके रहे। पर वे शाम तक नहीं
आये। मैंने श्री शिवकुमार पाण्डेय एवं श्रीमती पाण्डेय आदि को
संबोधित करते हुए संवाद लिखा। देवांगन देवकुमार श्री
[illegible] संकेत [illegible]। [illegible]
पहुँचने का भी संकेत किया।
आज प्रातः [illegible] एवं [illegible]
[illegible] के यहाँ [illegible]
आयेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः । अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः । स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।

karmaṇo hyapi boddhavyaṁ boddhavyaṁ ca vikarmaṇaḥ ।
akarmaṇaśca boddhavyaṁ gahanā karmaṇo gatiḥ ॥ 17॥
karmaṇyakarma yaḥ paśyedakarmaṇi ca karma yaḥ ।
sa buddhimānmanuṣyeṣu sa yuktaḥ kṛtsnakarmakṛt ॥ 18॥

श्रीहनुमनज्जयन्ती, पूर्णिमा, वैशाखस्नानारम्भ, चन्द्रग्रहण * सूर्यो॰ ५।३३, सूर्या॰ ६।२०

आज प्रातः [illegible] प्रयाग गये। प्रमोद कुमार दोपहर तक नहीं आये। [illegible] हो रहा है। [illegible] बंद है। [illegible] भी [illegible] से ही [illegible] हैं।
आज [illegible] के [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] को भी [illegible] कर लिया। [illegible] [illegible] छोड़ने की [illegible] की। आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा। [illegible]
[illegible] में तीन दिन [illegible] प्रमोद कुमार [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] और [illegible] तथा कुछ [illegible] के [illegible] रहे [illegible] [illegible] पड़ी।
रात को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आये।
[illegible]। सामान्य समाचार [illegible]। कुछ अन्य [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं। वे आगे [illegible] २३ ता॰ की बैठक में [illegible]।

वैशाख कृष्ण १, रविवार, 16.APRIL
सूर्यो॰ ५।३२, सूर्या॰ ६।२१

आज [illegible] के पं॰ [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible]
[illegible] आये। [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
वे २२ ता॰ को [illegible] बैठक २३ को [illegible]। [illegible] [illegible]
[illegible] गया। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] आये। [illegible]
[illegible] के [illegible] होने की [illegible]। उन्हें [illegible] [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] नहीं [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]

* स्पर्श [illegible] [illegible] [illegible] मध्य [illegible] [illegible] मोक्ष [illegible]
सायं ५ बजकर ६ मिनट ५ बजकर ४५ मिनट ६ बजकर २५ मिनट

[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः । कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः ।२०।

yasya sarve samārambhāḥ kāmasaṁkalpavarjitāḥ ।
jñānāgnidagdhakarmāṇaṁ tamāhuḥ paṇḍitaṁ budhāḥ ॥ 19 ॥
tyaktvā karmaphalāsaṅgaṁ nityatṛpto nirāśrayaḥ ।
karmaṇyabhipravṛtto'pi naiva kiñcitkaroti saḥ ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५ । ३१, सूर्या० ६ । २१

आज शिवपूजन शास्त्री के डा. श्री अवधनन्दन पाण्डेय को ले आये।
वे पटना के राजनीति विज्ञान के स्नातकोत्तर [illegible] हैं और [illegible]
से भी [illegible] परीक्षाके प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हैं। वे भी [illegible]
के [illegible] में [illegible] के लिये [illegible] पद के लिये आवेदन
दिये हैं। सिफारिश के लिये आये थे। मैंने इस संबंधमें डा० रामकुमार-
शर्मा को पत्र लिख दिया कि वे भी [illegible] से कहें। मैंने-
[illegible] शर्मा सदस्य [illegible] को भी २३ता. की बैठक के लिये [illegible]
[illegible] पत्र भेजा और "[illegible]" की [illegible] के लिये
[illegible] के संबंधमें भी याद दिलाया।

आज शिवकुमार पंडे और डा. [illegible] सहस्रार्जुन राय [illegible]
[illegible] शर्मा को [illegible] तथा राजकिशोर [illegible] के
[illegible]।

आज प्रातः ७॥ बजे [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ये [illegible] आये थे। उन्होंने [illegible]
[illegible] [illegible] की बात [illegible]।
उन्होंने उपन्यास के प्रकाशन की चर्चा की और कहा कि [illegible]
[illegible]। उन्होंने देवशीला [illegible] की चर्चा की।
मध्याह्न देवशीला [illegible] का [illegible] आ गया।
उनसे [illegible] कहा कि [illegible] [illegible]।
[illegible] डा० [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] को २३ अप्रैल की बैठक में आने का [illegible]
पत्र भेज दिया।

जिज्ञासाके बिना ज्ञान नहीं होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः । समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।२२।

nirāśīryatacittātmā tyaktasarvaparigrahaḥ ।
śārīraṁ kevalaṁ karma kurvannāpnoti kilbiṣam ॥ 21 ॥
yadṛcchālābhasaṁtuṣṭo dvandvātīto vimatsaraḥ ।
samaḥ siddhāvasiddhau ca kṛtvāpi na nibadhyate ॥ 22 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो॰ ५ । ३१, सूर्या॰ ६ । २२

आज वैद्य जी के यहाँ। नंदन लाड्डू लेन गये। ६ दिनों की दवा ली। ३० तीस रुपये दिये। इधर उधर घूमते ११.३० बजे मठ में आये। प्रफुल्ल जी की तबियत मंद हो गयी।

मूर्खता और ममता दुःखका कारण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ।२३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ।२४।

gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ ।
yajñāyācarataḥ karma samagraṁ pravilīyate ॥ 23 ॥
brahmārpaṇaṁ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam ।
brahmaiva tena gantavyaṁ brahmakarmasamādhinā ॥ 24 ॥

"परा और अपरा शक्ति" सूर्यो० ५। ३०, सूर्या० ६। २२

'शक्ति' शब्द की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार की गयी है:-
'श' शब्द (मंगलवाचक होने से) ऐश्वर्यवाचक है और
'क्ति' शब्द पराक्रम के अर्थ में है। इससे ऐश्वर्य और पराक्रम
देनेवाली 'शक्ति' कहलाती है।
व्यवहार में शक्ति का अर्थ है सामर्थ्य किंवा बल, और पदार्थों में

'शक्ति' का अर्थ है उपाधि (उप-पास में आ + धि = रखना) अर्थात्
सामान्यत: विशेषगुण और विशेषत: जिसके [redacted] कारण पदार्थों के
स्वभावों में रूपान्तर हुआ सा प्रतीत होता है। इस ईश-शक्ति को
भगवान् ने श्रीमद्भगवद्गीता में माया {(सम्भवाम्यात्ममायया) ४।६}, योग
{(पश्य मे योगमैश्वरम्) ९।५।} और प्रकृति (प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य)
आदि नाम दिये गये हैं। इसे 'माया' (मा अर्थात् जो नहीं है या अर्थात्
जो न होकर भी भासमान होती है) ऐसा कहने का वास्तविक कारण
है कि इसका वास्तविक अस्तित्व नहीं है किन्तु मरीचिकाओं पर
जिस प्रकार मृगजल का भास होता है उसी प्रकार ईश्वर पर यह
भासमान होती है।
'प्रकृति' शब्द की व्युत्पत्ति देवीभागवत में इस प्रकार है:—
'मुख्य सत्व गुण के लिये 'प्र' अक्षर है, मध्यम रजोगुण के लिये
'कृ' अक्षर है और 'ति' अक्षर तमोगुण का वाचक है (सारांश
'प्र', 'कृ' और 'ति' तीनों अक्षरों से युक्त नाम में सत्वादि तीनों
गुणों का अर्थ करता है)'
उसी प्रकार ईश-शक्ति में भी सत्व, रज, और तम' तीनों गुण समाविष्ट
होने के कारण इसे प्रकृति नाम दिया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ।२५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ।२६।

daivamevāpare yajñaṁ yoginaḥ paryupāsate ।
brahmāgnāvapare yajñaṁ yajñenaivopajuhvati ॥ 25 ॥
śrotrādīnīndriyāṇyanye saṁyamāgniṣu juhvati ।
śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati ॥ 26 ॥

'माया' और 'प्रकृति' एक ही हैं। सूर्यो॰ ५।२९, सूर्या॰ ६।२३

माया को दूसरी स्थिति प्राप्त होने पर प्रकृति नाम मिल जाता है। प्रथम 'माया' शुद्धरूपिणी होती है, त्रिगुणों की उत्पत्ति होने के बाद उन गुणों के सहित उसे 'प्रकृति' नाम प्राप्त होता है।

शक्ति के दो मुख्य भेद 'परा' और 'अपरा'

इस शक्ति के मुख्य भेद दो हैं — (१) परा और (२) अपरा

काली - कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी और विश्वरुचि - अग्नि की सात जिह्वाएँ।

अग्नि - अग्रे नी - अग्रणी - अग्नि।

अग्नि की उपासना, सूर्य की उपासना -

अग्निर्मूर्धा - चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः।

परा - पश्यन्ती मध्यमा वैखरी

प्राण - अपान - व्यान, उदान - समान

अयमात्मा ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म, तत्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ।२९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ।३०।

apāne juhvati prāṇaṁ prāṇe'pānaṁ tathāpare ।
prāṇāpānagatī ruddhvā prāṇāyāmaparāyaṇāḥ ॥ 29 ॥
apare niyatāhārāḥ prāṇānprāṇeṣu juhvati ।
sarve'pyete yajñavido yajñakṣapitakalmaṣāḥ ॥ 30 ॥

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।२४

आज श्री रजनीतिराय आये... मूर्ति के संबंध की बातें हुई।

श्रीकृष्ण ठाकुर सायंकाल आये। स्टेशन पर सरकारी [illegible] अपने कार्यकर्ता सहयोगियों सहित ठहरे हैं। कल बारह बजे बैठक में भाग लेंगे।

आज मध्याह्न स्वामी ज्ञानप्रकाशानंद मंझेसा से आये। [illegible] शीतल चन्द्र लाल कर आये। डेढ़ बजे [illegible] अभी मंझेसा रवाना हुए हैं।

वैशाख कृष्ण ९, रविवार, 23.APRIL
सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।२५

प्रातः मूर्तिवालों के यहां गये। कालभैरव की मूर्ति देखा। पसंद हुई। [illegible] अर्धनारीश्वर की मूर्ति देखा। [illegible] की मूर्ति देखा [illegible] देखा... आज मध्याह्न बैठक हुई। पं० राजमोहन पांडे [illegible] स्वामी श्री [illegible] आदि [illegible] आये। [illegible] आये, [illegible] बैठक हुई। [illegible] कहा [illegible] भी चलेंगे। [illegible] दिये।... [illegible] मैंने [illegible] [illegible] [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ।३१।
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे। कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ।३२।

yajñaśiṣṭāmṛtabhujo yānti brahma sanātanam ।
nāyaṁ loko'styayajñasya kuto'nyaḥ kurusattama ॥ 31 ॥
evaṁ bahuvidhā yajñā vitatā brahmaṇo mukhe ।
karmajānviddhi tānsarvānevaṁ jñātvā vimokṣyase ॥ 32 ॥

आज भी [illegible] हैं। सूर्यो० ५।२५ सूर्या० ६।२५
[illegible] । १०-१२.
गई। [illegible] ।
श्री [illegible] पांडे [illegible] । [illegible]
[illegible] हैं।
की [illegible] । [illegible] "[illegible]" [illegible]
"[illegible]" [illegible] । [illegible] ।

भगवान्से विमुख होनेपर ही मनुष्यको जानने, पाने और करनेकी कमीका अनुभव होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥३३॥
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥३४॥

śreyāndravyamayādyajñājjñānayajñaḥ paraṁtapa ।
***sarvaṁ karmākhilaṁ pārtha jñāne parisamāpyate* ॥ 33 ॥**
tadviddhi praṇipātena paripraśnena sevayā ।
***upadekṣyanti te jñānaṁ jñāninastattvadarśinaḥ* ॥ 34 ॥**

वरूथिनी एकादशीव्रत — **सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।२६**

आज भी दोनों संन्यासी: स्वामी हरिदेवानंद एवं स्वामी ज्ञानप्रकाशानंद ठहरे रहे। कथावाचक सत्संग चलता रहा। हरिदेवानंद महाराज से सबके मैं आसक्त दीखते हैं। यह लक्षण ठीक नहीं है। पांच फलों तक ले आये हैं। शाम के पाठ में भी [illegible] ले आये हैं। ... स्वरूपानन्द शर्मा भी [illegible] कर रहे। रात को पत्ता- [illegible] [illegible] [illegible] रात को [illegible] उनका [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] दिखते हैं।

मुझपर भगवान्‌की कृपा कम है ऐसा माननेवाला भूल करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव। येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि।३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।३६।

yajjñātvā na punarmohamevaṁ yāsyasi pāṇḍava ।
yena bhūtānyaśeṣeṇa drakṣyasyātmanyatho mayi ॥ 35 ॥
api cedasi pāpebhyaḥ sarvebhyaḥ pāpakṛttamaḥ ।
sarvaṁ jñānaplavenaiva vṛjinaṁ saṁtariṣyasi ॥ 36 ॥

सूर्यो० ५ । २३, सूर्या० ६ । २७

आज राजेन्द्र शर्मा को पत्र लिखवाया [illegible]
बैठक में क्यों नहीं आये। आज श्री गोपालकृष्ण शर्मा [illegible]
और श्री [illegible] सिंह [illegible] को
पत्र लिखवाया [illegible]।
कल मैंने [illegible] राम-बाबू से [illegible]
पत्र लिखकर [illegible] कोई काम जावे।
श्री [illegible] को [illegible] पत्र लिखवाया [illegible] को
[illegible]। फिर श्री रामकृष्ण [illegible] मुरादाबाद
[illegible] पत्र लिखवाया। [illegible] श्री [illegible]
[illegible] के [illegible] पत्र [illegible]
[illegible]। [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ।३८।

yathaidhāṁsi samiddho'gnirbhasmasātkurute'rjuna ।
jñānāgniḥ sarvakarmāṇi bhasmasātkurute tathā ॥ 37 ॥
na hi jñānena sadṛśaṁ pavitramiha vidyate ।
tatsvayaṁ yogasaṁsiddhaḥ kālenātmani vindati ॥ 38 ॥

प्रदोषव्रत — सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।२७

आज प्रातः वैद्य जी के यहां श्री देवकीनंदन शर्मा के यहां गये। एक सप्ताह की दवा ली। ४० रुपये दिये। मणिकर्णिका के [illegible] श्मशान [illegible] के [illegible] में [illegible]।

आज हरिद्वार [illegible] महामण्डलेश्वर [illegible] गये। स्वामी [illegible] प्रकाशानंद [illegible] पं० [illegible] शर्मा के [illegible] के लिये गये - पत्रिका - [illegible] मंगवाया। ये मंगलवार को लौटेंगे।

महामण्डलेश्वर [illegible] की शुकदेवानंद कुटी की आसक्ति - स्वामी [illegible] के लिये अच्छी नहीं है। यह उनके लिये शुभ संकेत नहीं है। इससे राजगुरु मठ एवं अपने समाज के प्रति जो उनका कर्तव्य धर्म है, वह सम्पन्न नहीं हो सकता। मर्यादा की रक्षा नहीं होगी। [illegible] के गौतमों में अपनी [illegible] के [illegible] एवं आज बड़प्पन के मोह में ब्राह्मणत्व की मर्यादा और ब्राह्मणोचित [illegible] उसी ने [illegible] का अनुभव किया। उन्हें इस संबंध में समझाना होगा।

कामनाके अभावमें कर्मकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

arjuna uvāca

saṁnyāsaṁ karmaṇāṁ kṛṣṇa punaryogaṁ ca śaṁsasi।
yacchreya etayorekaṁ tanme brūhi suniścitam ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

saṁnyāsaḥ karmayogaśca niḥśreyasakarāvubhau।
tayostu karmasaṁnyāsātkarmayogo viśiṣyate ॥ 2 ॥

वैशाख शुक्ल २, सं० २०५२, सोमवार, MAY 1. 1995 सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।२९

"दानोपभोगरहिताः काले क्लेशेन भूयसा।
अन्यार्थमर्थान् रक्षन्ति चित्रं लुब्धा महाशयाः॥" क०·अजात०

आश्चर्य की बात है कि लोभी महाशयगण स्वयं समय-समय पर दान और उपभोग से वञ्चित रहकर, भारी क्लेश उठाते हुए, दूसरों के लिये धन की रक्षा करते हैं।

"प्राणाधारमहो निपीय सततं शेते तमोऽन्धे बिले।
सम्भोगे परदत्तमिच्छति परं नग्नत्वमाशान्तये॥
विस्तार्यैव कदर्यतामहिरिव लब्धस्य हेतोर्निधीन्।
नान्यः कोऽपि परं परोपकृतये प्रायो विना लुब्धं विना॥"

अर्थात् सर्प हवा का ही प्राणधारण करता है, सम्भोग के लिये अंधकारपूर्ण बिल में सोता है और नग्न रहकर लज्जा की शान्ति के लिये दूसरों के दिये हुए वस्त्र की इच्छा करता है। इस प्रकार अपनी कृपणता (कंजूसी) का विस्तार करके, वह दूसरों के लिये निधि की रक्षा करता है। सत्य है, इस संसार में लोभी को छोड़कर दूसरा कोई भी ऐसा नहीं है, जो परोपकार में अधिक पटु हो।

(कल्हण · राजतरंगिणी
तृतीय तरंग
सं० - रघुनाथ
शास्त्री)

जीवनका सर्वश्रेष्ठ समय अभी आनेवाला है जिसकी तैयारी प्रारम्भिक जीवनसे होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति । निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ।३।
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः । एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ।४।

jñeyaḥ sa nityasaṁnyāsī yo na dveṣṭi na kāṅkṣati ।
nirdvandvo hi mahābāho sukhaṁ bandhātpramucyate ॥ 3 ॥
sāṅkhyayogau pṛthagbālāḥ pravadanti na paṇḍitāḥ ।
ekamapyāsthitaḥ samyagubhayorvindate phalam ॥ 4 ॥

अक्षय तृतीया, परशुराम-जयन्ती सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३०

"अर्थी भाग्योदये जन्तुं विशन्ति शतशः स्वयं।
दिग्भ्योऽभ्युपेत्य सर्वाभ्यः सायं तरुमिवाण्डजाः॥"

जैसे सायंकाल सम्पूर्ण दिशाओं से आकर पक्षी वृक्ष पर बैठ लेते हैं, उसीतरह, भाग्योदय होने पर सैकड़ों प्रकार के धन स्वयं ही प्राणी को प्राप्त हो जाते हैं।

"स्रोतांसि प्रबलत्वमेत्य वसुधा मूलेषु पुष्णन्त्यपो,
धाराभिः पतति [illegible] हरितो वारि प्रणालीमुखैः।
इत्थं शुष्कसरः पयोदसमये संपूर्यते सर्वतो
भाग्यानामुदये विशन्ति कतमो द्वारैर्न कैः संपदः॥"

— (कल्हण-राज.-त.-गंगा
(डा. रघुनाथसिंह भाष्य)

अर्थात् वर्षात् के समय सूखे तालाब में सब ओर से पानी भरने लगता है। नीचे से प्रबल स्रोत फूटकर, उसकी वसुधा को पुष्ट करने लगते हैं, ऊपर आकाश से भी मेघों द्वारा पानी गिरता है और सम्पूर्ण दिशायें नालियों द्वारा उसमें पानी डालती हैं। इस प्रकार, जैसे वह तालाब में भर जाता है, उसी प्रकार भाग्योदय होने पर भिन्न-भिन्न सैकड़ों मार्गों द्वारा सम्पत्तियां मनुष्यों के पास आती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ।५।
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ।६।

yatsāṅkhyaiḥ prāpyate sthānaṁ tadyogairapi gamyate ।
ekaṁ sāṅkhyaṁ ca yogaṁ ca yaḥ paśyati sa paśyati ॥ 5॥
saṁnyāsastu mahābāho duḥkhamāptumayogataḥ ।
yogayukto munirbrahma nacireṇādhigacchati ॥ 6॥

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३०

" उत्पाजे पातयन्कांश्चित्पतने कांश्चिदुत्क्षिपन् ।
वेधाः कन्दलत्येव कन्दुकक्रीडित भ्रमम् ॥"

~~अर्थात् किन्हीं ऊपर उठते हुए, लोगों को नीचे गिराते हुए, मनुष्यों को ऊपर उठाता हुआ, विधाता~~

× × ×

" उत्पाजे पातयन्कांश्चित्पतने कांश्चिदुत्क्षिपन् ।
वेधाः कन्दलत्येव कन्दुक क्रीडित भ्रमम् ॥"

अर्थात् किन्हीं ऊपर उठते हुए, लोगों को नीचे गिराता और किन्हीं गिरते हुए मनुष्यों को ऊपर उठाता हुआ, विधाता कन्दुक-क्रीड़ा का भ्रम उत्पन्न करता है।

क्रूरतापूर्वक उपार्जित लक्ष्मी नश्वर होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्। स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ।२१।
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते। आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ।२२।

bāhyasparśeṣvasaktātmā vindatyātmani yatsukham ।
sa brahmayogayuktātmā sukhamakṣayamaśnute ॥ 21 ॥
ye hi saṁsparśajā bhogā duḥkhayonaya eva te ।
ādyantavantaḥ kaunteya na teṣu ramate budhaḥ ॥ 22 ॥

प्रदोषव्रत सूर्यो० ५। ११, सूर्या० ६। ३५

आज शिवालामें कालिका भगवतीके मंदिरमें मूर्तिस्थापना
का कार्य श्रीपुरके पं० रामसिंहासनके निर्देशनमें संपन्न हुआ।
मैंने सभामें प्रवचन आदि किया - [illegible] तक लोकधर्म कर्तव्य आनन्द
प्रिय के ~~तथा~~ नैतिकता एवं विनयशील के संबंधमें चर्चा की।
[illegible] तथा कुछ गाँवोंमें बीरपुर में रहने वाला [illegible]
नामवाला एक सद्गृहस्थ ब्राह्मण युवक अपने पाँच वर्षीय बालक [illegible] का
है और कहता है। पं० नमन देता है। कभी आँख को भी [illegible] है और (
कभी कुछ कहने लगता है।
सायंकाल - लखनीराम के [illegible] [illegible] के [illegible] की
[illegible] लखनी के गोदान की कीमत को कार्तिक [illegible] [illegible]
रातमें [illegible] पर [illegible] किया।
शिवालामें सीताराम के दो पुत्रों के यज्ञोपवीत संस्कार की दीक्षा
प्राप्त की।

जबतक अपनेमें राग-द्वेष हैं, तबतक तत्त्वबोध नहीं हुआ है, केवल बातें सीखी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Narayan Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्। कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ।२३।
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः। स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ।२४।

śaknotīhaiva yaḥ soḍhuṁ prākśarīravimokṣaṇāt ।
kāmakrodhodbhavaṁ vegaṁ sa yuktaḥ sa sukhī naraḥ ॥ 23 ॥
yo'ntaḥsukho'ntarārāmastathāntarjyotireva yaḥ ।
sa yogī brahmanirvāṇaṁ brahmabhūto'dhigacchati ॥ 24 ॥

नृसिंह चतुर्दशीव्रत सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।३५

आज प्रातः विनोदजी और प्रमोदजी [illegible] लहुरे गये। लहुरीमें- नंदिकाराम बलभद्र के यहाँ गये थे। बलभद्रजी के भाई ने मँगनी रस्म की।

आज काशीमें श्री[illegible] शर्मा (लक्ष्मीचन्द के बड़े भाई) के दो पुत्रों ने मँगनी (रस्म) प्राप्त की। विश्वनाथजी के [illegible] ने दर्शन किया पूजा भी किया।

वैशाख शुक्ल १५, रविवार, 14.MAY
सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।३६
पूर्णिमा, बुद्ध-जयन्ती, वैशाख-स्नान समाप्त

आज रात्रिमें राजकिशोर के यहाँ रहे और विश्राम किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ।२६।

labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ ।
chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 25 ॥
kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām ।
abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām ॥ 26 ॥

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।३७

आज सहसराम से भ्रमण मोहनिया-भभुआ (उनके)
कीर्तन-सेवकाना होते ५.३० बजे तक वाराणसी।
वापस दस बजे रात में मठ में वापस पहुँचा।

× × ×

" यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महदद्भुतम्।
राशिवर्धनमात्रं स नैव स्त्री न पुनः पुमान् ॥"
जिसके महान और अद्भुत पुरुषार्थ तथा
पराक्रम शौर्य-वीर्य को लोग चर्चा का विषय नहीं बनाते,
वह जनसंख्या की राशि बढ़ानेवाला है। न वह स्त्री
है न पुरुष।

महाभारत, उद्योगपर्व
१३३।२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ।२७।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।

sparśānkṛtvā bahirbāhyāṁścakṣuścaivāntare bhruvoḥ ।
prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau ॥ 27 ॥
yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ ।
vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ ॥ 28 ॥

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३७

"दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं यशः ।
विद्यायामर्थलाभे वा मातुरुच्चार एव सः ॥"
महाभारत उद्योगपर्व अध्याय ३.
अर्थात जिस पुत्र को दान से, तप से, अर्थ से, यश नहीं
मिला वह अपनी माँ का मलमूत्र विसर्जन है,
सन्तान नहीं।
आज फाल्गुन से. नवम्बर आक्रमण पढ़ने।
विश्राम किया।

रूप और सौन्दर्य अभ्यास करनेसे नहीं बदलते परन्तु दुर्गुण और मूर्खता बदलकर सद्गुण हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ।२९।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ।५।

bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram |
suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati ‖ 29 ‖

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३८

आज १० बजे के पूर्व भीनी वर्षा हुई, दादगाँव [illegible] [illegible] । शाम को बच्चों के अतः विश्राम किया।

"न कालः प्रियः कश्चिन्न द्वेष्यः कुरुसत्तम।
न मध्यस्थः क्वचित्कालः सर्वं कालः प्रकर्षति॥"
अर्थात् काल का न कोई प्रिय है, न काल का कोई शत्रु, न काल का कोई मध्यस्थ। काल बिना भेदभाव के, सबको खींच कर ले जाता है।
- शांति पर्व अध्याय २-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।१।
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ।२।

śrībhagavānuvāca

anāśritaḥ karmaphalaṁ kāryaṁ karma karoti yaḥ ।
sa saṁnyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ ॥ 1 ॥
yaṁ saṁnyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava ।
na hyasaṁnyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana ॥ 2 ॥

ज्येष्ठ कृष्ण ४, सं० २०५२, गुरुवार, MAY 18. 1995 सूर्यो० ५।७; सूर्या० ६।३८

प्रातः नवकलगीके कोठरेह श्रीराजेन्द्र शर्माके घर गये। उन्होंने गोपाल जीसे व्यावहारिक सदस्योंके मिलने-शाकाहार किया। पुनः रामजीके बाजार लौटे। शिवजी नन्दकुमार शर्माके यहाँ भोजन किया। रामजी-उनके प्रमोद के पौत्र के जन्मदिन तथा विशेष है। यह स्वभाव गलत तथा पाखण्डकी ओर ले जानेवाला है।

अशोचन्प्रतिकुर्वीत यदि पश्येत्पराक्रमम् ।
भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत् ।।
चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि विवर्धते ।।

— स्त्रीपर्व- श्लोक २७
अध्याय २.

अर्थात यदि मनुष्य अपने पराक्रम की ओर देखे तो बिना शोक किये ही शोक का प्रतिकार कर सकता है। दुःख की एकमात्र औषधि है कि उसके बारे में सोचना छोड़ दें। सोचने पर वह कम नहीं होता, बल्कि उल्टे बढ़ता ही है।

x x x

आप कुछ सोचना चाहें तो स्वयं को सुखी, गुणी, योग्य व ईश्वरभक्त बनानेकी बात सोचें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते। योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते।३।
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते। सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते।४।

āruruksormuneryogaṁ karma kāraṇamucyate ।
yogārūḍhasya tasyaiva śamaḥ kāraṇamucyate ॥ 3 ॥
yadā hi nendriyārtheṣu na karmasvanuṣajjate ।
sarvasaṅkalpasaṁnyāsī yogārūḍhastadocyate ॥ 4 ॥

"प्रज्ञया मानसं दुःखं, हन्याच्छारीरमौषधैः। सूर्यो० ५।७, सूर्यो० ६।३९
एतज्ज्ञानस्य सामर्थ्यं न बालैः समतामियात्॥"
अर्थात् मन के दुःख को प्रज्ञा से, शरीर के दुःख को औषधि से मारना चाहिये। यही ज्ञान का अर्थ है। मनुष्य को बच्चों की तरह विह्वल नहीं होना चाहिये।

आज भी बीजू रहे। आज पं० राम किशोर त्रिपाठी एवं पं० कैलाशपति मिश्र बीजू आये हैं। पं० हनुमान शर्मा की पोती का विवाह है। किशोरी जी के भ्रातृव्य कृष्णानन्द मिश्र के लड़के का विवाह होने जा रहा है। कल उन लोगों की रिसेप्शन होगी।

"शयानं चानुशेते तिष्ठन्तं चानुतिष्ठति।
अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृतं नरम्॥"
स्त्री० पर्व अ० २ श्लोक २२

पूर्व जन्म में जो आदमी कर्म किये रहता है, वह कर्म मनुष्य के साथ सोता है, मनुष्य के साथ उठ बैठ होता है और मनुष्य के पीछे पीछे दौड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।५।
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।६।

uddharedātmanātmānaṁ nātmānamavasādayet।
ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ ॥ 5॥
bandhurātmātmanastasya yenātmaivātmanā jitaḥ।
anātmanastu śatrutve vartetātmaiva śatruvat ॥ 6॥

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।३९

आज प्रातः [illegible] में उमाशंकर [illegible] पं. कैलाशपति मिश्र और उनके संस्था के कतिपय कार्यकर्ता लोगों से भेंट हुई। तदुपरान्त प्रमोदकुमार दीक्षित कर्णप्रयाग राम उदार सहित सभी लोग मिले। [illegible] के बाद नाव से [illegible] पहुंचा। वहां से [illegible] होकर [illegible] सन्ध्यासमय वक्ता आश्रम पर पहुंचे। [illegible] में वासुदेव शर्मा, केदारनाथ, लालबहादुर और श्रीभगवान आदि से भेंट मुलाकात हुई।

स्त्रीपर्व - अध्याय ५ श्लोक ३-५

" कश्चिन्महति संसारे वर्तमानो द्विजः किल।
वनं दुर्गमनुप्राप्तो महत्क्रव्यादसंकुलम्॥
सिंहव्याघ्रगजाकारैरतिघोरैर्महाशनैः।
समन्तात्संपरिक्षिप्तं मृत्योरपि भयप्रदम्॥
तदस्य दृष्ट्वा हृदयमुद्वेगमगमत् परम्।
अभ्युच्छ्रयश्च रोम्णां वै विक्रियाश्च परंतप॥"

ज्येष्ठ कृष्ण ७, रविवार, 21.MAY
सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः। संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्॥१३॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥१४॥

samaṁ kāyaśirogrīvaṁ dhārayannacalaṁ sthiraḥ ।
saṁprekṣya nāsikāgraṁ svaṁ diśaścānavalokayan ॥ 13॥
praśāntātmā vigatabhīrbrahmacārivrate sthitaḥ ।
manaḥ saṁyamya maccitto yukta āsīta matparaḥ ॥ 14॥

अचला एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४२

बीसी खुर्द के शिष्यों की वार्षिक पूजा का विवरण।

पाचवें वर्ष बीसी की यात्रा की। रणञ्जय पांडे जी [illegible] बीसी गया। [illegible] से सिकरौल होकर प्रमोद कुमार दीक्षित के साथ [illegible] लेकर बदलपुर पहुँचा।
बहुत पाठ हुआ। आठ में १३२ रु० [illegible] लिखा।

1. रामदयाल ठाकुर - १३२ रु०
2. रणजीत ठाकुर - २० "
3. हीरा ठाकुर ४५ "
4. पशुपति ठाकुर - ४५ "
5. इन्द्रासन ठाकुर - [illegible]० "
6. रामचन्द्र ठाकुर - १०० "
7. वृंदावन ठाकुर - ३० "
8. राधाकृष्ण ठाकुर - ५२ "
9. रामप्रताप ठाकुर - ५५ "
10. श्री नन्दजी राय शर्मा ३८५० "

सब शिष्य मिलकर २ बोरी चावल गेहूँ।

आप बचना चाहें तो दुराचारी-दुर्गुणी मित्रोंकी संगतसे बचें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः। शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ।१५।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ।१६।

yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī niyatamānasaḥ ।
śāntiṁ nirvāṇaparamāṁ matsaṁsthāmadhigacchati ॥ 15 ॥
nātyaśnatastu yogo'sti na caikāntamanaśnataḥ ।
na cātisvapnaśīlasya jāgrato naiva cārjuna ॥ 16 ॥

प्रदोषव्रत सूर्यो॰ ५।५, सूर्या॰ ६।४३

अन्नादि का वितरण
पञ्चमसिंह ठाकुर — 20 कि॰ चावल 20 कि॰ गेहूँ
हीरा ठाकुर — 20 कि॰ चावल — 20 कि॰ गेहूँ.
नथुनी राम शर्मा 20 कि॰ चावल 20 कि॰ गेहूँ.
इन्द्रासन ठाकुर — 20 कि॰ चा॰ 20 कि॰ गेहूँ
रणजीत ठाकुर — 20 कि॰ चा॰ 20 कि॰ गे॰.
रघुनाथराम ठाकुर 20 कि॰ चा॰ 20 कि॰ गे॰
रामचन्द्र ठाकुर — 20 कि॰ चा॰ 20 कि॰ गेहूँ.
रामदयाल ठाकुर — 20 कि॰ चा॰ 20 कि॰ गेहूँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।४१।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् । एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ।४२।

prāpya puṇyakṛtāṁ lokānuṣitvā śaśvatīḥ samāḥ ।
śucīnāṁ śrīmatāṁ gehe yogabhraṣṭo'bhijāyate ॥ 41 ॥
athavā yogināmeva kule bhavati dhīmatām ।
etaddhi durlabhataraṁ loke janma yadīdṛśam ॥ 42 ॥

शनिप्रदोष सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

आज प्रातः चौधरी नर्मदेश्वर [illegible] के
बीमार होने की खबर पाकर उनसे भेंट करने
गया। बीच बाजार तक वहाँ रुका।
[illegible] के डाक्टर [illegible] देखने आये थे। वे [illegible]
के प्रधानाचार्य के पुत्र हैं - डॉ. मनोज [illegible] अस्पताल
में सरकारी चिकित्सक हैं। (नये डी. [illegible])
हैं।

ज्येष्ठ शुक्ल १३, रविवार, 11.JUNE
सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust, Funding IKS-MoE Grant-2

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ।४५।
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ।४६।

prayatnādyatamānastu yogī saṁśuddhakilbiṣaḥ ।
anekajanmasaṁsiddhastato yāti parāṁ gatim ॥ 45 ॥
tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ ।
karmibhyaścādhiko yogī tasmādyogī bhavārjuna ॥ 46 ॥

पूर्णिमा

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५०

आज कानपुर से राजेश आया। किन्तु माँगा काटने और पीटने का कष्ट हुआ। रस्सी आयी।

आज का श्री नागर-विहार-मनोज के दो भावनो · अर्थात् अपने पौत्रो · मध्यप्रदेश तथा इलाहाबाद के प्रश्न के साथ आये। परस्पर-विचार हुआ। उन्हें मैंने सहयोग का आश्वासन दिया तथा मीनाक्षी के नाम का एक प्रमाणपत्र का विज्ञापन देने के लिये - इकट्ठा करने का संकेत किया। वे चाहते हैं समाचार देंगे "दिनमान" के बनने का वीतरागी एक पत्र लगेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना । श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ।४७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ।६।

yogināmapi sarveṣāṁ madgatenāntarātmanā ।
śraddhāvānbhajate yo māṁ sa me yuktatamo mataḥ ॥ 47 ॥

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज हैंडपंप आज टूटा - १० बजे के बाद, राजेश की आंख लाल होने से काम बंद हुआ। पं० रामविलास मिश्र - आये। डेढ़ घंटे तक प्रमोद तथा नारायण से इधर उधर समाचार कहते रहे।

अपराह्न नारायण १०० [illegible] का आम लेकर घर गये। प्रमोद के मामा जी आये, उनसे कुछ बातें हुईं।

उचित व्यवस्था नहीं होने से - इस वर्ष विशेष रूप से आम फल में पेड़ बहुत बर्बाद भी हुए तथा [illegible] बचा है। लोगों ने मनमाने ढंग लोग तोड़ना जैसा चाहते हैं, यह सार्वजनिक सम्पत्ति है। इसका सदुपयोग होना चाहिये। लोग कुछ खाते पीते कुछ पैसे भी इससे प्राप्त कर आश्रम के विशेष कार्यों में [illegible] आदि काम में लगें। [illegible] ऐसा विचार है।

जीवनके अन्तिम श्वास तक सत्कर्म करते रहो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः । असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ।१।

śrībhagavānuvāca

mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṁ yuñjanmadāsrayaḥ ।

asaṁśayaṁ samagraṁ māṁ yatha jñāsyasi tacchṛṇu ॥ 1॥

आषाढ़ कृष्ण ३, सं॰ २०५२, गुरुवार, JUNE 15. 1995

सूर्यो॰ ५ । २, सूर्या॰ ६ । ५१

आज बिड़लाजी के यहां गये थे, लेटे।
उनसे बात के आज बड़ा अध्याय की भावी
व्यवस्था के संबंध में बातें हुईं।
आज अधिक गर्मी से बेचैन थी।
आज केशव राम के पास ५५ काल मंगल
के लिये भेजा। प्रयोग ... भेजा - ...
को दो लिये दिया।
नई दिल्ली के श्री हरिप्रकाश ... उत्सव
के लिये ... के लिये ...
बुलाया।
श्री काशीनाथ और राजेन्द्र मिश्र जी
पचास-पचास रुपये ... दिये।
[illegible]
[illegible]

जिस प्रकारसे भी हो, मनको पापसे अलग रखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।१०।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ।११।

bījaṁ māṁ sarvabhutānāṁ viddhi pārtha sanātanam ।
buddhirbuddhimatāmasmi tejastejasvināmaham ॥ 10 ॥
balaṁ balavatāṁ cāhaṁ kāmarāgavivarjitam ।
dharmāviruddho bhūteṣu kāmo'smi bharatarṣabha ॥ 11 ॥

सूर्यो० ५ । ३, सूर्या० ६ । ५३

आज परमहंस शर्मा श्री [illegible] पहुँच. पहुँचा। उनके [illegible] श्री [illegible] [illegible], यहां [illegible] भी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्। आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्। १८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः। १९।

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam।
āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim ॥ 18॥
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate।
vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ ॥ 19॥

बाबूपुर के मर्यादित शिष्यमंडली सूर्यो॰ ५।४, सूर्या॰ ६।५३
की वार्षिक गुरुपूजा का विवरण: →

वार्षिक-पूजा ⟶ पाद पूजा

(१) श्री नारायण राय - ७५ रुपये.
(२) श्री बिहारी राय - १०० रुपये.
(३) श्री गंगाप्रसाद राय - ५१ " "
(४) श्री चन्द्रभानु राय - २५ - " "
(५) श्री शिवशङ्कर राय - २५ " "
(६) श्री सच्चिदानन्द राय - २००-०-०
(७) श्री परमहंस राय - ११११ + ५१ रु०
(८) श्री उदयनारायण राय - ३०१ + १० रु०
(९) श्री सदानन्द राय - १०० + २० रु०.
(१०) श्री विन्ध्याचल राय - ५१
(११) श्री विजय राय - ५०१-
(१२) श्री सूरत राय - } ९५१ + १० रु०
रामावतार शर्मा }
(१३) श्री शिवमूरति राय - ५१ रु०
(१४) श्री शाङ्र्गधर शर्मा - २१ रु० २०५ है
(१५) श्री वागेश्वर राय - १०१ रु० + ४५ रु०.
(१६) श्री रामनगीना राय - ५१.
(१७) श्री साहब दयाल राय - १५१ रु० + ५४ रु० एक धोती
(१८) श्री कन्हैया मिश्र — ३१ रु० एक धोती

आयु, लक्ष्मी व यश सदाचरणसे मिलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।२०।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।२१।

kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ ।
taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā ॥ 20 ॥
yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati ।
tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham ॥ 21 ॥

अमावास्या सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

(१९) श्री रामदयाल राय, श्री भानुप्रताप शर्मा } १०१ रुपये
(२०) श्री त्रिभुवन नारायण राय - २०१ रु०
(२१) श्री श्रीराम राय - २१० रुपये
(२२) श्री कपिलदेव राय - १०१ रुपये
(२३) श्री विपिन बिहारी राय - ३० + २० रु०
(२४) श्री गौरीशंकर राय - ५१ रु०
(२५) श्री भगवती शर्मा - प्रेमशंकर शर्मा - ५०१ + ७ रु०
(इनके अतिरिक्त पिछाटपी प्राप्त पूजा - १५० रु आरती में प्राप्त.)
(२६) श्री ब्रह्मदेव राय - १०१ रुपये
(२७) श्री परमहंस शर्मा · चाओ पादपूजा - ५३ रु०
(२८) श्री जयनारायण राय - २१ रु०
(२९) श्री सुदामा राय - ११ रु०
(३०) श्री रामप्रवेश राय - ३० रु०
(३१) श्री बालेश्वर राय - २१ रु०
(३२) श्री कैलाश राय - २० रु०
(३३) श्री रवीन्द्र प्रसाद राय - ३० रु०
(३४) अज्ञात पादपूजा - १० रु०
(३५) श्री भुवनेश्वर राय - २००-०-०
(३६) श्री राजवंशी राय - १००-०-०
(३७) श्री शिव जी राय - १११-०-०

मनको नीरोग रखनेके लिये गम खाओ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्।२२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।२३।

sa tayā śraddhayā yuktastasyārādhanamīhate ।
labhate ca tataḥ kāmānmayaiva vihitānhi tān ॥ 22॥
antavattu phalaṁ teṣāṁ tadbhavatyalpamedhasām ।
devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi ॥ 23॥

गुरु के शिष्य समुदाय की वार्षिक पूजा का विवरण :—→ सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

(३८) डा० सुदर्शन (सार्वजनिक) — ११ रु०

(३९) श्री राकेश मिश्र — ५१ रु०.

(४०) श्री वेंकट राय शर्मा — ५० रु०.

(४१) राकेश शर्मा एवं श्री विभूति नारायण राय के यहां घर की पादपूजा —→ ३८+२० = ५८ रु०

(४२) श्री शार्ङ्गधर शर्मा घर की पादपूजा — ११०

३८३७ रु०
अड़तीस सौ सैंतिस रुपये.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् । ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ।२८।
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ।२९।

yeṣāṁ tvantagataṁ pāpaṁ janānāṁ puṇyakarmaṇām ।
te dvandvamohanirmuktā bhajante māṁ dṛḍhavratāḥ ॥ 28 ॥
jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye ।
te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmaṁ karma cākhilam ॥ 29 ॥

सूर्यो॰ ५।५, सूर्या॰ ६।५४

"आ संसारं जगत्यस्मिन्सर्वतः ख्यातकीर्तिना ।
जनकेनैव जन्यस्य प्रसिद्धिः ख्याप्यते जनैः ॥"

'संसार की सृष्टि के समय से ही इस जगत में सर्वत्र विख्यात यशवाले पिता के द्वारा ही पुत्र की लोगों में ख्याति होती है।

कल्हण-राजतरंगिणी, तृतीय भाग — डा॰ रघुनाथ सिंह

आषाढ़ शुक्ल ४, रविवार, 2. JULY
सूर्यो॰ ५।६, सूर्या॰ ६।५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।१३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।१४।

omityekākṣaraṁ brahma vyāharanmāmanusmaran ।
yaḥ prayāti tyajandehaṁ sa yāti paramāṁ gatim ॥ 13 ॥
ananyacetāḥ satataṁ yo māṁ smarati nityaśaḥ ।
tasyāhaṁ sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ ॥ 14 ॥

व्रत-पूर्णिमा — सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४

[illegible] गये - रेलवे का मासिक पास मिला।
लौकिक [illegible] अभ्युदय के [illegible] [illegible] [illegible]।
उन्हें कार्यालय के तथा एक [illegible] [illegible] [illegible]
"गीता हृदय" की एक प्रति भेजनी होगी।
आठ बजे रात को [illegible] Express से वापस लौटे।
आज [illegible] [illegible] [illegible]। भोजन के बाद साथियों के साथ [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] किया। प्रातः प्रस्थान करना है।

दूसरेका अपमान करनेवाला स्वयं अपनी जातिका अपमान करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ।१५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ।१६।

māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam ।
nāpnuvanti mahātmānaḥ saṁsiddhiṁ paramāṁ gatāḥ ॥ 15 ॥
ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna ।
māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate ॥ 16 ॥

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा — सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५४

७.० बजे श्री मिश्र जी अपनी गाड़ी लेकर आये - स्टेशन पहुँचाया। काशी एक्सप्रेस से सब-सामान [illegible] लौटा - [illegible] अन्य सामान १०.३० बजे [illegible] शिवाला [illegible] पहुँचे।

यहाँ : राजगुरुमठ में आज यहाँ के शिष्य [illegible], [illegible] रानी [illegible]. संन्यासी [illegible] और भी बहुत से लोग थे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आदि आये [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ।१७।
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ।१८।

sahasrayugaparyantamaharyadbrahmaṇo viduḥ ।
rātriṁ yugasahasrāntāṁ te'horātravido janāḥ ॥ 17॥
avyaktādvyaktayaḥ sarvāḥ prabhavantyaharāgame ।
rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasañjñake ॥ 18॥

आज महामण्डलेश्वर जी श्री प्रज्ञानानन्द जी सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५३
दक्षिण से पधारे। अभी यहीं रहेंगे। गुरुपूर्णिमा का
उत्सव मना रहे हैं। अतः [illegible] रहे हैं। उन्होंने गुरुपूजा का
कार्यक्रम सम्पन्न किया। [illegible] २०० रुपये पूजा दिया।
शाम को पूर्णिमा पर ५००० रुपये पूजा के मिले।

नीम सर्वत्र चन्दन कहीं-कहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ।१९।
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ।२०।

bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate ।
rātryāgame'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame ॥ 19 ॥
parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ ।
yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३

अत्यावश्यक कार्य:

मेरी रचित, अप्रकाशित दो पुस्तकों का प्रकाशन सर्वाधिक आवश्यक है।
(क) भोजपुरी उपन्यास- "जिनगी के इहे राह"
(ख) स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के "मेरा जीवन संघर्ष" के आधार पर- लिखित गाथा काव्य खड़ी बोली हिन्दी में पद्यों में :- "देश की दिव्य विभूति"

कलकत्ते के सात हजार रुपये पं० रामजी पांडे द्वारा मिले थे। पाँच हजार श्री ओम पाण्डेय से लिये और दो हजार दीनानाथ पाण्डेय रामपुर से लिये। उनमें कुछ पैसे शिलापट लिखने में लगाये और कपस के "सत्संग भवन" में लगे। ये शिलापट हैं:- उनका मौलिक है- प्राचीन वत्स ऋषि कुलों में अवतीर्ण इतिहास गौरवशाली कुल उत्पत्ति, किन्हीं विभूतियाँ - इसका निवेश लिये। सीताराम के डा० चन्द्रभूषण मिश्र जी. वर्तमान में केन्द्रीय कार्यकारिणी बक्सर ने दो हजार रुपयों की मदद दी है।

इसके अतिरिक्त दो तीन पहले की प्रकाशित पुस्तकों का नवीन द्वितीय संस्करण निकालना भी आवश्यक है। प्रकाशक [illegible] मनोज [illegible] सबसे शब्द [illegible] शिष्यों और [illegible] की मदद से यह कार्य करेंगे ऐसी मेरी धारणा है।

किये हुए सुकृत संकटके समय अप्रत्याशित सहायता प्रदायक हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।२१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।२२।

avyakto'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim ।
yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama ॥ 21 ॥
puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā ।
yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamidaṁ tatam ॥ 22 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३

(1) [illegible] समिति - द्वितीय आवृत्ति - डा० कृष्णदेव उपाध्याय के संस्करण से उनके [illegible] की मदद से यह पुस्तक निकालनी चाहिये।

(2) [illegible] सैनिक एवं धर्मचारी ब्राह्मण - पुस्तक [illegible] सेवा केन्द्र के संचालक [illegible] और अपने राजगुरुमठ के न्यासी [illegible] की मदद से यह पुस्तक निकालने की योजना बनी है। यह पुस्तक [illegible] में [illegible] संस्कृत [illegible]

श्रावण कृष्ण ४, रविवार, 16.JULY सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५३

की संभावना है।

(3) "[illegible]" के संशोधित [illegible] अधिकार [illegible] को है। जो [illegible] विद्यापीठ [illegible] प्रो० [illegible] ज्योतिष [illegible] के माध्यम से निकाली होगी। [illegible] के [illegible] है। श्री [illegible] कोई बड़ी बात नहीं है।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्। तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।२५।
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते। एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः।२६।

dhūmo rātristathā kṛṣṇaḥ ṣaṇmāsā dakṣiṇāyanam ।
tatra cāndramasaṁ jyotiryogī prāpya nivartate ॥ 25॥
śuklakṛṣṇe gatī hyete jagataḥ śāśvate mate ।
ekayā yātyanāvṛttimanyayāvartate punaḥ ॥ 26॥

सूर्यो० ५।१३, सूर्या० ६।५२

आज मठ के मरम्मत का कार्यारंभ हुआ। दो बोरी सीमेंट- २५० रु०, ईंट-२०२ रुपये, बालू-५० रुपये। मजदूरी-१५० रुपये बचा-२२० रुपये फुटकर। कुल सात सौ रुपये।

अंजन माँहि निरंजन रहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन। तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन।२७।
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्। अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।२८।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः।८।

naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana।
tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavārjuna ॥ 27॥
vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva dāneṣu yatpuṇyaphalaṁ pradiṣṭam।
atyeti tatsarvamidaṁ viditvā yogī paraṁ sthānamupaiti cādyam ॥ 28॥

सूर्यो० ५।१३, सूर्या० ६।५१

आ सेना के. चौबे [illegible] भी- [illegible]
आये औ- गैराजमें रहते हैं. पूर्वांचल [illegible] का काम
करते हैं। उन्हें कोई [illegible] में पढ़ने और शोध करते हैं,
राजगुरु के पूर्वीयवासी- [illegible] आये।
२० रुपये [illegible]। २० रुपये [illegible] और
तीन रुपये- कल्याण के निमित्त [illegible] रुपये [illegible]।
आज [illegible] सपत्नीक [illegible] और- [illegible] वाले के [illegible]
पर [illegible] नहीं। [illegible] [illegible]।

नम्रताको कोई नहीं मार सकता, कपासकी रुई तलवारसे नहीं कटती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे। ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥१॥
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्। प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्॥२॥

śrībhagavānuvāca

idaṁ tu te guhyatamaṁ pravakṣyāmyanasūyave।
jñānaṁ vijñānasahitaṁ yajjñātvā mokṣyase'śubhāt ॥ 1 ॥
rājavidyā rājaguhyaṁ pavitramidamuttamam।
pratyakṣāvagamaṁ dharmyaṁ susukhaṁ kartumavyayam ॥ 2 ॥

श्रावण कृष्ण ८, सं० २०५२, गुरुवार, JULY 20. 1995 सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१

आज "धृतराष्ट्र हुए"- अर्जुनयोक्त शिक्षा राजविद्याराजगुह्ययोग लिखा।

आलस्य, अज्ञान और अश्रद्धा—ये तीनों महान् शत्रु हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।३।
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।४।

aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya paraṁtapa।
aprāpya māṁ nivartante mṛtyusaṁsāravartmani ॥ 3॥
mayā tatamidaṁ sarvaṁ jagadavyaktamūrtinā।
matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṁ teṣvavasthitaḥ ॥ 4॥

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१

आज महामण्डलेश्वर श्री अद्वैतानंद जी [illegible] के जन्मदिन पर [illegible] संन्यासी शिष्य स्वामी श्री दर्शनानंद सरस्वती और स्वामी परमब्रह्मानंद सरस्वती को उद्बोधनात्मक पत्र लिखकर भेजा।

मेरा स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिरता जा रहा है। डा० [illegible] की आयुर्वेदिक दवा [illegible] होती है पर [illegible] नहीं हो पाती। प्रमोद जी सेवा में लगे रहते हैं पर हैं बहुधंधी तथा मंद [illegible] सेवक। अतः प्रायः कार्यक्रम से व्यवधान हो जाता है।

और क्या राजगुरुमठ के अभिषेक की योजना सफल होने की चिन्ता तथा [illegible] आश्रम की [illegible] के अनुरूप [illegible] की चिन्ता रह-रह कर सताती है। भगवान [illegible] उन्हें जो स्वीकार होगा वही होगा।

आज सन्ध्या [illegible] प्रमोद कुमार - प्रयाग [illegible] सहित लौटे। [illegible] की [illegible] के माध्यम [illegible] पूजी है। उसी [illegible] उनके [illegible] होने से [illegible]।

[illegible] श्री रामगोपाल [illegible] एवं [illegible] राय शर्मा सहित [illegible] शिष्यों को उद्बोधन पत्र - साधुवाद - मंगलकामना सूचक लिखकर भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ।६।

na ca matsthāni bhūtāni paśya me yogamaiśvaram ।
bhūtabhṛnna ca bhūtastho mamātmā bhūtabhāvanaḥ ॥ 5॥
yathākāśasthito nityaṁ vāyuḥ sarvatrago mahān ।
tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya ॥ 6॥

आज कलकत्ता के भक्तिशरण जी खड्गधारी सूर्यो० ५।१५ सूर्या० ६।५०
शर्मा · सचिव, बदरी आश्रम न्यास समिति का पत्र लिखकर
कुछ जानकारी दिया · आश्रम की व्यवस्था के संबंध में।
दूसरा पत्र · चौधरी नरेन्द्र राय - मंगलवं को अपने कुशलक्षेम
उद्बोधन · सान्त्वना तथा चौधरी चाचा मंगलम के [illegible] के
की संशोधित सूची के संबंध में लिखा और सूची मांगा।
उन्हें, छोटे गये श्रीकालिका का चित्र भी लिख भेजा।
मेरी जेब घड़ी जिसमें खोदी गयी थी · वह भी आ गयी। जीप
सदैव लौंगा। अखिल कुमार मुन्ना को पत्र लिखूंगा।
पेंशन के खाते से कुछ पैसे मांगवाऊंगा। समाचार भी मिलेगा।
आज रिमझिम पं० रमाशंकर शर्मा आचार्य को पत्र लिखा।
संस्कृत विद्यालय, समय ही के बारे।
देवी जी के उद्बोधन शर्मा जी लिखके। ज्योतिष में उत्तीर्ण
होने की सूचना लेके आये हैं।

श्रावण कृष्ण ११, रविवार, 23.JULY
सूर्यो० ५।१५ सूर्या० ६।५०
कामदा एकादशीव्रत

आज १० बजे रात को श्री कृष्ण के केशवराम जी एवं
प्रद्युम्न राम सपरिवार आये · सावन के लोकवार को विश्वनाथ
जी के दर्शनार्थ। साथ में कुछ और लोग आये। इसके पूर्व
कमला कान्त शर्मा गाजीपुर के · मेरे भाई के एक सम्बन्धी [illegible] के साथ
गौरीपुर गाजीपुर से आये। [illegible] कल [illegible] के बाद
लौटेंगे। आज दिन में १० बजे [illegible] डा० विजय [illegible]
विद्यार्थी के यहां गये · निदान [illegible] दवा [illegible]।
प्रमोद की दवा भी ली जाना आरम्भ हुआ।
मेरी दवा बहुत दिनों की २२ रु० की · प्रमोद की दवा भी
एक महीने की ली गई कुल ३० रु० लगे दवा के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः। भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्।८।

sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṁ yānti māmikām ।
kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham ॥ 7॥
prakṛtiṁ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ ।
bhūtagrāmamimaṁ kṛtsnamavaśaṁ prakṛtervaśāt ॥ 8॥

सोमप्रदोष सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९

आज प्रातः से दवा शुरू की है। मध्याह्न सिमरी के गोपाल पांडे भी चन्द्रदीप पाण्डेय के भाई लकड़ीवाड़े के पौत्र हैं। मेरे शिष्य हैं आये मिले। ईश्वरदयाल [illegible] राधेश्याम चौधरी सब को [illegible] किया। गोपालजी की पूजा में उनका हिसाब नहीं जान कर [illegible] के प्रभाव से राधेश्याम को [illegible] दिया। राधेश्याम ने बहुत [illegible] के लड़के हुए हैं। [illegible] कोई भेद या [illegible] नहीं। राधेश्याम मेरे यहाँ आते जाते नहीं। रामदयाल [illegible] स्वामी और जगदीश पौ० नवदेश्वर शास्त्री को पत्र लिखा। [illegible] को। ये पत्र डाक में छोड़ गये।

प्रमोद की कन्या का नाम स्कूल में लिखाया। [illegible]। पत्र [illegible] वाले को - १६०० सोलह सौ रुपये - [illegible] - देवा श्री दिव्य विभूति के मद से दिये गये। शेष पीछे दिये जायेंगे।

आज बैंक में १२०० रुपये पूजा खाते के जमा किये गये।

आज दिल्ली श्री त्रिपुरारी राय- सं० अध्यक्ष, स्वामी सहजानंद सरस्वती स्मारक समाज को [illegible] पत्र लिखा। पत्रकारिता के संबंध में। केन्द्रीय कारागार [illegible] के अधीक्षक डा० चन्द्रेश्वर मिश्र को पत्र केशवराम द्वारा भेजा। आचार्य [illegible] शर्मा [illegible] को भी केशवराम द्वारा पत्र भेजा।

स्वार्थ जीवनका भयानक मानसिक रोग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।१०।

na ca māṁ tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya।
udāsīnavadāsīnamasaktaṁ teṣu karmasu॥ 9॥
mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram।
hetunānena kaunteya jagadviparivartate॥ 10॥

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९

आज डा० स्वामीनाथ त्रिपाठी वकील होके आये। दो घंटों तक रुककर स्वामीजी के संबंध में. मैंने यहां संग्रहीत कुछ प्रकरणें पढ़ेंगे।

कर्कश वाणीसे कलहका जन्म होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ।१३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ।१४।

mahātmānastu mām pārtha daivīm prakṛtimāśritāḥ ।
bhajantyananyamanaso jñātvā bhūtādimavyayam ॥ 13 ॥
satatam kīrtayanto mām yatantaśca dṛḍhavratāḥ ।
namasyantaśca mām bhaktyā nityayuktā upāsate ॥ 14 ॥

अमावास्या सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।४८

आज प्रमोदकुमार दीक्षित - डा० स्वामीनाथ तिवारी के शोध-प्रबन्ध गये। नागेश्वर तिवारी ने वस्तुतः मठ की कल्पना में सहायता की।

मैंने [illegible] की ओर से भा०ज०पा० की मांग [illegible] राजनीति को लेकर तेजनारायण यादव के विरुद्ध भा०ज० पा० के उम्मीदवार के रूप में डा० स्वामीनाथ तिवारी को खड़ा करते हुए। [illegible] विवेकानन्द [illegible] पं० कैलाशपति मिश्र को लिख भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Trust. Funding: IKS-MoE-Gita-2

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च। अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ।१९।
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते। ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ।२०।

tapāmyahamahaṁ varṣaṁ nigṛhṇāmyutsṛjāmi ca ।
amṛtaṁ caiva mṛtyuśca sadasaccāhamarjuna ॥ 19 ॥
traividyā māṁ somapāḥ pūtapāpā yajñairiṣṭvā svargatiṁ prārthayante ।
te puṇyamāsādya surendralokamaśnanti divyāndivi devabhogān ॥ 20 ॥

आज॰ सहायक डा॰ अमितकुमार (अंग्रेजी) सूर्यो॰ ५।१९, सूर्या॰ ६।४५
उज्जैन, श्री शिक्षोपनिदेशक पं॰ दयानिधि त्रिपाठी जी के साथ
राजगुरुमठ में आये। उनसे प्रदर्शिका समस्त श्री पाठक के लिए
लेखन तथा सहानुभूति सहयोग देने के कुछ पहलुओं पर
देर तक विचार-विमर्श होता रहा। त्रिपाठीजी ने अपनी
पत्रिका का एक वर्तमान अंक मुझे दिया। मैंने उन्हें श्रीरामायण
भौमिकी तथा कुछ और सामग्री उन्हें दिया। अपना
चित्र भी उनके मांगने पर दिया।

इसी समय सिंगी हावड़ा के श्री कैलाशनाथ पाण्डेय
आ पहुँचे। उनसे त्रिपाठीजी से भी संपर्क तथा बातें हुईं।
बाद में श्री कैलाशनाथ पाण्डेय से नरेन्द्र पांडे और उनके
उद्दण्ड लड़कों के कुकृत्यों पर विचार-विमर्श होता रहा।
विशेषतः डा॰ स्वामीनाथ त्रिपाठी के कुमारी-विरोध,
तथा उसके बाद भी उनका पारिवारिक पर चिन्तन होता रहा।
कैलाश पाण्डेय नरेन्द्र पांडे और उनके दूषित व्यवहार से
बहुत दुःखी और क्षुब्ध हैं।
उनसे राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार तथा भावी अतिथि-भवन के
निर्माण के प्रश्न पर भी बातें होती रहीं। मैंने उन्हें
न्यास-समिति का मुद्रित-प्रकाशित अपील वाली पुस्तिका की
कुछ प्रतियाँ भी दीं। उन्होंने सहायता करने तथा कराने का
भी आश्वासन दिया।
कल्याण से श्रीमद्भागवत के प्रथम खण्ड का सम्पूर्ण भाग आये
हैं। अभी कुछ ही पृष्ठ पढ़े।

धर्मसे प्रमाद नहीं करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति। एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते।२१।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।२२।

te taṁ bhuktvā svargalokaṁ viśālaṁ kṣīṇe puṇye martyalokaṁ viśanti।
evaṁ trayīdharmamanuprapannā gatāgataṁ kāmakāmā labhante ॥ 21 ॥
ananyāścintayanto māṁ ye janāḥ paryupāsate।
teṣāṁ nityābhiyuktānāṁ yogakṣemaṁ vahāmyaham ॥ 22 ॥

नागपञ्चमी सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४५

श्री उमेशानन्द शर्मा- सेक्टर- फिरोजाबाद के पुत्र- कार्पोरेट इन्स्पे
ने उन्नकी कोर्ट से ५०० आठ सौ रुपये मेरे पास भेजने को
स्नानार्थ और औषधि के सहायतार्थ दिया।

वीरपुर के और सज्जन - व्रजबिहारी शर्मा- वीरपुर के
साथ आये- वे अभी वृद्धावस्था में अव्यवस्था रह रहे हैं, वे
समाज के पुरोहित हैं। ३० अगस्त की बैठक के लिये उन्हें भी
निमंत्रित करना होगा- वे कहते हैं कि उन्हें भी बुलाया
जाय।

कल्हण- राजतरंगिणी - 'हर्ष' सप्तम अध्या० ११०५/१११०

" मृगीदृशां दुर्लभतां हयानां श्वासान्विटानां कुवचः सहत्वम्।
वैतालिकानां च विकत्थनत्वं क्रतुं क्षितीशाः क्षपयन्ति लक्ष्मीम्"॥
अ०- मृगनैनी स्त्रियों की दुर्लभता, अश्वों के श्वासों एवं विटों के
कुवचनों की सहनशीलता और वैतालिकों की मिथ्याप्रशंसा का क्रम
करने में राजागण लक्ष्मी का नाश करते हैं। (११०५) श्लोक
" कोपप्रसादे वनिताजनस्य इत्यादिवृत्तान्त गवेषणेन।
भृत्यानुवृत्या मृगयाकथाभी राज्ञां शिशूनामिव याति कालः"॥
स्त्रीजन के कोप एवं प्रसादन में, अश्वादि के वृतान्त गवेषणा में,
सेवकों के चित्तानुगमन में, मृगया सम्बन्धी कथाओं में, शिशुओं के
सदृश सुनने में, राजाओं का समय व्यतीत होता है। (१११०) श्लोक

काम ज्ञानको हरण करके पापमें प्रवृत्त करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्।२३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च। न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते।२४।

ye'pyanyadevatā bhaktā yajante śraddhayānvitāḥ ।
te'pi māmeva kaunteya yajantyavidhipūrvakam ॥ 23॥
ahaṁ hi sarvayajñānāṁ bhoktā ca prabhureva ca ।
na tu māmabhijānanti tattvenātaścyavanti te ॥ 24॥

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४४

" अमानुषत्वं पृथ्वीपा राजा स्तुतिभिः स्वस्य विचिन्त्य सम्यक्
तृतीयमक्षमधिकं भुजौ वा मत्वा न विदन्ति मृत्युम्"॥
राजा लोग विटों की मिथ्या प्रशस्तियों के कारण अपने को वस्तुतः देवता समझकर, मुझमें तृतीयनेत्र (शंकर) अथवा दो भुजा अधिक (विष्णु) है, ऐसा (समझ) मानकर, मृत्यु की परवाह नहीं करते (श्लो० ११९२)

" निशासु येषां प्रभवन्ति दारा दिनेष्वमात्या नियताधिकाराः।
अहो भ्रमः स्वस्य पदम् तेऽपि विदन्ति भूपा प्रभविष्णुभावम्॥
(श्लो० ११९३)
जिनके ऊपर रात्रि में स्त्रियों का, दिन में अधिकृत मन्त्रियों का अधिकार होता है, आश्चर्यजनक भ्रम है कि वे राजा भी इस विषय में अपने को प्रभविष्णुता (सर्वाधिकार) मानते हैं।

" स्वाङ्गुलिना स्वादुतयैव भुङ्क्ते [redacted] फुल्लम् -
विलासिनीस्तनसमुपैत्यकस्मात् -, मुञ्चन्त्यपि फुत्कृतानि।
स्वादिष्ट को स्वादपूर्वक खाता है, "भूमिभुजः बालस्य समानभावः"॥
मसाले किये भोजन　　अनेक बार थूकता है, — { १११४ रा० त०
अकस्मात् भग्न हो जाता है।　　कल्हण - संस्कृता
इस प्रकार राजा और शिशु का स्वभाव एक समान होता है।

विनोद पर हमेशा विवेकका अंकुश होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ।३१।
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ।३२।

kṣipraṁ bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṁ nigacchati ।
kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati ॥ 31 ॥
māṁ hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ ।
striyo vaiśyāstathā śūdrāste'pi yānti parāṁ gatim ॥ 32 ॥

पुत्रदा एकादशीव्रत सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।४१

आज एकादशी है। [illegible]
सन्ध्या की भोजन के लिये प्रोविजन की मांग करते
रातको है। कल आमी और से भोजन होगा।

आवश्यकतासे अधिक धनसंग्रह करनेका मोह त्याग दीजिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा। अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।३३।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।३४।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः। ९।

kim punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā।
anityamasukhaṁ lokamimaṁ prāpya bhajasva mām ॥ 33॥
manmanā bhava madbhakto madyājī māṁ namaskuru।
māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṁ matparāyaṇaḥ ॥ 34॥

भौमप्रदोष — सूर्यो० ५। २४, सूर्या० ६। ४०

आज विक्रमादित्य रायकी ओरसे भोजनवन्धे
३५४ रुपये की मदद दी गयी है। आज मालूम हुआ कि
शिवकुण्ड-झंगौर के पं. कमलेश्वर शर्मा के पूर्वज और दोनों की
पुत्रि उन्हीं के - रघुवीर मोहन क्योंकि रामदत्त के पूर्वपुरुष
राजमल मिश्र को ग्राम झंगौर-शिवकुंड की ओर गये थे।
मैं पंडित कमलेश्वर शर्मा के वंशजों में से सबको मिलके दोनों
परिवारों के संयोजन - मेल-मिलाप - आदान-प्रदान सम्बन्ध जोड़ने
का कार्य करूंगा।

आज सायंकाल रामदत्त शर्मा घूमने के हुए
मेरे घर के भीतर बाहर उजियार होते यहां आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ।१।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ।२।

śrībhagavānuvāca
bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṁ vacaḥ।
yatte'haṁ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā ॥ 1 ॥
na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṁ na maharṣayaḥ।
ahamādirhi devānāṁ maharṣīṇāṁ ca sarvaśaḥ ॥ 2 ॥

श्रावण शुक्ल १४, सं० २०५२, बुधवार, AUG. 9. 1995

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।४०

आज सिगरी के श्री शिवपूजन शास्त्री - व.कुलाइपंडी को पत्र लिखकर २० अगस्त की बैठक में भाग लेने के लिये बुलाया।
प्रो० मार्कण्डेय - पो० आर्दी - ब्रह्मविद्या - प० कमल. बैं शिवपूजन शास्त्री के भाई. श्री [illegible] पाण्डेय को भी पत्र लिख भेजा।

जो मनचाहा बोलता है उसे अनचाहा सुनना पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्। असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।३।
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः। सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च।४।

yo māmajamanādiṁ ca vetti lokamaheśvaram ।
asaṁmūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate ॥ 3॥
buddhirjñānamasaṁmohaḥ kṣamā satyaṁ damaḥ śamaḥ ।
sukhaṁ duḥkhaṁ bhavo'bhāvo bhayaṁ cābhayameva ca ॥ 4॥

पूर्णिमा, श्रावणीकर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), रक्षाबन्धन   सूर्यो॰ ५।२५, सूर्या॰ ६।३९

"किं पाताल तमो न हन्ति हिमगुः किं नो पिबं भीतये
पानीयं गिलनः किमान्तरशिखिध्वस्त्यै न धन्वन्तरिः।
सर्वेऽनेक पदे प्रयात्यफलतां [redacted]
सिद्धेर्दैवनिदेयतां वाच्यो जडो जम्बुधिः
विमृशतां सुलभैव वस्तुज्ञता॥
—कल्हण राजतरंगिणी-७-१३८०॥

क्या चन्द्रमा पाताल के अन्धकार का नाश नहीं करता है?
क्या जलमात्र को निगलजानेवाले सागर के लिये हलाहल विष
भयकारक नहीं है? क्या उसके भीतर के बड़वानल का नाश करने
के लिये धन्वन्तरि नहीं विद्यमान हैं! किन्तु सब कुछ सहसा
निष्फल हो जाता है। इसके लिये जड़समुद्र को दोष देना
उचित नहीं है। सिद्धि दैव (भाग्य) के अधीन है। ऐसा
विचार करनेवालों लोगों की दृष्टि में वस्तुज्ञता सुलभ ही है।

" गर्भवास इव पौरुषे स्फुरन्किं न कर्म पुरुषश्चिकीर्षति।
कर्मवायुरिव संस्पृशन्मूढमेव कुरुते तु तं विधिः॥"
कल्हण-राज॰ ॥ ७॰ १६५२॥

गर्भस्थ जीव सदृश मनुष्य पौरुष में आकर, क्या कर्म
नहीं कर डालना चाहता है? किन्तु वाहर आये जीव को कर्म
वायु के समान उसे भाग्य मूढ़ बना देता है।

पाप पहले मनमें आता है, फिर वाणीमें और उसके बाद आचरणमें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः। भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।५।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा। मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।६।

ahiṁsā samatā tuṣṭistapo dānaṁ yaśo'yaśaḥ ।
bhavanti bhāvā bhūtānāṁ matta eva pṛthagvidhāḥ ॥ 5॥
maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā ।
madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ ॥ 6॥

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।३८

आज गैस-बुकिंग का दूसरा सिलिण्डर प्राप्त होकर आ गया।
उसके ६०० रुपये जमा किये गये। वेतन इससे खर्च हो गया।
बड़ी कठिनाई है। दवा दारू के भी पैसे नहीं रहे। [illegible] हो [illegible]।
उसे बनाना आवश्यक था। ज्योतिष [illegible] ने आवरण बनाया,
श्री [illegible] से लंबी वार्ता और पत्रकारिता के सम्बन्ध विचार विमर्श
हुआ। अखबार वालों के पैसे दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ।७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ।८।

etāṁ vibhūtiṁ yogaṁ ca mama yo vetti tattvataḥ।
so'vikampena yogena yujyate nātra saṁśayaḥ ॥ 7॥
ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate।
iti matvā bhajante māṁ budhā bhāvasamanvitāḥ ॥ 8॥

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३७

आज जयराम को ६० रुपये मजदूरी दी गयी। हीरालाल जी [illegible] से आये। आज [illegible] ६० स्वामी [illegible] तिवारी और [illegible] को पत्र लिखे गये।

भाद्रपद कृष्ण ३, रविवार, 13.AUG.
सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३६
कज्जली तृतीया, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत,
बहुलाव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्ता मद्‌गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च। ९।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।१०।

maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam ।
kathayantaśca māṁ nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca ॥ 9 ॥
teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam ।
dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te ॥ 10 ॥

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३५

राज · कृष्ण गोपाल - [illegible]
"पाणिनिकालीन भारत" [illegible] के लिये लगाये। वे पैसे [illegible]
"वेदमालस." [illegible] का [illegible] विशेषांक लगाये। [illegible]
लिये आज [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] उतारे गये।
आज [illegible] में [illegible] [illegible]
[illegible] - [illegible] [illegible] गये हैं [illegible] [illegible]
[illegible] भी जायेंगे।
[illegible] के [illegible] किराये। बदलना पड़ेगा।
[illegible] के [illegible] होगा। [illegible] २१ ता. को होगा।
१५० [illegible] लगेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः। नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ।११।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्। पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ।१२।

teṣāmevānukampārthamahamajñānajaṁ tamaḥ ।
nāśayāmyātmabhāvastho jñānadīpena bhāsvatā ॥ 11 ॥
arjuna uvāca
paraṁ brahma paraṁ dhāma pavitraṁ paramaṁ bhavān ।
puruṣaṁ śāśvataṁ divyamādidevamajaṁ vibhum ॥ 12 ॥

चन्द्रषष्ठीव्रत, स्वतन्त्रतादिवस सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३४

आज डा० रामनन्दन शर्मा रात में ही सहसा आ पहुँचे। प्रात: अपने कार्यक्रम में चले गये पूजा आदि के निमित्त।
अपराह्न पौने पाँच बजे आये। भोजन किया और चले गये। उन्होंने २० अगस्त की बैठक में पहुँचने का विशेष आग्रह किया - प्रार्थनापूर्वक कहा। आश्वासन दिया उन्होंने पर स्पष्ट नहीं कहा। कोई कार्यक्रम नहीं होगा तो अवश्य आऊँगा कहा।
श्री स्वदेश [illegible] शिव [illegible] उनकी पत्नी आयी। सत्संग होता रहा। ५० रुपये पूजा दिया आज लोगों ने।

आज सायंकाल कृष्ण किशोर राय गाजीपुर वाले से कुछ बातें हुईं। वे बड़े अनुभवी [illegible] हैं। मैं प्रेमवश उन्हें [illegible] बुलाता हूँ। [illegible] तक [illegible] [illegible] रहकर भी अपनी [illegible] की [illegible] बातें करते हैं। [illegible] को [illegible] से [illegible] उपस्थित [illegible] मेरा [illegible] [illegible] अपनी [illegible] की अनीति, [illegible] को [illegible] आदि भूल गये। यह [illegible] और [illegible] [illegible] सामाजिक [illegible] [illegible]।

देनेसे पानेका रास्ता खुलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ।१३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव। न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ।१४।

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā ।
asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me ॥ 13॥
sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava ।
na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ ॥ 14॥

हलषष्ठी (ललहीछठ) सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३३

[illegible] सोया। मदोहरी से आये। [illegible] की सेवकी। [illegible] करते रहे। [illegible] रही। रात में बुखार और [illegible]।
[illegible] का [illegible] कर रहे हैं। बच्चों को [illegible]। [illegible]।

जिस संसार में रहकर शोक होता है यह सारी सृष्टि जड़ और चेतन दो ही पदार्थों की है। जो जड़ है उसे निश्चित ही कभी न कभी विनष्ट होना है। कभी न कभी उसका वियोग होना ही है। जो चेतन है वह अविनाशी है। हम अज्ञानवश जड़ में चेतन का भाव कर बैठते हैं और यही तब शोक का कारण है।

जो भक्त हैं उनकी दृष्टि में जड़-चेतन सभी पदार्थ, अपना शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रिय, सम्पत्ति, परिवार, मान, ऐश्वर्य आदि सब कुछ ईश्वर का है। ईश्वर जब चाहे अपनी चीज वापस ले ले। एक से लेकर दूसरे को दे दे। एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर दे। इसमें शोक की क्या बात है।

स्वामी अपनी सम्पत्ति एक गोदाम से दूसरे गोदाम में, एक बैंक से दूसरे बैंक में, एक आफिस से दूसरे आफिस में स्थानान्तरण कर दे या खर्च कर दे तो [illegible] सेवक के लिए शोक का कोई कारण नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।१५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।१६।

svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama।
bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate॥ 15॥
vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ।
yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi॥ 16॥

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (स्मार्त) सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि ईश्वर हमें अभीष्ट की प्राप्ति कराकर संकेत करते हैं कि बुरे कर्मों से बचो। बुरे कर्म करते रहे तो ऐसे ही अभीष्ट झेलते रहना पड़ेगा।

यह भी सही है कि आनेवाले संकट हमें वास्तविक बनाते हैं। सच्ची भक्ति बढ़ाते हैं, शुद्ध आचरण करते हैं और नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं। फलतः प्रसुप्त आस्तिकता उनकी बीमारी से निकल उठता है। वास्तव में अभीष्ट की प्राप्ति में, इष्ट की प्राप्ति सन्निहित रहती है, आवश्यकता है उसके पहचानने की दृष्टि की। अभीष्ट हमें ईश्वर के निकट ला खड़ा करता है। जब चारों ओर गहन अंधकार छा जाता है, कष्ट के बादल घेर लेते हैं तो आशा की किरण फूटती है। किरण कभी नहीं आती। आत्मा और परमात्मा का, भक्त और भगवान का अविच्छिन्न सम्बन्ध निकट हो जाता है।

यही तो जीवन का लक्ष्य इष्ट है।

इसी प्रकार कर्मयोगी को शोक नहीं होता। वे जो भी कर्म करते हैं, ईश्वर की पूजा समझकर करते हैं। सच्चे कर्मयोगियों को सफलता-असफलता से कुछ भी लेना-देना नहीं होता। उनके कर्म ईश्वरार्पित होते हैं। न कर्म में और न कर्मफल में उनकी कोई आसक्ति होती है।

जीवन ईश्वर का वरदान है। इसमें अपनी असावधानी और अज्ञान के कारण शोक का विष घोलने का हमें कोई अधिकार नहीं।

नाम चिन्तनसे जन्म, जरा, भय और व्याधि छूट जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच
हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः। प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ।१९।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ।२०।

śrībhagavānuvāca
hanta te kathayiṣyāmi divyā hyātmavibhūtayaḥ ।
prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me ॥ 19॥
ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ ।
ahamādiśca madhyaṁ ca bhūtānāmanta eva ca ॥ 20॥

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३१

व्यास कर्मवादी आचार्य हैं। कर्म ही मनुष्य का सच्चा लक्षण है। कर्म से पराङ्मुख व्यक्ति मानव की पदवी से सदा वंचित रहता है। महाभारत की यह पंक्ति महाभारत का यह वाक्य:—

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि
नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्। (शान्तिपर्व- १८०-१२)

यह इंगित करता है कि मानवता का उच्चात्मक तत्त्व पुरुषार्थ है। इसी को महाभारतकार ने प्रतिपादित किया है। जगत् में जिन लोगों के पास हाथ हैं और इनमें कर्म करने का उत्साह है उनके सब अर्थ सिद्ध होते हैं:-

।। अहो सिद्धार्थता तेषां येषां सन्तीह पाणयः।
अतीव स्पृहये तेषां येषां सन्तीह पाणयः।। (शां० पर्व- १८०।११)

भाद्रपद कृष्ण १०, रविवार, 20.AUG.
सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ।२३।
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ।२४।

rudrāṇāṁ śaṅkaraścāsmi vitteśo yakṣarakṣasām ।
vasūnāṁ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham ॥ 23 ॥
purodhasāṁ ca mukhyaṁ māṁ viddhi pārtha bṛhaspatim ।
senānīnāmahaṁ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ ॥ 24 ॥

सूर्यो॰ ५।३०, सूर्या॰ ६।२८

"गन्धशरीरविच्छेदादपि भस्मावशेषताम्।
कर्पूरः सौरभेणैव जन्तुः ख्यात्यानुमीयते ॥"

'जैसे भस्म हुआ कपूर अपनी सुगन्ध से जाना जाता या अनुमित होता है, उसीप्रकार प्राणी शरीर के टूक-टूक होकर भस्मावशेषता को प्राप्त होने पर भी, अपनी ख्याति से ही जाना या पहचाना जाता है।'(कल्हण-राज॰ ७।१४३४)

ख्यातिसंरक्षणं नाम जन्तोः कल्पान्तरस्थितिः।
वर्तन्ते कीर्तिकायस्य सम्पूर्णाः परमाणवः ॥ कल्हण-रा॰ ७/१४३७॥

अर्थात् जीव के लिये ख्याति की रक्षा करना ही कल्पान्तर पर्यन्त अपनी स्थिति को कायम रखना है। उसके कीर्तिमय शरीर को बनाये रखने में सम्पूर्ण परमाणु जुटे रहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्।२७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः।२८।

uccaiḥśravasamaśvānāṁ viddhi māmamṛtodbhavam।
airāvataṁ gajendrāṇāṁ narāṇāṁ ca narādhipam ॥ 27॥
āyudhānāmahaṁ vajraṁ dhenūnāmasmi kāmadhuk।
prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ ॥ 28॥

सूर्यो० ५। ३१, सूर्या० ६। २६

सहसा आज मेजा तहसील, भरवीपुर. गावं के कृष्णवत्सगोत्रीय ब्राह्मण 'मिश्र' आस्पदधारी सपत्नीक आ पहुंचे। राजगुरुमठ एवं मेरा पता लगाकर। ये दीक्षा ग्रहण करने तथा अपनी गुरुपरम्परा को पूर्ववत प्रवर्तित करते रहने की इच्छा से आये हैं। चार पुरुष दो स्त्रियां हैं। उन्हें आसन-सम्मान किया गया।

थोड़ी-थोड़ी देरमें कहते रहो—हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्। पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्।२९।
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्। मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्।३०।

anantaścāsmi nāgānāṁ varuṇo yādasāmaham ।
pitṝṇāmaryamā cāsmi yamaḥ saṁyamatāmaham ॥ 29 ॥
prahlādaścāsmi daityānāṁ kālaḥ kalayatāmaham ।
mṛgāṇāṁ ca mṛgendro'haṁ vainateyaśca pakṣiṇāṁ ॥ 30 ॥

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२५

आज पतनीपुर के श्री ब्राह्मण-ब्राह्मणी शंभुनाथ मिश्र सपत्नीक हरिप्रसाद मिश्र, रमाशंकर मिश्र सपत्नीक, भू०पू० प्रधानाध्यापक चन्द्रभाल प्रसाद मिश्र उर्फ बाबूजी - ने पूर्ण सम्मान और विधिवत दीक्षा ली। अन्न-वस्त्र-दान-दक्षिणा आदि सहित समग्र मठवासियों को पूआ खिलाकर पूड़ी। सबके भोजनोपरान्त तथा जाते समय भी दक्षिणा देते गये। आदरपूर्वक पतनीपुर आने के लिये आमंत्रित भी किया।

आज अपराह्न डा० आनंद शर्मा के यहाँ जाकर, प्रभुनारायण सिंह एवं श्री सतीश नारायण सिंह शिष्य-महाराज के साथ अपनी नेत्र परीक्षा कराया। डाक्टर को ब्राह्मणकाल और 'गीताहृदय' की प्रति भेंट की। उन्होंने दूसरे दिन के लिये पुनः बुलाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् । झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ।३१।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन । अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ।३२।

pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham ।
jhaṣāṇāṁ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī ॥ 31 ॥
sargāṇāmādirantaśca madhyaṁ caivāhamarjuna ।
adhyātmavidyā vidyānāṁ vādaḥ pravadatāmaham ॥ 32 ॥

कुशोत्पाटिनी-अमावास्या सूर्यो० ५ । ३२, सूर्या० ६ । २४

आज पुनः डा० आनंद शर्मा के यहां पूर्वाह्न १२ बजे गये। उन्होंने लाकर जांच की। किसी प्रकार की दवा खाने को मना किया। चश्मा का नंबर लिख दिया और एक सप्ताह बाद बुलाया। मठ में लौटने पर [illegible] के पं० राजनारायण शर्मा का ५५१ रुपये का मनीआर्डर - मठ मालिक के नाम में आया।

भाद्रपद शुक्ल १, रविवार, 27.AUG.
सूर्यो० ५ । ३३, सूर्या० ६ । २३

आज प्रमोद [illegible] संतोषकुमार और देवी - औरंगाबाद, [illegible] - डा० सुभाषसिंह और 'हरदीहा' विद्यालय के किसी संबंधित शिक्षक के मिलने के बाद ग्यारह बजे आये।
अनन्तर, नगर प्राधिकरण के अभियंता के प्रेषित नक्शा बनाने वाले कोई सिपाही आये। [illegible] निरीक्षण किया। नक्शा पुराना - अभियंता को [illegible] सौंप पहले ही दिया जा चुका है। ५०० रुपये (पारिश्रमिक) [illegible] रूप में दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च। अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ।३३।
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्। कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ।३४।

akṣarāṇāmakāro'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca ।
ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṁ viśvatomukhaḥ ॥ 33 ॥
mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhaviṣyatām ।
kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṁ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā ॥ 34 ॥

आज डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी जी को सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२२
उनके राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित होने के उपलक्ष में उन्हें धन्यवाद सूचक
पत्र लिखकर भेज दिया।

अपराह्न डा० तिवारी का पत्र डाक में छोड़ा गया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।३५।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ।३६।

bṛhatsāma tathā sāmnāṁ gāyatrī chandasāmaham ।
māsānāṁ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṁ kusumākaraḥ ॥ 35 ॥
dyūtaṁ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham ।
jayo'smi vyavasāyo'smi sattvaṁ sattvavatāmaham ॥ 36 ॥

हरितालिकाव्रत, (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध)　　सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२१
श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज श्रीराजेन्द्र [illegible] शर्मा - पिपलानी - अपने निवास सहसरांव गये। ५५ दिनों के बाद [illegible] आयेंगे। वे "शास्त्रक यौगिक एवं धर्मार्थ ब्राह्मण" पुस्तक के प्रकाशनार्थ में दो हजार रुपये दे गये। उन्होंने कहा कि पत्थर लिखने में लगावें या पुस्तक में आपकी इच्छा। मैं पत्थर के पैसे [illegible] पुस्तक के [illegible] दूंगा तथा। पुस्तक [illegible] में [illegible] लगाऊं [illegible] पुस्तक प्रकाशित करूंगा। ५० रुपये [illegible] के [illegible] दे गये। [illegible] में [illegible] श्री जगमोहन राय जी आये। वे [illegible] एक हजार रुपये दे गये। शिलापट्ट पर नाम [illegible] वालों में [illegible]

आज डा० पी० एन० सिंह प्रातः ही [illegible] के लिये। उन्होंने डा० चन्द्रशेखर मिश्र जी [illegible] - [illegible] के लिये [illegible] में एक [illegible] का [illegible] जो [illegible] को [illegible]। [illegible] और [illegible] है। आज उन्हें [illegible] से [illegible] होगी।

[illegible] ग्यारह हजार रुपये आज [illegible] - [illegible] समिति के [illegible] गये।

कुछ [illegible] होने पर [illegible] आ गये। [illegible] अतः केवल ५० रुपये मात्र [illegible] को देने पड़े।

सन्त-महापुरुषोंके सिद्धान्तके अनुसार अपना जीवन बनाना ही उनकी सच्ची सेवा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः । मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ।३७।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् । मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ।३८।

vṛṣṇīnāṁ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṁ dhanañjayaḥ ।
munīnāmapyahaṁ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kaviḥ ॥ 37 ॥
daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām ।
maunaṁ caivāsmi guhyānāṁ jñānaṁ jñānavatāmaham ॥ 38 ॥

ऋषिपञ्चमीव्रत सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२०

आज एक ड्राफ्ट भेजे 'शिलापट्ट' लिखनेवाले को दिए गए।
तथा एक ड्राफ्ट भेजे "शाहक-श्री भिक्षु एवं प्रकीर्णक पुस्तक के
प्रकाशनार्थ - मेरे मित्र खाते में यूनियन बैंक आफ इण्डिया - सोनारपुरा।
खाते में जमा हुए।
आज योगदान के लिये श्री अनिल की चिट्ठी का मसौदा तैयार करके
मनोरञ्जना दीक्षित सचिव - न्यास समिति के हवाले किया।

आज धूलिया के डा० के भक्त रामप्रसाद का पोस्टकार्ड आया।
"बड़ेसी महाराज" की संन्यासदीक्षा का उल्लेख भागीरथी पत्रिका में
स्वीकृति भेजते हुए उनके पत्र का उत्तर कामना सहित उत्तर लिख भेजा।
सोधपुर से रामनारायण शर्मा - श्री राजगुरु आदेश मठ के पत्र एवं आदेश से
संबंधित उत्तर उन्हें एक कार्ड लिखकर भेज दिया।

आज बहुत के श्री ओम् नारायण - आधिदैविक अभियंत्र.
वाराणसी स्थल-शिवपुरी को पत्र का उत्तर लिखकर
तैयार किया। फोटोस्टेट प्रति रखकर। कल पत्र सीधे उन्हें मूल
पत्र भेजा जायेगा।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।३९।
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया।४०।

yaccāpi sarvabhūtānāṁ bījaṁ tadahamarjuna।
na tadasti vinā yatsyānmayā bhūtaṁ carācaram॥ 39॥
nānto'sti mama divyānāṁ vibhūtīnāṁ paraṁtapa।
eṣa tūddeśataḥ prokto vibhūtervistaro mayā॥ 40॥

लोलार्कषष्ठी — सूर्यो० ५।३५ सूर्या० ६।१९

आज स्वदेश दिक्षित तिवारी और उनकी पत्नी आयीं।
विवाह निश्चित हुआ। २ नवम्बरको उनके यहां भोजन [illegible]
जाना होगा। ११ रुपये दे दिये। १० रुपये आपने [illegible] ११ रुपये आपकी
भाभीको।

आज के [illegible] तिवारी उनके दौरान संजय कुमार तिवारी जो
प्रशिक्षण कालमें बी० एड० के [illegible] रहे हैं। [illegible]
परीक्षा देकर चले गये अपने सभी सामानों सहित जाते
समय प्रवास छूट गये। बैजनाथको १५० रुपये बिजलीके मदमें
स्वेच्छापूर्वक दे गये अतः स्वीकार करना पड़ा।
आज पं० रामजी पाण्डेयके [illegible] एक [illegible]
दिया - फोटो स्टेट के बाद मूल पत्र सोमवारको उन्हें भेजा
जायेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्। अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्।१०।

sañjaya uvāca

evamuktvā tato rājanmahāyogeśvaro hariḥ ।
darśayāmāsa pārthāya paramaṁ rūpamaiśvaram ॥ 9 ॥
anekavaktranayanamanekādbhutadarśanam ।
anekadivyābharaṇaṁ divyānekodyatāyudham ॥ 10 ॥

अनन्तचतुर्दशीव्रत सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।११

श्री राधेश्याम रामायणी जी सायं में पधारे। विद्यापद की अनुभूतियों के संबंध में उन्हें पूरी जानकारी दी मैंने तथा अवस्थी की शपथ तथा कारोबार की लापरवाही बताई।
संग भोजन हुआ।

सुख लेनेसे अन्तःकरण अशुद्ध होता है और सुख देनेसे अन्तःकरण शुद्ध होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा । अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ।१३।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः । प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ।१४।

tatraikasthaṁ jagatkṛtsnaṁ pravibhaktamanekadhā ।
apaśyaddevadevasya śarīre pāṇḍavastadā ॥ 13 ॥
tataḥ sa vismayāviṣṭo hṛṣṭaromā dhanañjayaḥ ।
praṇamya śirasā devaṁ kṛtāñjalirabhāṣata ॥ 14 ॥

पूर्णिमा, प्रतिपदा-श्राद्ध　　सूर्यो० ५ । ३९, सूर्या० ६ । ९

आज

आश्विन कृष्ण १, रविवार, 10.SEPT.
सूर्यो० ५ । ३९,　सूर्या० ६ । ८
द्वितीया-श्राद्ध

आज सहसा डा० राम तवक्या शर्मा जी आ पहुँचे। उनसे राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार की चर्चा [illegible] शिलान्यास समारोह में 2 अक्टू० को उनकी उपस्थिति के संबंध में बातें हुईं। वे 2 ता० को प्रातः [illegible] से आ पहुँचेंगे।

आज वैद्यराज श्री [illegible] त्रिपाठी के यहां गये। कव्वाली। धर्मचर्चा हुई।

स्वामी हरिदेवानंद जी मुजफ्फरपुर से आये। मैंने उन्हें पिपरी मईसा जाने का आदेश दिया तथा स्वामी यतीन्द्रप्रकाशानंद जी को ज्ञापन भी लिख दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥१५॥
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्। नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप॥१६॥

arjuna uvāca

paśyāmi devāṁstava deva dehe sarvāṁstathā bhūtaviśeṣasaṅghān ।
brahmāṇamīśaṁ kamalāsanasthamṛṣīṁśca sarvānuragāṁśca divyān ॥ 15॥
anekabāhūdaravaktranetraṁ paśyāmi tvāṁ sarvato'nantarūpam ।
nāntaṁ na madhyaṁ na punastavādiṁ paśyāmi viśveśvara viśvarūpa ॥ 16॥

तृतीया-श्राद्ध सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।७

आज मंडला के संभ्रान्त नागरिक [illegible]
तथा रामकेश्वर [illegible] आज मिले। ये दोनों स्वामी [illegible]
के शिष्य हैं। श्रद्धालु हैं। उन्हें राजगुरुमठ के श्री पीठाधीश्वर
की लिखी [illegible] 'एवं [illegible]' भी
प्रतिमा दी तथा कुछ [illegible] पुस्तकें दीं।
वे लोग शिलान्यास समारोह में पधारेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्। पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ।१७।
त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ।१८।

kirīṭinaṁ gadinaṁ cakriṇaṁ ca tejorāśiṁ sarvato dīptimantam ।
paśyāmi tvāṁ durnirīkṣyaṁ samantāddīptānalārkadyutimaprameyam ॥ 17 ॥
tvamakṣaraṁ paramaṁ veditavyaṁ tvamasya viśvasya paraṁ nidhānam ।
tvamavyayaḥ śāśvatadharmagoptā sanātanastvaṁ puruṣo mato me ॥ 18 ॥

चतुर्थी-श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत   सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।६

आज नेत्रचिकित्सक डा० आनंद शर्मा के यहां गये। देखे हुए था उन्होंने दो बजे अवकाश दिया। चश्मा को सही बताया तथा अपनी ओर से पावर दिया। उन्हें वउथान 'महाकाव्य, वउथान-बोध-दीपक' - सभी साप्ताहिक तथा, गुरुजी की जीवनी तथा शब्दालंकार पुस्तकें उपहार स्वरूप दी गयीं।

संसारसे कुछ भी लेना बन्धन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति। स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ।२१।
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च। गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ।२२।

ami hi tvāṁ surasaṅghā viśanti kecidbhītāḥ prāñjalayo gṛṇanti ।
svastītyuktvā maharṣisiddhasaṅghāḥ stuvanti tvāṁ stutibhiḥ puṣkalābhiḥ ॥ 21 ॥
rudrādityā vasavo ye ca sādhyā viśve'śvinau marutaścoṣmapāśca ।
gandharvayakṣāsurasiddhasaṅghā vīkṣante tvāṁ vismitāścaiva sarve ॥ 22 ॥

षष्ठी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।३

आज पिपरी मईला से स्वामी ज्ञानदर्शनानंद तथा स्वामी प्रणवप्रज्ञानंद आए हुए थे। वहाँ का कुशल समाचार तथा लोगों की सामाजिक गतिविधियाँ बताया।
वहाँ प्रणवप्रज्ञानंद के पहुँचने से अच्छा प्रभाव पड़ा है तथा सामाजिक सुधार हो रहा है ऐसा पता चला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्। बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्॥२३॥
नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्। दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो॥२४॥

rūpaṁ mahatte bahuvaktranetraṁ mahābāho bahubāhūrupādam ।
bahūdaraṁ bahudaṁṣṭrākarālaṁ dṛṣṭvā lokāḥ pravyathitāstathāham ॥ 23॥
nabhaḥspṛśaṁ dīptamanekavarṇaṁ vyāttānanaṁ dīptaviśālanetram ।
dṛṣṭvā hi tvāṁ pravyathitāntarātmā dhṛtiṁ na vindāmi śamaṁ ca viṣṇo ॥ 24॥

सप्तमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।२

आज स्वामी हरिशरणानंद सरस्वती को महामण्डले[illegible] लौटा दिया। [illegible] सिंह के जाने पर भी दिया। अब स्वामी हरिशरणानंद बड़े उत्साह के [illegible] सहयोग जुटाने का प्रयास करेंगे।

आज सहसा बक्सर से श्री [illegible] मिश्र, बक्सर के श्री [illegible] के [illegible] अपने [illegible], पत्नी तथा लड़के और [illegible] सहित [illegible] आये। भोजन विश्राम के बाद दर्शन-प्रसंग में घूमते रहे। रात को इन्होंने विश्राम किया। प्रातः प्रयाग जायेंगे। अपने लड़के की शिक्षा दीक्षा के क्रम में।

स्वामी [illegible] कल बक्सर जायेंगे। मैंने उन्हें कुछ पत्र दिये हैं, रवीन्द्र तथा गंगाप्रसाद-[illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा आदि को [illegible] दे देना। [illegible] भी दिया। वे प्रातः [illegible] गाड़ी से [illegible] जायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ।२५।
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः। भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ।२६।

daṁṣṭrākarālāni ca te mukhāni dṛṣṭvaiva kālānalasannibhāni ।
diśo na jāne na labhe ca śarma prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 25 ॥
amī ca tvāṁ dhṛtarāṣṭrasya putrāḥ sarve sahaivāvanipālasaṅghaiḥ ।
bhīṣmo droṇaḥ sūtaputrastathāsau sahāsmadīyairapi yodhamukhyaiḥ ॥ 26 ॥

अष्टमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१

आज प्रातः जलपान के बाद डा० चन्द्रशेखर मिश्र जी अपनी जीप से प्रयाग गये। कल शाम तक [illegible] में लौटें।
आज सायंकाल डा० पारसनाथ सहसा अपने पौत्र के श्री रामनारायण राय "नन्दू" (सरयू राय के पुत्र) के साथ आ पहुँचे। बहुत दिनों के बाद रामनारायण से भेंट हुई और जीवन के अनुभवों तथा काशी की गतिविधि के संबंध में बातें होती रहीं। उन्होंने [illegible] की [illegible]। संघी आदि ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों और [illegible] के [illegible] नदी संगमों के नाम [illegible] बताये। उनका घर में [illegible] है। उनके वहाँ स्थापित होने पर [illegible] में काशी [illegible] की चर्चा चली। डा० राजबली [illegible] और पं० [illegible] मिश्र को [illegible] के [illegible] होने का [illegible] और [illegible] के [illegible] किया।

आश्विन कृष्ण ८, रविवार, 17.SEPT.
सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।००
जीवत्पुत्रिकाव्रत, विश्वकर्मापूजा

आज प्रातः डा० पारसनाथ [illegible] गये और रामनारायण प्रयाग लौटे। दफ्तरी ने पुस्तकों '[illegible]' की [illegible] बनाकर ले आये। [illegible] तथा [illegible] की जिल्द बनाया। दोनों [illegible] मजबूती से बनी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ।२७।
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ।२८।
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ।२९।

vaktrāṇi te tvaramāṇā viśanti daṁṣṭrākarālāni bhayānakāni ।
kecidvilagnā daśanāntareṣu saṁdṛśyante cūrṇitairuttamāṅgaiḥ ॥ 27॥
yathā nadīnāṁ bahavo'mbuvegāḥ samudramevābhimukhā dravanti ।
tathā tavāmī naralokavīrā viśanti vaktrāṇyabhivijvalanti ॥ 28॥
yathā pradīptaṁ jvalanaṁ pataṅgā viśanti nāśāya samṛddhavegāḥ ।
tathaiva nāśāya viśanti lokāstavāpi vaktrāṇi samṛddhavegāḥ ॥ 29॥

नवमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ५।५८

आज. प्रमोद कुमार दीक्षित के साथ नगर [illegible] के [illegible]
वाराणसी से चलकर पहुँचा। आश्रम पर पहुँचा। अभिषेक वर्मा को
[illegible] दिया। आश्रम पर पहुँच [illegible]
[illegible] बहुत गंदगी [illegible] को [illegible]
[illegible] से [illegible]।
भोजन नहीं किया. रात को दूध तथा जलपान। [illegible]
को [illegible] वर्षा से रात में नहीं आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः। तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥३०॥
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद। विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः। ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥३२॥

lelihyase grasamānaḥ samantāllokānsamagrānvadanairjvaladbhiḥ ।
tejobhirāpūrya jagatsamagraṁ bhāsastavogrāḥ pratapanti viṣṇo ॥ 30 ॥
ākhyāhi me ko bhavānugrarūpo namo'stu te devavara prasīda ।
vijñātumicchāmi bhavantamādyaṁ na hi prajānāmi tava pravṛttim ॥ 31 ॥

śrībhagavānuvāca

kālo'smi lokakṣayakṛtpravṛddho lokānsamāhartumiha pravṛttaḥ ।
ṛte'pi tvāṁ na bhaviṣyanti sarve ye'vasthitāḥ pratyanīkeṣu yodhāḥ ॥ 32 ॥

दशमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५७

प्रातः डा० चन्द्रशेखर मिश्र अपने पुत्र के साथ आश्रम में (बक्सर) आये। बातें हुईं। पुनः [illegible] गये। उन्हीं के [illegible] (नाना [illegible]) से मिलने गये पर नहीं हो सके।
आज दिन भर [illegible] आश्रम की सफाई [illegible] में लगे रहे। पूरी स्वच्छता हो गयी।
भोजन बनाने हेतु बैंक नहीं गये। [illegible] था। अतः पेंशन का कार्य नहीं हो सका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्। मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।३३।
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्। मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।३४।

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी। नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।३५।

tasmāttvamuttiṣṭha yaśo labhasva jitvā śatrūnbhuṅkṣva rājyaṁ samṛddham।
mayaivaite nihatāḥ pūrvameva nimittamātraṁ bhava savyasācin ॥ 33 ॥
droṇaṁ ca bhīṣmaṁ ca jayadrathaṁ ca karṇaṁ tathānyānapi yodhavīrān।
mayā hatāṁstvaṁ jahi mā vyathiṣṭhā yudhyasva jetāsi raṇe sapatnān ॥ 34 ॥

sañjaya uvāca

etacchrutvā vacanaṁ keśavasya kṛtāñjalirvepamānaḥ kirīṭī।
namaskṛtvā bhūya evāha kṛṣṇaṁ sagadgadaṁ bhītabhītaḥ praṇamya ॥ 35 ॥

इन्दिरा एकादशीव्रत, एकादशी-श्राद्ध — सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५६

आज सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया पेंशन पाने वालों का अधिवेशन [illegible]। प्रान्तीय पेंशनर्स के प्रधान [illegible] हरीश [illegible] [illegible] और [illegible] प्रमोद [illegible]। [illegible] उनके [illegible] किया [illegible]।

दिवाली के पहले श्री कमलाकान्त राय-गारा को [illegible] करने के लिये एक पत्र लिखकर अधिकृत किया कि वे विजयादशमी को उनके काशी पहुंचा देंगे।

सेन्ट्रल बैंक लौटे से दो हजार रुपये [illegible] प्राप्त किया। एक सौ रुपये [illegible] राय; [illegible] को भी दे दिया। दो सौ रुपये श्रीमती राजकिशोरी राय गंगापुर-चौधरी [illegible] को अनुग्रह राशि दिया। प्रसाद जा रहे और रात को १०.३० बजे लौटे। (अवधेश [illegible] नहीं लौटे [illegible] व्यवसाय के [illegible] गये हैं)।

संजय कुमार सिंह-पुत्र रामनरेश पांडे, [illegible] एक किलो की [illegible] आये - रामनरेश अस्वस्थ हैं [illegible] नहीं आ सके, [illegible] वे कलकत्ता थे। एक बोरा गेहूं भोजन के लिये साथ ले जाने की तैयारी किया।

RajGuruMath, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः।३६।
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे। अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्।३७।
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।३८।

arjuna uvāca

sthāne hṛṣīkeśa tava prakīrtyā jagatprahṛṣyatyanurajyate ca ।
rakṣāṁsi bhītāni diśo dravanti sarve namasyanti ca siddhasaṅghāḥ ॥ 36 ॥
kasmācca te na nameranmahātman garīyase brahmaṇo'pyādikartre ।
ananta deveśa jagannivāsa tvamakṣaraṁ sadasattatparaṁ yat ॥ 37 ॥
tvamādidevaḥ puruṣaḥ purāṇastvamasya viśvasya paraṁ nidhānam ।
vettāsi vedyaṁ ca paraṁ ca dhāma tvayā tataṁ viśvamanantarūpa ॥ 38 ॥

द्वादशी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५५

प्रातः काल-अयोध्या के डा० मिश्र की जीप आयी। स्टेशन पहुंचा। कोशवाहक के सेविंग बैंक लौटे से १० बजे फुटकर चाय को पिये लिया। पंजाबमेल से काशी राजगुरुमठ पहुंचे।
एक बजकर २४ मि० मठ में आने पर श्री दीक्षित जी के मठ में आने की बात मालूम हुई। वे पत्नी और पुत्रवधू के साथ आये थे- यहाँ से अयोध्या बनवाही-सेवा करके गये। बच्चों को १५० की पापड़ी ले आये।
आज अपराह्न अईसागावँ के मंगला राय एवं प्रभात के पुत्र श्री वीरेन्द्र नाथ राय· स्वामी जनप्रकाशानंद जी के स्वरूप के रूप में आये। उन्हें यहाँ विशेषताएँ दिखा कर उरुवरुण· विजयादशमी के विजयोत्सव में आने के लिये प्रोत्साहित और प्रेरित किया।

यदि मनुष्य आजका काम कल पर न टाले तो वह बहुत-सी बुराइयोंसे बच सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च। नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।३९।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व। अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ।४०।
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति। अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ।४१।

vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ prajāpatistvaṁ prapitāmahaśca।
namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ punaśca bhūyo'pi namo namaste ॥ 39॥
namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste namo'stu te sarvata eva sarva।
anantavīryāmitavikramastvaṁ sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ ॥ 40॥
sakheti matvā prasabhaṁ yaduktaṁ he kṛṣṇa he yādava he sakheti।
ajānatā mahimānaṁ tavedaṁ mayā pramādātpraṇayena vāpi ॥ 41॥

प्रदोषव्रत, त्रयोदशी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५४

आठ दिनों की दवा आयी - संभवतः दो सौ तीस रुपये की।
वीरेन्द्र सिंह के मठ में आने की बात मालूम हुई। राजेन्द्र राही के बाद में
आने की खबर मिली। दो सौ रुपये दफ्तरी को "कठ चापन" की जिल्द
बनाने के मद में दिए गये। चौदह प्रतियां कठआपन की खबर मिली।
भाई श्रीकृष्ण त्रिपाठी मेरे मित्र, सन्देशवाहक की कुछ पुस्तकें
दे गये थे - वे प्राप्त हुईं।
(1) ईशावास्य वृत्ति (2) अध्यात्मज्ञान और विज्ञान.
(3) अध्यात्म-तत्त्व-सुधा।
वाराणसी रजिस्टर्ड पार्सल से "गुरु मीमांसा" एक उपन्यास उसके
लेखक - रामनाथ चतुर्वेदी की ओर से भेंटस्वरूप आयी।
प्राप्त किया।
रात को डा० चन्द्रशेखर मिश्र की टेलीफोन से सूचना आयी कि
कल उनके संबंधी और पायल के लोग काशी पधारेंगे।
इसके पूर्व तीन पत्र श्री श्रीकृष्ण ठाकुर को लिख दिये।
दो पोस्टकार्ड - अर्थात् और पत्र के पते पर। उसके बाद लिफाफे में
दूसरा भी तैयार कराया। पते के पते पर और भेजा।

ऐसा होना चाहिये और ऐसा नहीं होना चाहिये—इसमें ही सब दुःख भरे हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि　विहारशय्यासनभोजनेषु। एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्। न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्। पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥४४॥

yaccāvahāsārthamasatkṛto'si　vihāraśayyāsanabhojaneṣu ।
eko'thavāpyacyuta tatsamakṣaṁ tatkṣāmaye tvāmahamaprameyam ॥ 42 ॥
pitāsi lokasya carācarasya tvamasya pūjyaśca gururgarīyān ।
na tvatsamo'styabhyadhikaḥ kuto'nyo lokatraye'pyapratimaprabhāva ॥ 43 ॥
tasmātpraṇamya praṇidhāya kāyaṁ prasādaye tvāmahamīśamīḍyam ।
piteva putrasya sakheva sakhyuḥpriyaḥ priyāyārhasi deva soḍhum ॥ 44 ॥

चतुर्दशी-श्राद्ध　　सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५२

आज जयचन्द्रेश्वर मिश्र का फोन आया कि वे ईश्वरचन्द्र मठ से मिलकर विचाराधीन दोगाने बाँधा जायेंगे। इनकार्यों वश काशी भी आने का था किन्तु कोई नहीं आया।

आश्विन कृष्ण ३०, रविवार, 24.SEPT.
सूर्यो० ५।४५,　　सूर्या० ५।५१
अमावास्या, पितृ-विसर्जन

आज प्रमोदकुमार श्रीवास्तव, रामदास गोयल, ओमप्रकाश, हरिकिशन वाले श्याम राम, मथुरा राम, नारायण आदि के यहाँ डॉ. अवधूत के विश्वोत्सव समारोह के कार्यक्रम में सहभागी बनने का निमन्त्रण लेकर मिले। सायंकाल श्री शिवदत्त राय ओमप्रकाश आये। उन्हें मानस भवन और शिलान्यास के सम्बन्ध में नक्शा दिखाकर विचारविमर्श किया गया। वे उस दिन यथावत सहयोग देंगे। संगमलाल तिवारी आ.रा.गो.से. के प्रतिनिधि अचानक आ गये थे। उनके माध्यम से श्री देवदत्त लाल चौधरी को पत्र एवं विज्ञप्तियाँ भेजकर डॉ. अवधूत के लिये आमंत्रित किया। श्री ओमप्रकाश चौधरी को तथा लक्ष्मीनारायण को भी निमन्त्रण भेज दिया। एक कार्य हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ।४५।
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव। तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ।४६।

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्। तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ।४७।

adṛṣṭapūrvaṁ hṛṣito'smi dṛṣṭvā bhayena ca pravyathitaṁ mano me ।
tadeva me darśaya devarūpaṁ prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 45 ॥
kirīṭinaṁ gadinaṁ cakrahastamicchāmi tvāṁ draṣṭumahaṁ tathaiva ।
tenaiva rūpeṇa caturbhujena sahasrabāho bhava viśvamūrte ॥ 46 ॥

śrībhagavānuvāca

mayā prasannena tavārjunedaṁ rūpaṁ paraṁ darśitamātmayogāt ।
tejomayaṁ viśvamanantamādyaṁ yanme tvadanyena na dṛṣṭapūrvam ॥ 47 ॥

शारदीय नवरात्रारम्भ, मातामहश्राद्ध सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५०

आज भोर में ह्रैस्नम की धर्मपत्नी प्रसवावस्था में विषम स्थिति में अस्पताल में आई। आपरेशन से संतानोत्पत्ति सफल हुई। अड़चन और उलझन नहीं है. कामना है। प्रमोद बाग, भरत और डॉ ऋषिकेश भी अभी सुलझा नहीं पा रहे हैं।

कल स्वामी जगतप्रकाशानंद जी महेश योगेन्द्र के उपर्युक्त सहयोग जुटाकर रात को वहाँ के समाजसेवी बन्धुओं के साथ आयेंगे।

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः। एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ।४८।
मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्। व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ।४९।

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः। आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ।५०।

na vedayajñādhyayanairna dānairna ca kriyābhirna tapobhirugraiḥ ।
evaṁrūpaḥ śakya ahaṁ nṛloke draṣṭuṁ tvadanyena kurupravīra ॥ 48 ॥
mā te vyathā mā ca vimūḍhabhāvo dṛṣṭvā rūpaṁ ghoramīdṛṅmamedam ।
vyapetabhīḥ prītamanāḥ punastvaṁ tadeva me rūpamidaṁ prapaśya ॥ 49 ॥

sañjaya uvāca

ityarjunaṁ vāsudevastathoktvā svakaṁ rūpaṁ darśayāmāsa bhūyaḥ ।
āśvāsayāmāsa ca bhītamenaṁ bhūtvā punaḥ saumyavapurmahātmā ॥ 50 ॥

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४९

आज भुवनेश्वर चौधरी का मुजफ्फरपुर से
कार्ड आया, एक पत्र आया कि वे बंबई जा रहे हैं। समारोह में नहीं
पहुंच सकेंगे। २०.१०. को पटना तथा २१.१०. को मुजफ्फरपुर लौटेंगे।
कुमार [illegible] की प्रेरणा [illegible]।
[illegible] वाहिनी [illegible] की [illegible] बड़ी आशा करती है। [illegible] बड़े
लोगों की [illegible] मिलाने से यह [illegible] पर एक रंगीन [illegible]
बना है। किन्तु [illegible] स्वयं को [illegible] अपने
[illegible] और [illegible] के [illegible] होगा।
मैंने इस संबंध में पटना [illegible] पत्र भेजा।
[illegible] कुशल मंगल के लिये [illegible] के पते पर
श्री [illegible] रामप्रसाद [illegible] के पास भेजा।
स्वामी [illegible] स्टेशन [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible] को [illegible] के पद [illegible]
[illegible]।
[illegible] अनिल कुमार [illegible] शर्मा ने - संगम [illegible]
[illegible] के प्रकरण [illegible] की स्थिति पैदा करते हुए [illegible]
शब्दों [illegible] किया। [illegible] पड़ा। मन में उद्वेग और
[illegible] हुआ। [illegible] संकोच [illegible] ऐसी
[illegible] है। [illegible] हैं जो पहले
[illegible] फूट के बीज [illegible] यह [illegible] है, जो [illegible]

चार चीजोंका सदा सेवन करना चाहिये—सत्संग, सन्तोष, दान और दया।

[illegible] के बाद भी उगा [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ।५१।

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ।५२।
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ।५३।

arjuna uvāca
dṛṣṭvedaṁ mānuṣaṁ rūpaṁ tava saumyaṁ janārdana ।
idānīmasmi saṁvṛttaḥ sacetāḥ prakṛtiṁ gataḥ ॥ 51 ॥
śrībhagavānuvāca
sudurdarśamidaṁ rūpaṁ dṛṣṭavānasi yanmama ।
devā apyasya rūpasya nityaṁ darśanakāṅkṣiṇaḥ ॥ 52 ॥
nāhaṁ vedairna tapasā na dānena na cejyayā ।
śakya evaṁvidho draṣṭuṁ dṛṣṭavānasi māṁ yathā ॥ 53 ॥

आज दिन का कुछ नहीं ग्रहण किया। केवल सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४८
आवश्यक दवा लिया - रात में एक घंटे के बाद दूध केला ग्रहण किया
और चिन्तन करते रहे। दिन में एक कार्ड लिखा था योगेश्वरानन्द शर्मा
को शीघ्र दीक्षा हेतु आगत कराया।
दिन भर पढ़ते लिखते रहे। भगवत्पाद शिवानन्द जी की जीवनी
छूट गया।
चिन्तन के बाद भगवद्भक्ति धारण करना उचित होगा।
उच्छृंखलता - उपेक्षा का समाज पर दुष्प्रभाव पड़ता है। सज्जन जहां जाते रहे
अभिलाषी रहे तो वह सकते हैं किन्तु सामान्य जनसमाज भावनाशील तथा
अविवेकी। वे इतने उच्छृंखल नहीं हैं। उनको तो सुधार एवं
शान्ति चाहते हैं। उन्हीं के आधार समाज का जीवन होगा।

चार चीजोंपर भरोसा रखो—भगवान्, सत्य, पुरुषार्थ और स्वार्थहीन मित्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन। ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।५४।
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।५५।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः।११।

bhaktyā tvananyayā śakya ahamevaṁvidho'rjuna।
jñātuṁ draṣṭuṁ ca tattvena praveṣṭuṁ ca paraṁtapa ॥ 54॥
matkarmakṛnmatparamo madbhaktaḥ saṅgavarjitaḥ।
nirvairaḥ sarvabhūteṣu yaḥ sa māmeti pāṇḍava ॥ 55॥

आज वंशगोपाल इत्यादि से सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४७

गोरखपुर आये दीपचंद रानके श्री लखमीचन्द आये थे। उनकी कन्या का अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न हुआ। मैंने भी उन लोगों की इच्छा के अनुसार। पूड़ी हलवा सबों ने प्रसाद ग्रहण किया। ५० रुपये उन्होंने दिये। प्रमोद को दवा के मद में खर्च के लिये दे दिया। सायंकाल वीरपुर के श्री ब्रजकिशोर शर्मा मेरे शिष्य आये। उनसे कुशल समाचार हुआ। मठ की स्वर्ण जयंती और समारोह शिलान्यास की चर्चा होती रही। वे आयोजन में भाग लेंगे। इन्हें कीर्तन विज्ञप्तियाँ – रविकान्त शर्मा और श्री शिवनाथ शर्मा के नाम भी भेजने के लिये प्रमोद कुमार को लिखने कह दिया।

'वेदपाठ' – पुस्तिका हेतु प्रकाशक के लिये संशोधित कर रहे हैं। 'वेदपाठ' की एक खंडित प्रति छपवाने के लिये दफ्तर के पास भेजा। अजय सेन ने भोजन को भेजा गया। स्वाध्याय की "... " ... देखी गयी।

आज बनारसी (बीदवा - पटना - हरिकृष्ण ...) के पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से भेज दी गई। 91-60 रुपये डाकखर्च लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते। ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ।१।

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते। श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ।२।
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते। सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ।३।

arjuna uvāca

evaṁ satatayuktā ye bhaktāstvāṁ paryupāsate ।
ye cāpyakṣaramavyaktaṁ teṣāṁ ke yogavittamāḥ ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

mayyāveśya mano ye māṁ nityayuktā upāsate ।
śraddhayā parayopetāste me yuktatamā matāḥ ॥ 2 ॥
ye tvakṣaramanirdeśyamavyaktaṁ paryupāsate ।
sarvatragamacintyaṁ ca kūṭasthamacalaṁ dhruvam ॥ 3 ॥

आश्विन शुक्ल ५, सं॰ २०५२, शुक्रवार, SEPT. 29. 1995

सूर्यो॰ ५।४७, सूर्या॰ ५।४६

आज डाक से १०८० रुपये उठा लिये। गाजीपुर-अखिलेन्दु नारायण
के यहाँ मठ के अभियोग के लिये [illegible] के सम्बन्ध में [illegible]
[illegible] पत्र लिख भेजा। [illegible] द्वारा [illegible] शर्मा,
[illegible] के मठ के मठ के अभियोग को [illegible] पत्र
लिख भेजा। [illegible] पवित्र और [illegible] की [illegible] सहित
भेज दिये। [illegible] आज
उनकी [illegible] पास [illegible] दिये [illegible] के लिये
सौंप दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव। मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ।१०।
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः। सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ।११।
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।१२।

abhyāse'pyasamartho'si matkarmaparamo bhava ।
madarthamapi karmāṇi kurvansiddhimavāpsyasi ॥ 10 ॥
athaitadapyaśakto'si kartuṁ madyogamāśritaḥ ।
sarvakarmaphalatyāgaṁ tataḥ kuru yatātmavān ॥ 11 ॥
śreyo hi jñānamabhyāsājjñānāddhyānaṁ viśiṣyate ।
dhyānātkarmaphalatyāgastyāgācchāntiranantaram ॥ 12 ॥

विजयादशमी सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ५।४२

आज राजगुरु मठ के जीर्णोद्धार भवन का शिलान्यास कार्य सम्पन्न हुआ। डा० राजवत्स्या शर्मा अध्यक्ष हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय [illegible] शर्मा का आगमन। पं० कमलाकान्त [illegible] जी त्रिपाठी, प्राध्यापक, रणवीर सं० विद्यालय वाराणसी [illegible]। [illegible] तथा देवनारायण शर्मा, प्राध्यापक C.H.S. कमच्छा वाराणसी ([illegible]) (प्र० आचार्य [illegible] ([illegible]) [illegible]) ने शिलान्यास पूजा में आचार्यत्व। [illegible] भोजन किया। [illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा [illegible] [illegible] डा० राजनारायण शर्मा [illegible] भी पधारे।

[illegible] और नवदेव [illegible]। [illegible] तथा [illegible] सिंह, हीरालाल [illegible] [illegible] किये। [illegible] [illegible] शर्मा ने आकर [illegible]। [illegible] [illegible] तक पहुंच गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।१३।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।१४।
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ।१५।

adveṣṭā sarvabhūtānāṁ maitraḥ karuṇa eva ca ।
nirmamo nirahaṅkāraḥ samaduḥkhasukhaḥ kṣamī ॥ 13 ॥
saṁ tuṣṭaḥ satataṁ yogī yatātmā dṛḍhaniścayaḥ ।
mayyarpitamanobuddhiryo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 14 ॥
yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ ।
harṣāmarṣabhayodvegairmukto yaḥ sa ca me priyaḥ ॥ 15 ॥

पापांकुशा एकादशीव्रत सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४१

आज भी बहुत लोग [illegible] रहे। पेंशन के रुपये भी मिले [illegible] दिए। शेष [illegible] मिलेंगे। [illegible] चौ० राजनारायण शर्मा को [illegible] में दिया। [illegible] पा जाओगे।

सारा दर्शनशास्त्र दो शब्दोंमें—संयम और सेवा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।१६।
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ।१७।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः। शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।१८।

anapekṣaḥ śucirdakṣa udāsīno gatavyathaḥ।
sarvārambhaparityāgī yo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 16॥
yo na hṛṣyati na dveṣṭi na śocati na kāṅkṣati।
śubhāśubhaparityāgī bhaktimānyaḥ sa me priyaḥ ॥ 17॥
samaḥ śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ।
śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samaḥ saṅgavivarjitaḥ ॥ 18॥

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४०

आज [illegible] । दिल्ली से [illegible] पांडेय जी
२ जनवरी द्वारा प्रेषित सन्देश लेकर आये। मैंने निवेदन सहित
कहकर वापस लौटा दिया कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर
[illegible] के [illegible] के अवसर पर देंगे तथा [illegible] ११ [illegible]
[illegible] में [illegible] लेंगे। आज [illegible] - [illegible]
एक [illegible] नामक गोष्ठी [illegible] शिक्षा का
उद्देश्य [illegible] जो [illegible] के [illegible]
में उनके [illegible] को [illegible] दिया। [illegible] उनके बड़े
उद्दण्ड हैं। कलह के [illegible] हैं। [illegible]
वाले तथा समाज की [illegible] वाले हैं।

वस्तुके त्यागकी अपेक्षा वस्तुके महत्त्वका त्याग श्रेष्ठ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ।१२।

tulyanindāstutirmaunī saṁtuṣṭo yena kenacit ।
aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ ॥ 19॥
ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate ।
śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ ॥ 20॥

प्रदोषव्रत   सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३९

आज सहारनपुर के श्री फौजदारनाथ आदर्श। वे महाराज काशिराज के मिलनेवाले रामलीला देखने रामनगर में और विजयादशमी के लिये आये थे। उनसे राजदरबार की प्रतिष्ठा और बहिरंग मोति-कुत्ता-बन्दर -आदि के बारे में बातें हुईं। उन्होंने आदि[illegible] डा० विश्वनाथ प्रसाद सिंह द्वारा "मुंशियान पुरोहित" के अलावे श्री गवर्नर श्री [illegible] - उनका भी [illegible] सिंह एवं "[illegible] सिंह" काशिराज के भाइयों के [illegible] पर भी प्रकाश डाला। फौजदार जी ने [illegible] की छूटों [illegible] श्री [illegible] की धार्मिक [illegible] में लगने को [illegible] किया। [illegible] तथा काशिराज ने बातें करके उन्हें [illegible] के समारोह के अवसर पर बुलाने का उनसे [illegible] को भी आश्वासन दिया। वे स्वयं तो उस अवसर पर आ सकेंगे ही। [illegible] उन्होंने वचन दिया।

दिनभर बुरी भावनाओं और बुरे कर्मोंसे बचकर रहना रातभरके भजनसे बढ़कर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ।१।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत। क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ।२।
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्। स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ।३।

śrībhagavānuvāca
idaṁ śarīraṁ kaunteya kṣetramityabhidhīyate।
etadyo vetti taṁ prāhuḥ kṣetrajña iti tadvidaḥ ॥ 1॥
kṣetrajñaṁ cāpi māṁ viddhi sarvakṣetreṣu bhārata।
kṣetrakṣetrajñayorjñānaṁ yattajjñānaṁ mataṁ mama ॥ 2॥
tatkṣetraṁ yacca yādṛkca yadvikāri yataśca yat।
sa ca yo yatprabhāvaśca tatsamāsena me śṛṇu ॥ 3॥

आश्विन शुक्ल १४, सं० २०५२, शनिवार OCT. 7. 1995

व्रत-पूर्णिमा सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३८

इंदुपुर से श्री मिथिलेश, आइवदयाल की धर्मपत्नी एवं उनकी धर्मपत्नी कौशल्या आये। पटना से रामवतार शर्मा के पुत्र आशुतोष आये। इनके कल [illegible] परीक्षा देनी है। केशव तिवारी के पौत्र संजय तिवारी 'सिकड़ी' भी आये, परीक्षा देकर गये। पं० श्यामनंदन मिश्र एवं डा० रामकमल शर्मा को दो निमंत्रण-निमंत्रणपत्र राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार के शुभारंभ कार्तिक पूर्णिमा के समारोह में आने के लिये दिया। पं० शिवशंकर [illegible] दवा के क्रम में आये, इनके उन्हें सूचना दिया। विनय ही हुआ। वे कार्तिक पूर्णिमा को पधारेंगे [illegible] लोग समझेंगे।

डी० पी० के बेटे मानु की पत्नी का राजेन्द्र का आपरेशन हुआ है।

आश्विन शुक्ल १५, रविवार, 8.OCT.

सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ५।३६

शरत्-पूर्णिमा, कार्तिक-स्नानारम्भ

आज का० हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक डा० महेन्द्रनाथ राय आये थे। श्रीकान्त शर्मा जी की बड़ी बिटिया की शादी [illegible] में होने रही। इनकी कन्या 'राजगुरुमठ' [illegible] प्राध्यापक [illegible] हैं। राजगुरुमठ के आगत और [illegible] तथा काशीराज के [illegible] भी [illegible] हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ।४।
महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ।५।
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः । एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ।६।

ṛṣibhirbahudhā gītaṁ chandobhirvividhaiḥ pṛthak ।
brahmasūtrapadaiścaiva hetumadbhirviniścitaiḥ ॥ 4 ॥
mahābhūtānyahaṅkāro buddhiravyaktameva ca ।
indriyāṇi daśaikaṁ ca pañca cendriyagocarāḥ ॥ 5 ॥
icchā dveṣaḥ sukhaṁ duḥkhaṁ saṅghātaścetanā dhṛtiḥ ।
etatkṣetraṁ samāsena savikāramudāhṛtam ॥ 6 ॥

सूर्यो० ५ । ५२, सूर्या० ५ । ३५

डॉ० जगन्नाथ शर्मा जी एक हजार रुपये छोड़कर गये जो [illegible] निकेतन में दे गये। एक हजार रुपये - मूर्ति में लिये श्री कृष्ण [illegible] को [illegible] दे गये। चार सौ रुपये - श्रीसीताराम - राम कुटिया को गये हैं, दूसरा को [illegible] रुपये सभी लोग पैसे वापस करके देंगे।

[illegible] आज [illegible] आने पहले बाद [illegible] के साथ [illegible] को आती थी। [illegible] [illegible], [illegible] के यहां गयी।

कठिनाइयों से, उलझनों से मन कभी कभी तंग आकर घबड़ाता है, पर घबड़ाने से कोई समस्या सुलझेगी नहीं बल्कि परेशानी ही बढ़ेगी। अतः साहित्यिक एवं सामाजिक बहुत से आयोजन हुए हैं उन्हें भावुकता से सुलझाना और हल [illegible] होगा। यही जीवन की [illegible] है। पहले की प्रेरणा से [illegible] से [illegible] भावनायें [illegible] अनुसार आगे होगा।

साधकके लिये मान-बड़ाई मीठा विष है और अपमान-निन्दा अमृत तुल्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।१३।
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।१४।
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।१५।

sarvataḥpāṇipādaṁ tatsarvato'kṣiśiromukham ।
sarvataḥśrutimalloke sarvamāvṛtya tiṣṭhati ॥ 13 ॥
sarvendriyaguṇābhāsaṁ sarvendriyavivarjitam ।
asaktaṁ śarvabhṛccaiva nirguṇaṁ guṇabhoktṛ ca ॥ 14 ॥
bahirantaśca bhūtānāmacaraṁ carameva ca ।
sūkṣmatvāttadavijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat ॥ 15 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवा चौथ) सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३२

आज स्वामी हरिदर्शनानन्द सरस्वती को ६ पृष्ठों का लंबा पत्र लिखकर [illegible] स्तोत्र की कथा सुनाकर व्याख्यान किया।
श्री मार्कण्डेय चन्द्रेश्वर मिश्र जी का। अभी तक [illegible] को भी दो पृष्ठों का पत्र लिखकर भेजा।

आज खरीआर के श्री विश्वेश्वरी प्रसाद सिंह एवं उनके पुत्र तथा [illegible] कार्यालय अधिकारी भी साथ आये। राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार की विस्तार बातें हुईं। उन लोगों ने [illegible] आग्रह किया कि जीर्णोद्धार में सहायक और प्रेरक बनें [illegible]। मैंने स्वरूप ब्राह्मणकोश और गीताहृदय के नवीन संस्करण की प्रति दिया। आश्वासन भी मिला।

आज ही डा० श्यामबिहारी राय आये। कुंवरसिंह विश्वविद्यालय के कुलपति श्री देवेन्द्रनाथ सिंह ने उनसे भी कुंवर सिंह पर एक पुस्तक लिखने का अनुरोध किया है, उसी सिलसिले में [illegible] विश्वविद्यालय [illegible] की मदद लेकर पुस्तक लिखने आये थे। उन्होंने डा० [illegible] और डा० [illegible] की रचनाओं को भी देखी।

किसी भी मनुष्य या प्राणीमें कोई भी गुण हो उसको ग्रहण करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।१६।
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते। ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।१७।
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः। मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।१८।

avibhaktaṁ ca bhūteṣu vibhaktamiva ca sthitam।
bhūtabhartṛ ca tajjñeyaṁ grasiṣṇu prabhaviṣṇu ca ॥ 16 ॥
jyotiṣāmapi tajjyotistamasaḥ paramucyate।
jñānaṁ jñeyaṁ jñānagamyaṁ hṛdi sarvasya viṣṭhitam ॥ 17 ॥
iti kṣetraṁ tathā jñānaṁ jñeyaṁ coktaṁ samāsataḥ।
madbhakta etadvijñāya madbhāvāyopapadyate ॥ 18 ॥

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३१

आज हरिद्वार से भी दिव्यधाम आश्रम के अध्यक्ष
अपने भक्त सहित आये। मैं स्वामी पूर्णानंद एवं स्वामी [illegible]
सहित समाज के प्रमुख उन्नायकों पर [illegible] रहे हैं। [illegible]
[illegible] आये थे। मेरे लेखों में भी [illegible]।
मकरंद जोशी का समीक्षा 'वक्तव्य' या [illegible] रचनाओं
देखना चाहते थे। मैंने मकरंद दिखाया। उन्हें [illegible]
शर्मा द्वारा [illegible] भी उसके बाद प्रकाशित [illegible]
रचनाओं की प्रतियां भेजने का वचन दिया।
यह कार्य करना होगा।

~~[illegible]~~

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ।१९।
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ।२०।
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्। कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ।२१।

prakṛtiṁ puruṣaṁ caiva viddhyanādī ubhāvapi ।
vikārāṁśca guṇāṁścaiva viddhi prakṛtisambhavān ॥ 19 ॥
kāryakaraṇakartṛtve hetuḥ prakṛtirucyate ।
puruṣaḥ sukhaduḥkhānāṁ bhoktṛtve heturucyate ॥ 20 ॥
puruṣaḥ prakṛtistho hi bhuṅkte prakṛtijānguṇān ।
kāraṇaṁ guṇasaṅgo'sya sadasadyonijanmasu ॥ 21 ॥

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।३०

आज संध्या शालिग्राम उपाध्याय, व्यास (आये) / वे दो घंटे तक सत्संग वार्ता करते रहे। उन्होंने गंगाराम शास्त्री श्री दीनदयालजी की रचनाओं की मांगी थी। "इतिहास-दर्शन" एवं 'आत्मबोध [illegible]' दो महत्वपूर्ण रचनाएं उन्हें अमन पाठक (लोकेन्द्र [illegible]) "स्वाधीनता संग्राम के बदलते तेवर" श्री [illegible] ने उनकी नवीन रचना प्रकाशित की है [illegible] भेंट स्वरूप [illegible] दिया है।

कार्तिक कृष्ण ७, रविवार, 15.OCT.
सूर्यो० ५।५५　　सूर्या० ५।२९

आज भी श्री शालिग्राम उपाध्याय करीब [illegible] आये। दो घंटे तक बैठे वेदांत चर्चा करते रहे। स्वामी विद्यारण्यजी की उपनिषद भाष्य रचना - [illegible] वृहदारण्यक [illegible] रहे। [illegible] [illegible] के अवलोकनार्थ ले गये [illegible] लौटा देंगे। उन्होंने - [illegible] की रचना - टीकाकार [illegible] "सुभगोदय स्तुति" [illegible] से प्रकाशित [illegible] अनुवाद [illegible] और [illegible] उपहार दिया। [illegible] है। [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] के पास)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः। परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।२२।
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह। सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते।२३।
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना। अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे।२४।

upadraṣṭānumantā ca bhartā bhoktā maheśvaraḥ।
paramātmeti cāpyukto dehe'sminpuruṣaḥ paraḥ ॥ 22 ॥
ya evaṁ vetti puruṣaṁ prakṛtiṁ ca guṇaiḥ saha।
sarvathā vartamāno'pi na sa bhūyo'bhijāyate ॥ 23 ॥
dhyānenātmani paśyanti kecidātmānamātmanā।
anye sāṅkhyena yogena karmayogena cāpare ॥ 24 ॥

अहोईव्रत — सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२८

आ० श्रीमद्भागवत-तृतीयस्कन्ध के अध्यायों का पारायण किया। संत विनोबाजी प्रणीत अध्यात्मतत्त्व-सुधा पढ़ा। डा० रामचन्द्र शर्मा को राजगुरुमठ के कार्तिक पूर्णिमा पर होने वाले [illegible] के आयोजन में पधारने का निवेदन किया। डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा को श्री [illegible] मठ की व्यवस्था के संबंध में विशेष [illegible] उपलब्ध कराया। आज मध्याह्न श्री [illegible] - श्री [illegible] अत्यंत [illegible] उन्हें [illegible]। [illegible] समाज के [illegible] लोगों से संपर्क करने और सहयोग प्राप्त करने के संबंध में विचार किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते। तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ।२५।
यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ।२६।
समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ।२७।

anye tvevamajānantaḥ śrutvānyebhya upāsate ।
te'pi cātitarantyeva mṛtyuṁ śrutiparāyaṇāḥ ॥ 25 ॥
yāvatsaṁjāyate kiṁcitsattvaṁ sthāvarajaṅgamam ।
kṣetrakṣetrajñasaṁyogāttadviddhi bharatarṣabha ॥ 26 ॥
samaṁ sarveṣu bhūteṣu tiṣṭhantaṁ parameśvaram ।
vinaśyatsvavinaśyantaṁ yaḥ paśyati sa paśyati ॥ 27 ॥

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२७

आज सायंकाल 'रामसिंह तोमर' जो शांतिनिकेतन में, हिन्दी भवन में प्राध्यापक/निदेशक हैं। उनके जी, प्रेमलता शर्मा के यहाँ मिलने आना चला। वे अच्छे विद्वान, साहित्यिक और ... कार्य करने वाले हैं।

Asia Information के Compiling Editor.
Ravi Bhusan - रविभूषण के पास अपेक्षित सामग्री।

पक्षाघात ... का प्रभाव हो रहा। आज प्रोफेसर प्राध्यापक वंशीधर त्रिपाठी और डा० कृष्णदेव उपाध्याय के पास भी गये। सत्यापन हस्ताक्षर कराया। श्री उर्मिला शर्मा को 'गीतारहस्य' की एक प्रति, तथा 'ध्रुपद ... अध्ययन' और 'अध्ययन योग ...' की प्रतियाँ भेजा। उनसे 'अपसूक्तम्' स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ... का श्रीमार्तण्ड, ... डा० प्रेमलता शर्मा को प्राप्त हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ।२८।
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ।२९।
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ।३०।

samaṁ paśyanhi sarvatra samavasthitamīśvaram |
na hinastyātmanātmānaṁ tato yāti parāṁ gatim ‖ 28 ‖
prakṛtyaiva ca karmāṇi kriyamāṇāni sarvaśaḥ |
yaḥ paśyati tathātmānamakartāraṁ sa paśyati ‖ 29 ‖
yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati |
tata eva ca vistāraṁ brahma saṁpadyate tadā ‖ 30 ‖

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२६

आज नागाजी आये। वे पं० शालिग्राम उपाध्याय की तलाश में और उनसे भेंट करने भी आये। नागाजी बड़े उदार और संत स्वभाव के हैं।

जो मनुष्य अभिमानी होता है वह प्रभु भक्त नहीं हो सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ।३१।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ।३२।
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः । क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ।३३।

anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ ।
śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate ॥ 31 ॥
yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate ।
sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate ॥ 32 ॥
yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ ।
kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata ॥ 33 ॥

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२५

आज [illegible] उत्तरकाशी Asia Information के लिये श्री [illegible] २५०० में १५ रुपये [illegible] कागजपत्र रजिस्ट्री हुआ।

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा। विनु हरि भजन न जाहिं कलेसा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

kṣetrakṣetrajñayorevamantaraṁ jñānacakṣuṣā ।
bhūtaprakṛtimokṣaṁ ca ye viduryānti te param ॥ 34 ॥

रम्भा एकादशीव्रत सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ५।२४

आज भी तबियत खराब हुई सी रही।
श्री व्रजकिशोर शर्मा - धर्मपत्नी सहित रायपुर से पुन: मेरे कहने [illegible] - मठमें रहने के लिये आये। उनकी पत्नी कार्तिक पूर्णिमा तक रहेंगी। बादमें [illegible] रहेंगे।
४० चालीस रुपये उन्होंने दिये। २० रुपये बावा के लिये. ५ रुपये मिठाई के लिये। १५ रुपये बिस्कुट - बच्चों के लिये।
दस रुपये [illegible] गणेश - [illegible] को दे दिया।

आज श्री रवीन्द्रनाथ शर्मा. गोहटी से आये हैं।

निष्काम भक्तके समान भगवान्‌को कोई भी प्रिय नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् । यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ।१।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः । सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ।२।
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् । संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ।३।

śrībhagavānuvāca

paraṁ bhūyaḥ pravakṣyāmi jñānānāṁ jñānamuttamam ।
yajjñātvā munayaḥ sarve parāṁsiddhimito gatāḥ ॥ 1 ॥
idaṁ jñānamupāśritya mama sādharmyamāgatāḥ ।
sarge'pi nopajāyante pralaye na vyathanti ca ॥ 2 ॥
mama yonirmahadbrahma tasmingarbhaṁ dadhāmyaham ।
saṁbhavaḥ sarvabhūtānāṁ tato bhavati bhārata ॥ 3 ॥

कार्तिक कृष्ण १२, सं० २०५२, शनिवार, OCT. 21. 1995

शनिप्रदोष, वत्सद्वादशी, धनतेरस   सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२३

आज भी [illegible] - श्री [illegible] जी,
([illegible] (पं० [illegible] के) यहाँ गये। वे लोग [illegible]
[illegible] मिलेंगे। मैंने 'कल्याण' [illegible]
[illegible]
प्रसंग [illegible] की अपनी [illegible]
को [illegible] भेजा - पत्र भी दिया।

कार्तिक कृष्ण १३, रविवार, 22.OCT.

सूर्यो० ५।५९,   सूर्या० ५।२२

धन्वन्तरि-जयन्ती, नरक चतुर्दशी,

श्रीहनुमज्जयन्ती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ।१३।
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ।१४।
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते। तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ।१५।

aprakāśo'pravṛttiśca pramādo moha eva ca ।
tamasyetāni jāyante vivṛddhe kurunandana ॥ 13॥
yadā sattve pravṛddhe tu pralayaṁ yāti dehabhṛt ।
tadottamavidāṁ lokānamalānpratipadyate ॥ 14॥
rajasi pralayaṁ gatvā karmasaṅgiṣu jāyate ।
tathā pralīnastamasi mūḍhayoniṣu jāyate ॥ 15॥

आज यूनियन बैंक गये · सोनारपुरा-शाखा। सूर्यो० ६।२, सूर्या० ५।११
८०० रुपये निकाला - उसमें से है। और चार सौ रुपये
गैस ११७ रुपये. निकाला एवं मुक्कासीदि दवा ली गई। १६० रुपये (१४८+१२)।

पुराना नक्शा की फोटो स्टेट कॉपी कराई गई। ४२ रुपये लगे।

× × ×

जीवन के दो प्रयोजन :— "दुनिया में व्यवस्था है। व्यवस्था होने के कारण हम और आप और कल के जाते हैं, यह सारा अपनी योजना से चलते हैं। ऐसी बात नहीं, कुछ इसकी योजना है, उसी के अनुसार सारा होता है। . ---- . .. हम लिखते हैं जैसे हैं. हम जानते नहीं कि इस सृष्टि में हमारा क्या प्रयोजन है। हम अपना-अपना प्रयोजन ही देखते हैं, लेकिन कुछ प्रयोजन हैं, जिनके लिये सृष्टिकर्ता ने हमें पैदा किया है।" इस तरह हमारे जीवन के दो प्रयोजन हैं। एक तो वह काम जो हम करते हैं, और दूसरा वह जिसे हम नहीं जानते। इसलिये कुछ घटनायें ऐसी होती हैं जिनका हमें अन्दाज नहीं लगता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्। रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।१६।
सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च। प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च।१७।
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः।१८।

karmaṇaḥ sukṛtasyāhuḥ sāttvikaṁ nirmalaṁ phalam ।
rajasastu phalaṁ duḥkhamajñānaṁ tamasaḥ phalam ॥ 16 ॥
sattvātsañjāyate jñānaṁ rajaso lobha eva ca ।
pramādamohau tamaso bhavato'jñānameva ca ॥ 17 ॥
ūrdhvaṁ gacchanti sattvasthā madhye tiṣṭhanti rājasāḥ ।
jaghanyaguṇavṛttisthā adho gacchanti tāmasāḥ ॥ 18 ॥

सूर्यो० ६।३, सूर्या० ५।१८

आज [illegible] प्रमोद के परिवार के [illegible] आदि भोजनोपरान्त किन्तु [illegible] के आने के तक [illegible]। कल जायेंगे।

प्रातः सहसा [illegible] डा० प्रमोद मिश्र जी आ पहुँचे। वे [illegible] और [illegible] यहाँ आये। उनके [illegible] दीक्षा गुरु - [illegible] (... के गाँव के) का देहावसान हो गया था। उसी दौड़धूप में थे।

डा० पारसनाथ सिंह (पूर्व-[illegible]) के [illegible] के यहाँ [illegible] दौड़धूप करने गये और पहले [illegible] स्टेशन - उन्हें [illegible] के किसी सज्जन के यहाँ ठहरे।

भोजन पानी की व्यवस्था तीन दिनों के लिये [illegible]।

श्री [illegible] राम के यहाँ भोजन होगा।

मनुष्योंसे जितना कम हो सके बात करो, ज्यादा बात करो ईश्वरसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति। गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ।१९।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्। जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ।२०।
अर्जुन उवाच
कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो। किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ।२१।

nānyaṁ guṇebhyaḥ kartāraṁ yadā draṣṭānupaśyati ।
guṇebhyaśca paraṁ vetti madbhāvaṁ so'dhigacchati ॥ 19 ॥
guṇānetānatītya trīndehī dehasamudbhavān ।
janmamṛtyujarāduḥkhairvimukto'mṛtamaśnute ॥ 20 ॥
arjuna uvāca
kairliṅgaistrīnguṇānetānatīto bhavati prabho ।
kimācāraḥ kathaṁ caitāṁstrīnguṇānativartate ॥ 21 ॥

आज प्रातः प्रमोद [illegible] गये। सूर्यो॰ ६।३, सूर्या॰ ५।१८
डॉ॰ [illegible]नाथ शर्मा ठहरे हैं। वे मध्यकालीन [illegible] देखेंगे।
प्रातः आज [illegible] गणेश [illegible] मिश्र जी आ पहुँचे।
वे दो घंटे तक थे। उनके गुरुदेव तथा तंत्रशास्त्र के संबन्ध में
विविध चर्चायें होती रहीं।
उन्होंने [illegible] "भागवत रहस्य" [illegible] कलकत्ता
[illegible] स्वामी [illegible]
"वेद व विज्ञान" [illegible] ईशावास्य [illegible]
[illegible] मेरी [illegible] हो गये। [illegible]
[illegible] प्रमोद के [illegible]
[illegible] कार्तिक शुक्ल ६, रविवार, 29. OCT.
[illegible] सूर्यो॰ ६।४, सूर्या॰ ५।१७ [illegible]
[illegible] बातें हुईं। [illegible] सूर्यषष्ठीव्रत
[illegible]
[illegible]

× × × ×

आज [illegible] अपने बच्चों सहित
[illegible] उनकी पत्नी [illegible]
[illegible]
सब कुछ [illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible] उचित होगा।
आज [illegible]
[illegible] दोनों [illegible] गये।

RajGuru Math Shivala Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव। न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति।२२।
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते। गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते।२३।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः। तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।२४।

śrībhagavānuvāca

prakāśaṁ ca pravṛttiṁ ca mohameva ca pāṇḍava ।
na dveṣṭi saṁpravṛttāni na nivṛttāni kāṅkṣati ॥ 22 ॥
udāsīnavadāsīno guṇairyo na vicālyate ।
guṇā vartanta ityeva yo'vatiṣṭhati neṅgate ॥ 23 ॥
samaduḥkhasukhaḥ svasthaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ ।
tulyapriyāpriyo dhīrastulyanindātmasaṁstutiḥ ॥ 24 ॥

सूर्यो० ६।५, सूर्या० ५।१६

शनिवार से सोमवार तक तीनों दिन श्री ललितेश्वर राय शर्मा काशी. (लाने) के यहाँ भोजन किया। भोजन उत्तम, राजसी और भूख समन्वित रहा।

दिव्यालोक [illegible] के - [illegible] भेंट तक नहीं किया। यह नारायणी की इच्छा है। आज भी ब्रजकिशोर राय हैं. कल जायेंगे।

रात में आ रहे थे 'हरे राम' तथा 'नारायण' जाप। मैं जागकर सामान्य [illegible] के बाद सो गया। [illegible] दिन में श्री [illegible] का पोता [illegible] आया [illegible] रहा था। [illegible] उसने [illegible] दो भी बात कही। मैंने [illegible] कि कार्तिक पूर्णिमा को वे स्वयं आवें [illegible] मनाने तथा [illegible]। [illegible] को भी दान भोजन [illegible] इच्छा है। [illegible] सर्वथा भोजन ठीक है, [illegible] नहीं। वे [illegible] देवी हैं तथा [illegible] हैं।

आज [illegible] - [illegible] के बाद [illegible] में [illegible] और [illegible] मोहल्ले [illegible] की [illegible] में [illegible] के [illegible] पर [illegible] तथा [illegible] भोजन न [illegible] की [illegible] दान की [illegible]। यह [illegible] के लिये, [illegible] और [illegible] है, [illegible] में [illegible] जाके।

सृष्टिमेंसे मनको खींचकर स्रष्टामें लगाना ही वैराग्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः। सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।२५।
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते। स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते।२६।

mānāpamānayostulyastulyo mitrāripakṣayoḥ।
sarvārambhaparityāgī guṇātītaḥ sa ucyate ॥ 25॥
mām ca yo'vyabhicāreṇa bhaktiyogena sevate।
sa guṇānsamatītyaitānbrahmabhūyāya kalpate ॥ 26॥

गोपाष्टमी सूर्यो॰ ६।६, सूर्या॰ ५।१५

आज प्रातः सुरेन्द्र जी आ गये। गाजीपुर का समाचार मिला। [illegible] नन्हा ने कहा [illegible] पहुंचाने की बात मालूम हुई।

आज सुरेन्द्र शर्मा - [illegible] को पत्र [illegible] [illegible] के [illegible] भेज देंगे। [illegible] [illegible] के [illegible] को लिखकर [illegible] के [illegible] देंगे। आज मोर में [illegible] गये। वे स्वार्थी और संकुचित विचार के हैं पर उन्हें तिरस्कार करना ठीक नहीं। जोड़ [illegible] रखना है। मैं [illegible] संबंध रखना ही [illegible] समझता हूं। [illegible] जबतक निबहे चलाया जाय।

सुरेन्द्रनाथ शर्मा - गाजीपुर वापस गये।

आज [illegible] श्री [illegible] शर्मा, रामेश्वर के साले और गुड्डू के मामा को [illegible] [illegible] के दृष्टिकोण से लिखा जो [illegible] के पत्र के साथ [illegible] भेजा जायगा। [illegible] जीवित [illegible] कार्तिक पूर्णिमा के आयोजन में उपस्थित होने को [illegible] है। [illegible] आज नहीं [illegible] इसके [illegible] में [illegible] और मर्यादा [illegible] की [illegible] है। मैं [illegible] अब सबकुछ सहकर ही [illegible]। कभी कभी मन खिन्न हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च। शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ।२७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।१४।

brahmaṇo hi pratiṣṭhāhamamṛtasyāvyayasya ca ।
śāśvatasya ca dharmasya sukhasyaikāntikasya ca ॥ 27 ॥

अक्षयनवमी सूर्यो॰ ६।६, सूर्या॰ ५।१५

आज भी तबियत ठीक नहीं। प्रमोद कुमार भी नहीं आये हैं
सभी काम पड़े हैं। थकता हूँ, ये सुबह क्या करेंगे। अपनी धुन में
ही व्यग्र हैं। गीता-अष्टादश प्रवचन- स्वामी शिवानंद गिरि का
एक भाग पढ़ता रहा। 'अध्यात्म तत्त्व-सुधा' विनोबा का पढ़ा।
डा० आंजनेय आये। चन्द्रशेखर मिश्र कवि भी पुस्तकों के लिये
प्रमोद द्वारा आश्रम से १००) रुपये दे गये। 'कुँवर सिंह' महाकाव्य तथा
खण्ड काव्य "द्रौपदी"। अपनी पुस्तकें- अथर्ववेदीय ज्ञानकाण्ड,
सम्पूर्णानंद तथा डा० राम शरण की प्राचीन भारत की आर्थिक::
को खोजा जो उन्हें प्रमोद के आने पर भेजी जायेंगी, अतः
पास रखी हैं।

मनिहारी से रामविलास शर्मा एवं रामभरोसा शर्मा को पत्र लिखा
हुआ भेजा गया। रामभरोसा जी के पत्र की प्रतिलिपि रखा। वेगूसराय से
श्री राजेन्द्र शर्मा को पत्र भेजा उनके माध्यम से।
छात्रों के खर्च [illegible] शर्मा जी को भी आश्रम की सफाई,
तथा दुकानों की निर्माण व्यवस्था तथा पूर्णिमा की बैठक में
आने को लिखा। पत्र डाक द्वारा भेजा गया।

आप स्वच्छन्द संसारके क्षुद्र बन्धनोंसे मुक्त आत्मा हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ।७।
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ।८।
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ।९।

mamaivāṁśo jīvaloke jīvabhūtaḥ sanātanaḥ ।
manaḥṣaṣṭhānīndriyāṇi prakṛtisthāni karṣati ॥ 7 ॥
śarīraṁ yadavāpnoti yaccāpyutkrāmatīśvaraḥ ।
gṛhītvaitāni saṁyāti vāyurgandhānivāśayāt ॥ 8 ॥
śrotraṁ cakṣuḥ sparśanaṁ ca rasanaṁ ghrāṇameva ca ।
adhiṣṭhāya manaścāyaṁ viṣayānupasevate ॥ 9 ॥

शनिप्रदोष सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१३

कार्तिक शुक्ल १३, रविवार, 5.NOV.
सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१२

आज अपराह्न न्यास-समिति की बैठक हुई। ये सदस्य
आये। राजेन्द्रशर्मा। प्रमोदकुमार मैं। प्रभुनारायण। श्रीजेन्द्रनाथराय।
अभियंता। राजनीतिराय। [illegible] आदि राजपुरोहित विषयक
राजगीत- प्रस्ताव को लिखे गये। भज्जनलाल जी को
४५० रु. खर्च आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ।१०।
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ।११।
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।१२।

utkrāmantaṁ sthitaṁ vāpi bhuñjānaṁ vā guṇānvitam ।
vimūḍhā nānupaśyanti paśyanti jñānacakṣuṣaḥ ॥ 10 ॥
yatanto yoginaścainaṁ paśyantyātmanyavasthitam ।
yatanto'pyakṛtātmāno nainaṁ paśyantyacetasaḥ ॥ 11 ॥
yadādityagataṁ tejo jagadbhāsayate'khilam ।
yaccandramasi yaccāgnau tattejo viddhi māmakam ॥ 12 ॥

व्रत-पूर्णिमा सूर्यो० ६।९, सूर्या० ५।११

आज संन्यासीदल - श्रीदेवीमाताजी एवं परमहंसबाबा आये।
कुछ कसमुसी हो गई। शंकराचार्य जी के प्रकरण। किन्तु स्वयं में
आत्मग्लानि हुई। किसी को कुछ कहना उचित नहीं लगता।
जो बनना होगा बनेगा। आत्मजीवन मधुरता, उदारता
एवं कर्तव्य परायणता ही क्यों है।

सत्सङ्गसे इन्द्रिय संयम और मनकी शुद्धि होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा । पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ।१३।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।१४।
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च । वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ।१५।

gāmāviśya ca bhūtāni dhārayāmyahamojasā ।
puṣṇāmi cauṣadhīḥ sarvāḥ somo bhūtvā rasātmakaḥ ॥ 13 ॥
ahaṁ vaiśvānaro bhūtvā prāṇināṁ dehamāśritaḥ ।
prāṇāpānasamāyuktaḥ pacāmyannaṁ caturvidham ॥ 14 ॥
sarvasya cāhaṁ hṛdi sanniviṣṭo mattaḥ smṛtirjñānamapohanaṁ ca ।
vedaiśca sarvairahameva vedyo vedāntakṛdvedavideva cāham ॥ 15 ॥

पूर्णिमा, कार्तिक-स्नान समाप्त　　सूर्यो० ६ । १०, सूर्या० ५ । १०

आज डा० रामनवल्लभ शर्मा पधारे। खौंजा के ठाकुर साहब, श्री विश्वनाथ प्रसाद सिंह मुन्नाबाबू अपने एक सहयोगी सहित आये, [illegible] दिल्ली [illegible] - [illegible] तथा रामकिशोर पांडेय आये। [illegible], राजकिशोर राजेन्द्र शर्मा। पत्नी [illegible], आनंद बहादुर सिंह आदि आये। [illegible] का [illegible] हुआ। [illegible] के [illegible] भी डी० पी० सिंह भी आ गये। [illegible] थी। [illegible] लोगों की - [illegible] में [illegible] [illegible] और [illegible] के बाद में [illegible] हुआ।

[illegible] को मठ में [illegible] करने की योजना बनी। वे [illegible] के उपलक्ष में काशी आये हैं। आज कुल [illegible] दो नेक [illegible] प्राप्त हुए। [illegible] आये। एक [illegible], एक [illegible], तथा एक [illegible] का [illegible] हुआ। [illegible] रहा। डा० [illegible] रहा। [illegible] जी [illegible] के [illegible] होगा है और [illegible] जायेगा। डा० [illegible] आये। [illegible] का [illegible]।

रुपयेका महत्त्व अन्तःकरणमें आया तब रुपयेकी इच्छा पैदा हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ।१६।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ।१७।
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः । अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ।१८।

dvāvimau puruṣau loke kṣaraścākṣara eva ca ।
kṣaraḥ sarvāṇi bhūtāni kūṭastho'kṣara ucyate ॥ 16 ॥
uttamaḥ puruṣastvanyaḥ paramātmetyudāhṛtaḥ ।
yo lokatrayamāviśya bibhartyavyaya īśvaraḥ ॥ 17 ॥
yasmātkṣaramatīto'hamakṣarādapi cottamaḥ ।
ato'smi loke vede ca prathitaḥ puruṣottamaḥ ॥ 18 ॥

सूर्यो० ६ । १०, सूर्या० ५ । १०

आज [illegible] योग [illegible] शर्मा और [illegible] के लिये पत्र लिख [illegible] के [illegible] के पुत्र एवं अपनी पत्नी [illegible] [illegible] जाते हैं। [illegible] [illegible] दे गये [illegible] [illegible] दे गये हैं।

सायंकाल [illegible] के [illegible] दिखाई नहीं आ सके हैं। उन्हें [illegible]।

आज संन्यासी [illegible] एवं [illegible] को [illegible] रहा।

[illegible] मिश्र का [illegible] को पत्र भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ।१९।
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ।१५।

yo māmevamasaṁmūḍho jānāti puruṣottamam ।
sa sarvavidbhajati māṁ sarvabhāvena bhārata ॥ 19 ॥
iti guhyatamaṁ śāstramidamuktaṁ mayānagha ।
etadbuddhvā buddhimānsyātkṛtakṛtyaśca bhārata ॥ 20 ॥

आज कृष्ण [illegible] [illegible] शर्मा जी के	सूर्यो० ६ । ११, सूर्या० ५ । ९

सीढ़ी-संबंध और परम्परा से जुड़े संपर्क समन्वय [illegible] [illegible] से - इससे एक अच्छा और [illegible] । [illegible] श्रीकृष्ण सफाई हुई।

आज गुलाब शर्मा [illegible] समाजिक एवं एम० ए० शर्मा आये, तथा दुर्गाप्रसाद शर्मा - जमालपुर को धन्यवाद कर भगवान स्वामी हरि [illegible] को दिया।

आज श्री [illegible] का बाहरी रंग तथा सीढ़ियाँ आदि बनायेंगे। ७-८ [illegible] से [illegible] होंगे।
सीमेंट - १२२५० [illegible] - २२ [illegible] दो फुट के ५ - एक [illegible] - [illegible]
[illegible] तथा मजदूरी [illegible]। हिसाब - प्रमोदकुमार के पास है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥१॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत॥३॥

śrībhagavānuvāca

abhayaṁ sattvasaṁśuddhirjñānayogavyavasthitiḥ ।
dānaṁ damaśca yajñaśca svādhyāyastapa ārjavam ॥ 1॥
ahiṁsā satyamakrodhastyāgaḥ śāntirapaiśunam ।
dayā bhūteṣvaloluptvaṁ mārdavaṁ hrīracāpalam ॥ 2॥
tejaḥ kṣamā dhṛtiḥ śaucamadroho nātimānitā ।
bhavanti sampadaṁ daivīmabhijātasya bhārata ॥ 3॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ३, सं० २०५२, शुक्रवार, NOV. 10. 1995

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत — सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ५।८

आज भोजनोपरान्त स्वामी हरिदासानन्द महाराज [illegible]
गये। वे वहाँ रहते हैं। आराम से हैं। यह [illegible] नहीं है।
उन्हें प्रसाद द्वारा [illegible] वहाँ से उदासीन [illegible] होगा।
आदरणीय [illegible] से [illegible] बातें हुईं। वे [illegible]
[illegible] और [illegible] चाहते हैं।
प्रमोद ने श्री [illegible] की [illegible] सीमेंट [illegible]।
[illegible]।
आज [illegible] - [illegible] के [illegible]
आये और [illegible] रहे हैं, नाम है —
माधव प्रसाद सिंह - मैनेजर मेडिकल फार्मास्युटिकल लि०
[illegible] - फरीदाबाद 121006 27 ए / सेक्टर-6
कालोनी
घर → [illegible] सिंह 1486 सेक्टर 7-E
फरीदाबाद — 24.64 08 फोन नं०।

'जहाँ राम तहँ काम नहिं'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ।४।
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ।५।
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ।६।

dambho darpo'bhimānaśca krodhaḥ pāruṣyameva ca ।
ajñānaṁ cābhijātasya pārtha saṁpadamāsurīm ॥ 4॥
daivī saṁpadvimokṣāya nibandhāyāsurī matā ।
mā śucaḥ saṁpadaṁ daivīmabhijāto'si pāṇḍava ॥ 5॥
dvau bhūtasargau loke'smindaiva āsura eva ca ।
daivo vistaraśaḥ prokta āsuraṁ pārtha me śṛṇu ॥ 6॥

सूर्यो० ६ । १३, सूर्या० ५ । ८

स्वामी हरिशरणानन्द की एक अन्तर्देशीय लिफाफे में समझौता पत्र लिखवाना कि [illegible] रामनगर के आश्रम [illegible] तथा शुकदेवानन्द कुटी छोड़ने का [illegible] कब तक [illegible] रहने की [illegible] तथा रामेश्वर सिंह दो सदों से समझाकर लिखा। डा० योगीन्द्र नाथ को स्नेह सौहार्द तथा सम्बन्ध के लिये [illegible] पत्र लिखा।

आज सोहावल से लक्ष्मणराम का पत्र मिला। वे रामकथा [illegible] हैं। पत्र सं० रामकथा [illegible] - स्वर्णजी के पता पद २-११ की छाप [illegible] तथा पत्र ११. [illegible] में [illegible] है। [illegible] किसी [illegible] में जोड़।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५, रविवार, 12.NOV.

सूर्यो० ६ । १३, सूर्या० ५ । ७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ।७।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्। अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ।८।
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः। प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ।९।

pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca janā na vidurāsurāḥ ।
na śaucaṁ nāpi cācāro na satyaṁ teṣu vidyate ॥ 7॥
asatyamapratiṣṭhaṁ te jagadāhuranīśvaram ।
aparasparasaṁbhūtaṁ kimanyatkāmahaitukam ॥ 8॥
etāṁ dṛṣṭimavaṣṭabhya naṣṭātmāno'lpabuddhayaḥ ।
prabhavantyugrakarmāṇaḥ kṣayāya jagato'hitāḥ ॥ 9॥

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।७

आज प्रमोद के साथ - [illegible] के [illegible] चुनार १२.३० डाउन गंगा एक्स.
से. चले - स्टेशन उन्नाव के [illegible] पे [illegible] मिला। उनके माध्यम
से. श्री ओमप्रकाश पांडे [illegible] को [illegible] ने [illegible]
आदि मिले। बाद में [illegible] से [illegible]
को [illegible] पहुंचा। [illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible]

आप परमात्माके चेतन अंश हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः । मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ।१०।
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः । कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ।११।
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः । ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ।१२।

kāmamāśritya duṣpūraṁ dambhamānamadānvitāḥ ।
mohādgṛhītvāsadgrāhānpravartante'śucivratāḥ ॥ 10 ॥
cintāmaparimeyāṁ ca pralayāntāmupāśritāḥ ।
kāmopabhogaparamā etāvaditi niścitāḥ ॥ 11 ॥
āśāpāśaśatairbaddhāḥ kāmakrodhaparāyaṇāḥ ।
īhante kāmabhogārthamanyāyenārthasañcayān ॥ 12 ॥

प्रातः ७॰ [illegible] मिश्र की गाड़ी मिली सूर्यो॰ ६ । १४, सूर्यास्त ५ । ६

उसी से कुलडुरा गये, खड्गधारी शर्मा से भेंट करते
आश्रम की सफाई [illegible] बातें करते सोहावं पहुंचा।
वहाँ श्री राम [illegible] में भाग लिया। उनके पुराने
सहकर्मी स्वतंत्रता सेनानी संघ के [illegible] लाये गये थे। डा॰
[illegible] प्रयत्नों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
अनेक वेदों व [illegible] से श्री [illegible] को [illegible] किया।
वहीं [illegible] के भी सचिव रामपति [illegible] मिले। उनके साथ [illegible]
[illegible] पहुंचा था। उनके भाई [illegible] से भेंट किया
जो [illegible] में [illegible] हैं। वहाँ [illegible]
लड़के पढ़ाते रहते हैं। वहाँ से [illegible] के बाद आश्रम में पहुंच गये।
महादेव [illegible], उनकी पत्नी तथा [illegible] से।
आश्रम की [illegible] का निरीक्षण किया। रात में [illegible]
मिश्र जी और [illegible] मिले।

परमात्माको हर जगह देखने पर तो भय कहीं रहता ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।१३।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।१४।
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।१५।

idamadya mayā labdhamimaṁ prāpsye manoratham।
idamastīdamapi me bhaviṣyati punardhanam ॥ 13 ॥
asau mayā hataḥ śatrurhaniṣye cāparānapi।
īśvaro'hamahaṁ bhogī siddho'haṁ balavānsukhī ॥ 14 ॥
āḍhyo'bhijanavānasmi ko'nyo'sti sadṛśo mayā।
yakṣye dāsyāmi modiṣya ityajñānavimohitāḥ ॥ 15 ॥

सूर्यो० ६।१५ सूर्या० ५।६

आज श्री राजगुरु जी [illegible] की प्रतीक्षा करते रहे पर वे नहीं आ सके। साथ में आये डॉ० चन्द्रेश्वर मिश्र [illegible] के साथ [illegible] विभाग [illegible] के [illegible] ① श्री शालिग्राम यादव [illegible] - पटना - फोन 225480 - [illegible] ② श्री राजेन्द्र राजा, 15 [illegible] पटना, फोन - 223480 [illegible] का पता - [illegible] है।
दोनों से [illegible] बातें हुईं। उन लोगों को गीता [illegible] भेंट की गई। [illegible] शान्ति [illegible] की गई।
उन लोगों ने [illegible] मैंने [illegible] पी० डब्लू० डी० - [illegible] का [illegible] अभियन्ता [illegible] के [illegible] करने का अनुरोध - उन लोगों से किया।
[illegible] का [illegible] अपने [illegible] के साथ [illegible] का [illegible] पर [illegible] है।

संग्रह की हुई वस्तुओंका सदुपयोग करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ।१६।
आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः । यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ।१७।
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः । मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ।१८।

anekacittavibhrāntā mohajālasamāvṛtāḥ ।
prasaktāḥ kāmabhogeṣu patanti narke'śucau ॥ 16॥
ātmasaṁbhāvitāḥ stabdhā dhanamānamadānvitāḥ ।
yajante nāmayajñaiste dambhenāvidhipūrvakam ॥ 17॥
ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ ca saṁ śritāḥ ।
māmātmaparadeheṣu pradviṣanto'bhyasūyakāḥ ॥ 18॥

सूर्यो० ६ । १६, सूर्या० ५ । ६

आज [illegible] हो गया है। [illegible] भोजन हुआ।
[illegible] भी [illegible] की [illegible] भी [illegible] से [illegible] को
[illegible] देखने आये हैं। [illegible]
[illegible] भी आये हैं।

[illegible] की स्थिति [illegible] अच्छी
नहीं है। [illegible] की स्थिति [illegible] रही है। [illegible] है,
[illegible] के [illegible] भी [illegible] है,

× × × ×

आज भी पेंशन वालों की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी।
[illegible] ने बहुत परिश्रम किया - [illegible] के [illegible]
[illegible] को [illegible] कराया। [illegible] भी मिले। [illegible]
[illegible] - [illegible] हैं तथा [illegible]
[illegible] में [illegible] हुए हैं।

[illegible] से [illegible]।

आज [illegible] मिले। [illegible] की व्यवस्था
के लिये। [illegible] को
को [illegible] के लिये [illegible] को दिये।
[illegible] भी [illegible] रहे हैं।

~~[illegible]~~

बड़े-बूढ़ोंकी सेवा करो। रोगियोंकी सेवा करो। गायोंकी सेवा करो।

भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्। क्षिपाम्यजस्त्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ।१९।
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि। मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ।२०।
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।२१।

tānahaṁ dviṣataḥ krūrānsaṁsāreṣu narādhamān।
kṣipāmyajasramaśubhānāsurīṣveva yoniṣu ॥ 19 ॥
āsurīṁ yonimāpannā mūḍhā janmani janmani।
māmaprāpyaiva kaunteya tato yāntyadhamāṁ gatim ॥ 20 ॥
trividhaṁ narakasyedaṁ dvāraṁ nāśanamātmanaḥ।
kāmaḥ krodhastathā lobhastasmādetattrayaṁ tyajet ॥ 21 ॥

आज कचहरी गया / [illegible] मिले। सूर्यो० ६। १७, सूर्या० ५। ५
इनसे - प्रमोद के मामा - पोस्टमास्टर श्री [illegible] - [illegible] की
[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible]
[illegible] के [illegible] गया है।
[illegible]। [illegible] भी [illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible] मिली। [illegible] २७७०+२०८ = २८७० तथा
नई २१६० कुल [illegible] ५०३० रुपये।
[illegible] भी [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible] उन्हें [illegible]।
[illegible] - उन्होंने १०० रुपये [illegible] दे दिये।
उनसे [illegible] [illegible] हुई।
[illegible] ३०० [illegible] रुपये - [illegible] की [illegible] को
[illegible] के लिये दिये।
[illegible] ३० रुपये [illegible]
[illegible] के लिये ५० रुपये दिये। [illegible] ११ बजे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः। आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्॥२२॥
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥२३॥

etairvimuktaḥ kaunteya tamodvāraistribhirnaraḥ ।
ācaratyātmanaḥ śreyastato yāti parāṁ gatim ॥ 22 ॥
yaḥ śāstravidhimutsṛjya vartate kāmakārataḥ ।
na sa siddhimavāpnoti na sukhaṁ na parāṁ gatim ॥ 23 ॥

उत्पन्ना एकादशीव्रत — सूर्यो॰ ६।१७, सूर्या॰ ५।५

आज स्टेशन आये। [illegible] के यहां जलपान करके [illegible] काशी देखे। १७ [illegible] की पापड़ी [illegible]। गाड़ी [illegible] गुड़ों में [illegible] [illegible] बाद में [illegible] भी गुड़ों ने एक [illegible] रोक रखा। [illegible] में [illegible] ११ अप [illegible] एक्सप्रेस पकड़कर [illegible] आये। वहां से [illegible] एक्सप्रेस से ३ बजे [illegible] पहुंचे। [illegible] मठ में पहुंच गये। [illegible] मालूम किया। [illegible] आये थे भेंट। [illegible] की कुआं [illegible] आते हैं। [illegible] कर लिये। × ×

[illegible] हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण १२, रविवार, 19.NOV. — सूर्यो॰ ६।१८, सूर्या॰ ५।४

आज मठ में [illegible] - [illegible] - रसोईघर में गेहूं - [illegible]। [illegible] और [illegible] हुई। [illegible] रहे - [illegible]। [illegible] और उमा [illegible] एक [illegible] भेंट किये। आज [illegible] मठ में [illegible]। उनसे [illegible] की चीनी [illegible] हुई।

आज [illegible] किया। S.V.D. ने [illegible] कुछ कहा।

× ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ।१।

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा । सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ।२।
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत । श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ।३।

arjuna uvāca

ye śāstravidhimutsṛjya yajante śraddhayānvitāḥ ।
teṣāṁ niṣṭhā tu kā kṛṣṇa sattvamāho rajastamaḥ ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

trividhā bhavati śraddhā dehināṁ sā svabhāvajā ।
sāttvikī rājasī caiva tāmasī ceti tāṁ śṛṇu ॥ 2 ॥
sattvānurūpā sarvasya śraddhā bhavati bhārata ।
śraddhāmayo'yaṁ puruṣo yo yacchraddhaḥ sa eva saḥ ॥ 3 ॥

मार्गशीर्ष कृष्ण १४, सं० २०५२, मंगलवार, NOV. 21. 1995

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।१४

आज वाराणसी से दिल्ली एक्सप्रेस द्वारा परम. गांधीवादी
श्री कृष्णनाथ सिंह देवरिया के निवास पर सबेरे ७ बजे पहुँच
कर भोजन [illegible]। सच्चिदानंद से भेंट हुई। [illegible] भी
आने वाले आ गए।

श्री कैलाशपति मिश्र को इलाज हेतु [illegible] की गई।
वे कल ८.३० बजे भा.ज.पा. कार्यालय में मिलेंगे।

आप लखपति नहीं, लखदास हो और पराधीन हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः। प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ।४।
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः। दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ।५।
कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः। मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ।६।

yajante sāttvikā devānyakṣarakṣāṁsi rājasāḥ ।
pretānbhūtagaṇāṁścānye yajante tāmasā janāḥ ॥ 4॥
aśāstravihitaṁ ghoraṁ tapyante ye tapo janāḥ ।
dambhāhaṅkārasaṁyuktāḥ kāmarāgabalānvitāḥ ॥ 5॥
karśayantaḥ śarīrasthaṁ bhūtagrāmamacetasaḥ ।
māṁ caivāntaḥśarīrasthaṁ tānviddhyāsuraniścayān ॥ 6॥

अमावास्या   सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।४

आज पूर्वाह्न डा० उ० सचेतन को देखा। डा० गोपाल पा०
कार्यालय में श्री कला सदन मिश्र से भेंट एवं वार्तालाप। विभिन्न
मुद्दों पर विचार विमर्श हुआ। प्रमोद कुमार दीक्षित भी साथ थे।
इरोज शर्मा के संबंध में श्रीवास्तव खरराव, [illegible] दिल्ली [illegible]
- भा० ग्राम्यविकरण प्रशासन से [illegible] भी श्री [illegible]
तथा राजगुरुमठ के आगामी कार्यों में योगदान के लिये,
काशी राजगुरुमठ में आगत [illegible] संस्थागत प्रोजेक्टों
को प्रयोग, संकेत करने के संबंध में बातें हुई।
यह [illegible] स्वामी [illegible] के बड़े प्रशंसक हैं।
उन्होंने - मिश्र जी [illegible] स्वामीजी वैदिक संबंध में कुछ
कार्य का संकेत किया जिनके संबंध में विचार तथा समन्वय
है। पत्रों में तत्काल आना उचित नहीं समझा और एक [illegible]
विस्तृत, निजी पत्र लिखवाया मिश्रजी को। उस संबंध में [illegible]
दिया है [illegible] वापिस।

अपराह्न प्रमोद कुमार - पटना [illegible]
डा० रामबदन शर्मा से मिले और राजगुरुमठ के संबंध में
विचार विमर्श किया। श्री किशोर कुणाल के अमेरिका जाने का
पता चला और उन्हें [illegible] का भी पता चला कि
वे लौटकर राजगुरुमठ से [illegible]
[illegible] योगदान [illegible]। [illegible]
पर रहे।

हम स्वीकार कर लें कि हम भगवान्के हैं और भगवान् हमारे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः। यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ।७।
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः । रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ।८।
कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ।९।

āhārastvapi sarvasya trividho bhavati priyaḥ ।
yajñastapastathā dānaṁ teṣāṁ bhedamimaṁ śṛṇu ॥ 7॥
āyuḥsattvabalārogyasukhaprītivivardhanāḥ ।
rasyāḥ snigdhāḥ sthirā hṛdyā āhārāḥ sāttvikapriyāḥ ॥ 8॥
kaṭvamlalavaṇātyuṣṇatīkṣṇarūkṣavidāhinaḥ ।
āhārā rājasasyeṣṭā duḥkhaśokāmayapradāḥ ॥ 9॥

सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।३

प्रातः साढ़े सात बजे पटना पहुँच कर
श्री० [illegible] पं० [illegible] साढ़े [illegible] बजे [illegible] हुई।
[illegible] प्रसाद [illegible] के निवास
पर भोजन हुआ। मैंने और प्रमोदकुमार [illegible] ने
[illegible] के [illegible] के संबंध में विचार किया कि [illegible]
और [illegible] किया।
वहाँ से [illegible] के [illegible] गये [illegible] और
[illegible] हुई। [illegible]
से [illegible] पहुँचे। [illegible]
से [illegible] दूर गई है अतः [illegible]
[illegible] पहुँचा।
रात में [illegible] मिश्र [illegible] में [illegible] हुई।
[illegible] हुई। वे प्रातः मिलेंगे। [illegible] और [illegible] मांगा और
उन्होंने भेजा।
[illegible] से आश्रम के [illegible] का
[illegible] हुई। पुनः [illegible] हुआ।
[illegible] शर्मा के मित्र [illegible] रहते
हैं। [illegible] रहकर [illegible]
जायेंगे।

निष्कलुष जीवन व्यतीत करनेमें ही आत्मसंतोष प्राप्त होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्। उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।१०।
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते। यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः।११।
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्। इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्।१२।

yātayāmaṁ gatarasaṁ pūti paryuṣitaṁ ca yat।
ucchiṣṭamapi cāmedhyaṁ bhojanaṁ tāmasapriyam॥10॥
aphalākāṅkṣibhiryajño vidhidṛṣṭo ya ijyate।
yaṣṭavyameveti manaḥ samādhāya sa sāttvikaḥ॥11॥
abhisaṁdhāya tu phalaṁ dambhārthamapi caiva yat।
ijyate bharataśreṣṭha taṁ yajñaṁ viddhi rājasam॥12॥

[illegible] के लोभ से [illegible] नहीं [illegible] सूर्यो० ६।२२, सूर्या० ५।३
[illegible]
[illegible] है।
[illegible]
[illegible]
[illegible] प्राप्त किया।
[illegible] गोरखपुर [illegible] ३.३०
[illegible] वाराणसी [illegible] आया।
[illegible]
[illegible]
में [illegible] गोरखपुर [illegible]
[illegible]
नहीं किया। [illegible]
[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।१३।
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।१४।
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।१५।

vidhihīnamasṛṣṭānnam mantrahīnamadakṣiṇam ।
śraddhāvirahitam yajñam tāmasam paricakṣate ॥ 13॥
devadvijaguruprājñapūjanam śaucamārjavam ।
brahmacaryamahimsā ca śārīram tapa ucyate ॥ 14॥
anudvegakaram vākyam satyam priyahitam ca yat ।
svādhyāyābhyasanam caiva vānmayam tapa ucyate ॥ 15॥

प्रातः होटल · प्रयागराज से · [illegible] सूर्यो॰ ६।२३, सूर्या॰ ५।३
[illegible] [illegible] आदि को [illegible] /
[illegible] के [illegible] /
[illegible] [illegible] [illegible] आये
[illegible] के [illegible] /
[illegible] /
मन में [illegible] से [illegible]
होने की [illegible] है /
आज [illegible] के गोपाल जी [illegible] से आये /
[illegible] भेंट हुई। [illegible]
[illegible]

मार्गशीर्ष शुक्ल ४, रविवार, 26.NOV.
सूर्यो॰ ६।२४, सूर्या॰ ५।३

आज · [illegible] वकील · [illegible] की विदाई
[illegible] से [illegible],
और [illegible] रहा /
[illegible] भी [illegible] से [illegible] /

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः। भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ।१६।
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ।१७।
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्। क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ।१८।

manaḥprasādaḥ saumyatvaṁ maunamātmavinigrahaḥ ।
bhāvasaṁśuddhirityetattapo mānasamucyate ॥ 16 ॥
śraddhayā parayā taptaṁ tapastattrividhaṁ naraiḥ ।
aphalākāṅkṣibhiryuktaiḥ sāttvikaṁ paricakṣate ॥ 17 ॥
satkāramānapūjārthaṁ tapo dambhena caiva yat ।
kriyate tadiha proktaṁ rājasaṁ calamadhruvam ॥ 18 ॥

श्रीरामविवाह　　सूर्यो० ६ । २५, सूर्या० ५ । ३

आज [illegible] फिर आये। बारात की विदा हो गया।
और कुछ लोग आये - [illegible] बैठाये रहे।
कल्याण भक्ति अंक बाँटा गया। संक्षिप्त स्कन्दपुराणाङ्क लाया
गया। आज श्री गोपाल जी रहे, [illegible] डाल रहे हैं।
वे घर होते कलकत्ता जायेंगे। सायंकाल स्वामी हरि[illegible]
[illegible] का व्याख्यान (?)। और गोपाल जी रात बैठ रहे (?)।

सारी खुशी देनेमें है, चाहने या माँगनेमें नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।१९।
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।२०।
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।२१।

mūḍhagrāheṇātmano yatpīḍayā kriyate tapaḥ।
parasyotsādanārtham vā tattāmasamudāhṛtam ॥ 19 ॥
dātavyamiti yaddānam dīyate'nupakāriṇe।
deśe kāle ca pātre ca taddānam sāttvikam smṛtam ॥ 20 ॥
yattu pratyupakārārtham phalamuddiśya vā punaḥ।
dīyate ca parikliṣṭam taddānam rājasam smṛtam ॥ 21 ॥

आज प्रातः [illegible] सूर्यो० ६।२६ सूर्या० ५।३

आज [illegible] पहले से [illegible]। [illegible]
[illegible] के संबंध में समझा दिया। [illegible]
[illegible]।
[illegible] के [illegible] और
[illegible]। [illegible] के [illegible]
करने का प्रयास के कारण [illegible] रहा है कि वे
[illegible]
उसे सफल बनायें।
[illegible] और [illegible]
[illegible] दिया। [illegible]
[illegible]
[illegible]।
[illegible] रहा।
[illegible] और [illegible]
आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥२२॥
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा॥२३॥
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्॥२४॥

adeśakāle yaddānamapātrebhyaśca dīyate ।
asatkṛtamavajñātaṁ tattāmasamudāhṛtam ॥ 22 ॥
oṁ tatsaditi nirdeśo brahmaṇastrividhaḥ smṛtaḥ ।
brāhmaṇāstena vedāśca yajñāśca vihitāḥ purā ॥ 23 ॥
tasmādomityudāhṛtya yajñadānatapaḥkriyāḥ ।
pravartante vidhānoktāḥ satataṁ brahmavādinām ॥ 24 ॥

आज [illegible] सूर्यो० ६।२६, सूर्या० ५।३

[illegible]

[illegible]

कर्तव्यमे प्रमाद न करना ही सफलताकी कुंजी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः। दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ।२५।
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते। प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ।२६।
यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते। कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ।२७।

tadityanabhisaṁdhāya phalaṁ yajñatapaḥkriyāḥ ।
dānakriyāśca vividhāḥ kriyante mokṣakāṅkṣibhiḥ ॥ 25 ॥
sadbhāve sādhubhāve ca sadityetatprayujyate ।
praśaste karmaṇi tathā sacchabdaḥ pārtha yujyate ॥ 26 ॥
yajñe tapasi dāne ca sthitiḥ saditi cocyate ।
karma caiva tadarthīyaṁ sadityevābhidhīyate ॥ 27 ॥

आज · स्वामी [illegible] सरस्वती के संग   सूर्यो॰ ६।२७, सूर्या॰ ५।३

[illegible] पत्रकार · [illegible] से मेरा-
[illegible] किया।

" [illegible] फोटो स्टेट प्रति तैयार करा गई कि
श्री [illegible] आदि के [illegible]
विद्यार्थियों को अध्यापन और शोधकार्य में सहायता प्राप्त हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः। प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ।१९।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते। अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ।२०।
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्। वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ।२१।

jñānaṁ karma ca kartā ca tridhaiva guṇabhedataḥ |
procyate guṇasaṁkhyāne yathāvacchṛṇu tānyapi ‖ 19 ‖
sarvabhūteṣu yenaikaṁ bhāvamavyayamīkṣate |
avibhaktaṁ vibhakteṣu tajjñānaṁ viddhi sāttvikam ‖ 20 ‖
pṛthaktvena tu yajjñānaṁ nānābhāvānpṛthagvidhān |
vetti sarveṣu bhūteṣu tajjñānaṁ viddhi rājasam ‖ 21 ‖

सूर्यो॰ ६।३३, सूर्या॰ ५।३

आज प्रमोद की धर्मपत्नी बच्चों सहित आजमगढ़ से आ गई। नाटकमण्डली गयी।

पौष कृष्ण ३, रविवार, 10.DEC.
सूर्यो॰ ६।३४, सूर्या॰ ५।३
श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज राजगुरुमठ के शिवाला आदि का श्रीगणेश हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्। अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्।२२।
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्। अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते।२३।
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः। क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्।२४।

yattu kṛtsnavadekasminkārye saktamahaitukam ।
atattvārthavadalpaṁ ca tattāmasamudāhṛtam ॥ 22 ॥
niyataṁ saṅgarahitamarāgadveṣataḥ kṛtam ।
aphalaprepsunā karma yattatsāttvikamucyate ॥ 23 ॥
yattu kāmepsunā karma sāhaṅkāreṇa vā punaḥ ।
kriyate bahulāyāsaṁ tadrājasamudāhṛtam ॥ 24 ॥

सूर्यो० ६।३५ सूर्या० ५।३

आज अमोद पटना-आरा से लौटे - [illegible]
बातचीत नहीं हो सका। शाम को [illegible] ने फोन किया -
ठीक समाचार है - [illegible] हैं। महात्मा [illegible]
लिए। [illegible] [illegible]
का जो [illegible] में आवश्यक [illegible]
भोजपुरी भाषा के काठ [illegible]
के [illegible] हैं।
[illegible] और [illegible]
आ [illegible] जा सकता है।

गीता एक विलक्षण ग्रन्थ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः। विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ।२८।
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु। प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ।२९।
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ।३०।

ayuktaḥ prākṛtaḥ stabdhaḥ śaṭho naiṣkṛtiko'lasaḥ ।
viṣādī dīrghasūtrī ca kartā tāmasa ucyate ॥ 28 ॥
buddherbhedaṁ dhṛteścaiva guṇatastrividhaṁ śṛṇu ।
procyamānamaśeṣeṇa pṛthaktvena dhanañjaya ॥ 29 ॥
pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca kāryākārye bhayābhaye ।
bandhaṁ mokṣaṁ ca yā vetti buddhiḥ sā pārtha sāttvikī ॥ 30 ॥

सूर्यो॰ ६।३६, सूर्या॰ ५।४

आज निम्नलिखित के काम [illegible]

पं॰ रामाज्ञा [illegible] को। ज्योतिषाचार्य शास्त्री [illegible]
को राजगुरुमठ के ऐतिहासिक कार्यों में योगदान के लिये
अनुरोध पत्र लिखा। [illegible] की भी
[illegible]। पुनः [illegible] राम को [illegible]
संरक्षण के प्रकाशन के संबंध में पत्र लिखा।
पं॰ कैलाशपति मिश्र को उनके [illegible] के कार्यक्रमों
के संबंध में लिखा।
श्री १००८ स्वामी हरिनारायणानंद जी को राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार
आदि के संबंध में अनुरोध और विनय पत्र लिखा।
सभी पत्र [illegible] कुरियर से [illegible]
भेजेंगे। [illegible] जायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन। प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी।३४।
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च। न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।३५।
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ। अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति।३६।

yayā tu dharmakāmārthāndhṛtyā dhārayate'rjuna।
prasaṅgena phalākāṅkṣī dhṛtiḥ sā pārtha rājasī ॥ 34 ॥
yayā svapnaṁ bhayaṁ śokaṁ viṣādaṁ madameva ca।
na vimuñcati durmedhā dhṛtiḥ sā pārtha tāmasī ॥ 35 ॥
sukhaṁ tvidānīṁ trividhaṁ śṛṇu me bharatarṣabha।
abhyāsādramate yatra duḥkhāntaṁ ca nigacchati ॥ 36 ॥

तृष्णा सबसे बढ़कर पापिष्ठ सूर्यो० ६। ३८, सूर्या० ५। ५

और सदा उद्वेग में डालनेवाली मानी गयी है। इसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं। तृष्णा का रूप भी बड़ा भयंकर है। वह सबके मन को बांधनेवाली है। खोटी बुद्धिवाले पुरुषों के द्वारा बड़ी कठिनाई से जिसका त्याग होता है, जो इस शरीर के वृद्ध होने पर भी स्वयं बूढ़ी नहीं होती तथा जो प्राणान्तकारी रोग के समान है; उस तृष्णा का त्याग करने वाले को ही सुख मिलता है।

" तृष्णा हि सर्वपापिष्ठा नित्योद्वेगकरी मता।
अधर्मबहुला चैव घोररूपानुबन्धिनी ॥
या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्या न जीर्यति जीर्यतः।
यासौ प्राणान्तको रोगस्तां तृष्णां त्यजतः सुखम् ॥"

× × ×

— (स्क० ना० कु० ४१। ६०-६१)

सत्यके बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

आरती

जय भगवद्गीते जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामासक्ति हरा ।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा ॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ॥ जय०
आसुरभाव-विनाशिनि नाशिनि तम-रजनी ।
दैवी सद्गुणदायिनि हरि-रसिका सजनी ॥ जय०
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी ।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु ! कृपा कीजै ।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥ जय०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(1) जनार्दन प्रसाद शर्मा ग्रा॰ टका (पुरब पट्टी) मिर्जापुर

(2) उमेश चन्द्र पाण्डेय S/o श्री रमा रमण पाण्डेय
वेल्डिंग शाप - गली धूम पुर पुरा उग्रसेन शर्मा
नई बस्ती - इलाहा

(3) प्रो॰ लक्ष्मीनारायण तिवारी (निदेशक) (अलीपुर कैम्पस)
भोगीलाल लेहरचन्द इन्स्टीच्यूट आफ इन्डोलॉजी
20 Km. जी॰टी॰ कर्नाल रोड, दिल्ली - 110036

(4) श्री त्रिपुरारि राय (संस्थापक - अध्यक्ष)
स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज
109 - पी॰ आराम बाग, नयी दिल्ली - 110055

(5) पं॰ श्याम नंदन मिश्र (पूर्व विदेश मंत्री)
2, सविता विहार, दिल्ली 110092
फोन - 2243197

(6) श्री हरिकृष्ण ठाकुर, (सरस्वती सदन) रोड नं॰ 12
राजेन्द्र नगर - पटना - 800016

(7) श्री रामप्रवेश शास्त्री, B/1299 इन्दिरा नगर कालोनी
लखनऊ

(8) श्री डी॰ पी॰ सिन्हा, तिर्थंकर डिजाइन
111 A आरियाना प्लाजा, बुद्ध मार्ग, पटना - 800001

(9) डा॰ रामकरण शर्मा, 63 विज्ञान विहार, दिल्ली - 110092

(10) श्री सुरेन्द्र राय सेक्टर 4 F, क्वार्टर नं॰ - 3141
बोकारो स्टील सिटी - बोकारो - 827004

(11) कैलासपति मिश्र, वीरचन्द पटेल रोड, क्वार्टर नं॰ 8
भारतीय जनता पार्टी कार्यालय - पटना

(12) दिनेश कुमार पाण्डेय, सेक्टर नं॰ 3 B, क्वार्टर नं॰ 449
क्वार्टर नं॰ 449, बोकारो स्टील सिटी बोकारो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(13) ~~श्री इन्द्रजीत शर्मा, 26/5 आर्मेनियम स्ट्रीट~~
~~कलकत्ता~~

(14) आचार्य हरिधीश झा, आवास विकास कालोनी
कालोनी - 3, आवास संख्या - 3/433 L9 G
झूसी - इलाहाबाद - पिन 221506

(15) राधेश्वर प्रसाद सिंह, 32, आनन्दपुरी कालोनी
बोरिंग कैनाल रोड - पटना - 800001

(16) डा० जगन्नाथ प्रसाद मौर्य, ग्राम - शाहाबाद
वार्ड नं० - 1, पोस्ट - गढ़ी मानिकपुर,
जिला - प्रतापगढ़ - पिन - 230202

(17) ब्रजकिशोर पाण्डेय c/o श्री श्यामलाल गोस्वामी
मकान नं० 3/53, श्यामनगर - अलीगढ़

(18) Dr. S. V. Sohani, 9 Manali
Prabhat Road (15), Pune - 411004

(19) श्री राधेश्याम पाण्डेय, (श्री महेश पाण्डेय के पुत्र)
लालडेंगा Laldenga सिमरी बख्तियारपुर
पो० आदी जिला - पुरुलिया
(✓ श्री त्रिभुवन शास्त्री के (पश्चिम - बंगाल)
सगे भाई) W.B.

रामेश्वर शर्मा, ग्राम - बादीपुर,
पोस्ट - चिरौरा, जिला - पटना

बाबा नागार्जुन जी, बी. 939 सादतपुर
पो० - गोकुलपुरी, दिल्ली - 94

त्रिवेणी प्रसाद सिंह, (अधिवक्ता - पूर्व विधायक)
चक्कर, मुजफ्फरपुर (बिहार) फोन - 242222

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रो० रामसिंह तोमर, 28, पूर्वपल्ली, शान्तिनिकेतन्
पश्चिम बंगाल - पिन - 731235 (रेलस्टेशन-बोलपुर

श्री शालिग्राम यादवजी, 13 हार्डिंग रोड -
सुरेन्द्र पटना - फोन - 225480

श्री राजेन्द्र राजन, 15 प्रेसिडेन्ट चैम्बर - पटना।
फोन - 223681
→ चाणक्य नगर - बेगूसराय
फोन - 23080 - 06342

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Vidyadhar Rai
Purwanchal Prahari
(G. L. Publications Ltd)
Ulubari, G. S. Road
Guwahari - 7
Assam.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपेन्द्र सिंह ·

ग्राम.... रामपुर

हीरोजी के हाते में मिलन

गगजीवनराम कॉलेज के

प्राणवी के पास के समीप ·

फोन 23817- 06182

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

... by ...gotri ... Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2